RNI नं. : 7387/63
मुद्रण तिथि : 29-30 अक्टूबर 2023
डाक प्रेषण तिथि : 29 अक्टूबर-01 नवम्बर 2023
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 61 अंक : 14
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 60
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2021-23
Office Posted At R.M.S., Bikaner

हु शि उ चौ श्री ज ग ना ना ©

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

समाचार पाक्षिक

61वाँ संघ स्थापना दिवस

हु शि उ चौ श्री ज ग ना ना ©

राम चमकते भानु समाना

SAY NO TO FIRECRACKERS

संघ शिखर सदस्य

श्री शान्तिलाल जी सांड
बेंगलुरु
MID No. : 189067

श्री विमल जी सिपाणी
बेंगलुरु
MID No. : 127238

श्री रिद्धकरण जी सिपाणी
बेंगलुरु
MID No. : 111161

श्री जयचन्दलाल जी डागा
बीकानेर
MID No. : 105289

श्री सोमप्रकाश जी नाहटा
सूरत
MID No. : 126222

श्रीमती मंजू जी शाह (बोहरा)
पिपलियाकलां
MID No. : 128972

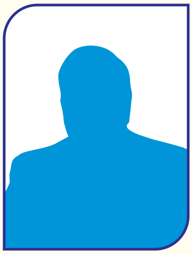

स्व. श्री मूलचन्द जी डागा
बीकानेर
MID No. : 187427

समता मनीषी
स्व. श्री उमरावमल जी बम्ब, टोंक
MID No. : 121469

स्व. श्री विजयचन्द जी डागा
बीकानेर
MID No. : 120472

श्री माणकचन्द जी नाहर
उदयपुर
MID No. : 107109

श्रीमती कुमुद विमल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127237

श्री दिनेश जी सिपाणी
बेंगलुरु
MID No. : 111134

श्री पंकजराज जी शाह (बोहरा)
पिपलियाकलां
MID No. : 128966

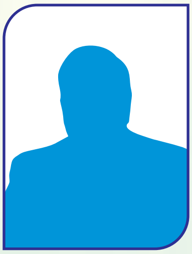

गुप्त
छत्तीसगढ़
MID No. : 197441

श्री सुरेश जी दक
मैसूर
MID No. : 129730

संघ महाप्रभावक सदस्य

श्री मोतीलालजी मुणोत
जलगाँव
MID No. 106053

स्व.श्रीमती तारादेवी सुराणा
गंगाशहर
MID No. 116416

श्री राजमलजी चौरड़िया
जयपुर
MID No. 127158

श्री ललितकुमारजी लोढ़ा
मदुरान्तकम्
MID No. 172830

श्री निर्मलकुमारजी भूरा
करीमगंज
MID No. 147618

श्री राजकुमारजी बच्छावत
नेपाल
MID No. 195443

स्व. श्री केशरीमलजी देशलहरा
दुर्ग
MID No. 142535

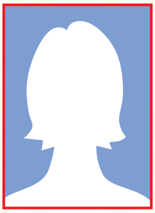
स्व. श्रीमती सुभद्रादेवी पगारिया
सूरत

श्री राजीवजी सूर्या
उज्जैन
MID No. 160544

श्री पुखराजजी मुकिम
जयपुर
MID No. 182624

श्री खूबचन्दजी पारख
राजनांदगाँव
MID No. 141590

श्री विनयजी अब्भाणी
चित्तौड़गढ़
MID No. 107376

श्री शांतिलालजी डागा
कोलकाता
MID No. 188697

श्री प्रकाशचंदजी सूर्या
उज्जैन
MID No. 160559

श्री उत्तमचंदजी रांका
जयपुर
MID No. 111353

श्री रावतमलजी संचेती
गंगाशहर
MID No. 123813

श्री सोहनलालजी पोखरना
चित्तौड़गढ़
MID No. 135732

श्री अनिलजी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. 127002

श्री जयचंदलालजी मरोटी
देशनोक/कोलकाता
MID No. 114715

चतुर्थ चरण

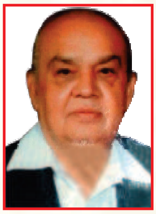
श्री प्रकाशजी कांकरिया
इन्दौर
MID No. 194512

स्व. श्रीमती सरोजदेवी
सुराणा-बेरला
MID No. 195647

श्रीमती कमला उत्तमजी कोठारी
बेंगलुरु
MID No. 112429

श्री राजमलजी पंवार
कानवन
MID No. 113094

श्री बसंतलालजी कटारिया
रायपुर
MID No. 137280

श्री शांतिलालजी बच्छावत
सूरत
MID No. 194606

श्री विजयकुमारजी टंच
बदनावर
MID No. 113207

कार्यसमिति (10 जनवरी 2016) के अनुसार

तृतीय चरण * श्री अनिल कुमार जी गोलछा- सिलचर * श्री प्रकाशचंद जी कोठारी-अमरावती * श्रीमती कमलादेवी संचेती-देशनोक/दिल्ली * श्री सुंदरलाल जी बोथरा-मुम्बई * श्री गोपालचंद जी खिंवसरा-बेंगलुरु * स्व. श्री बापूलाल जी कोठारी-उदयपुर * श्री दिलीप जी पगारिया-जावरा * श्री प्रेमचंद जी व्होरा- बदनावर * श्री कमल जी बैद-मुम्बई * श्री सोहनलाल जी रांका-ब्यावर

द्वितीय चरण * श्री तेज कुमार जी तातेड़-इंदौर * श्री पूनमचंद जी भूरा-भीलवाड़ा * श्री बसंतीलाल जी चंडालिया-चित्तौड़गढ़ * श्रीमती इन्द्राबाई धाड़ीवाल-रायपुर * श्रीमती सुनीता जी मेहता-बेलगाँव * श्री राजकुमार जी बाफना-हरदा * श्रीमती ज्ञानकँवर जी ओस्तवाल-ब्यावर * श्री विजय कुमार जी मुणोत-हैदराबाद * श्री चेतन कुमार जी हिंगड़-ब्यावर * श्री अभय कुमार जी भण्डारी-जावरा * श्री दिलीप जी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्री अखराज जी ओस्तवाल-भिलाई * श्री भीखमचंद जी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्री कँवरलाल जी देशलहरा-गुण्डरदेही * श्रीमती मनोरमादेवी बैद-रायपुर * श्रीमती सुन्दरबाई कोटड़िया-कोण्डागाँव * श्री प्रकाशचंद जी श्रीश्रीमाल-हैदराबाद * श्री विजय कुमार जी गोलछा (कमलादेवी गोलछा)-बीकानेर

प्रथम चरण * स्व. श्रीमती सूरजादेवी बरड़िया-सिलचर * श्री मनोज कुमार जी संचेती-बेलगाँव * श्री उदयराज जी पारख-रायपुर * श्री झंवरलाल जी कुम्मट-सिलचर * श्री मुन्नालाल जी पँवार-कानवन * श्री निर्मल जी खिंवसरा-ब्यावर * श्री निहालचंद जी कोठारी-ब्यावर * श्री भागचन्द जी सिंघी-जोधपुर * श्री विमलचंद जी सुराणा-गीदम * श्री पीयूष जी बैद-कोलकाता

समता प्रचार संघ

(अंतर्गत- श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ)

द्वारा आप सभी स्वाध्यायी बंधुओं को

हुक्मि उ चौ श्री ज ग ना रा ©
राम चमकते भानु समाना

धन्यवाद

सभी स्वाध्यायियों को एवं गौरवशाली परिवारों को धन्यवाद, जिन्होंने अपनी अभूतपूर्व उपस्थिति से दिनांक 16–17 सितम्बर 2023 को नीमच में आयोजित भव्य स्वाध्यायी समागम एवं सम्मान समारोह की सफलता में चार चांद लगाए।

कुछ स्वाध्यायी किन्हीं कारणों से उपस्थित नहीं हो पाए, उनके उपहार नीमच चातुर्मास स्थल पर चातुर्मास पूर्णता तिथि 26 नवम्बर 2023 तक उपलब्ध रहेंगे। आप जब भी पूज्य आचार्यश्री के दर्शनार्थ नीमच प्रवास करें तो स्वाध्यायी स्वयं अथवा अपने प्रतिनिधि के माध्यम से अपना उपहार प्राप्त कर हमें अनुगृहित करावें।

विशेष :– कृपया नीमच पधारने से दो दिन पूर्व सम्पर्क कर लेवें ताकि आपके उपहार की समुचित व्यवस्था की जा सके।

सम्पर्क सूत्र : – सिद्धार्थ जैन (उदयपुर कार्यालय)
मो.: 7231866008,
7231833008

प्रकाशचन्द चपलोत, निम्बाहेड़ा
(उपहार वितरण प्रभारी)
मो.: 9414109613, 9057586991

सुशील गोरेचा, रतलाम
(स्वाध्यायी सम्मान समारोह संयोजक)
मो.: 7999890760

|| जय महावीर ||

|| जय गुरु नाना ||　　|| जय गुरु राम ||

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

राम चमकते भानु समाना

(अंतर्गत - श्री अ.भा.सा. जैन संघ)

वीर निर्वाण दिवस

सामूहिक तेला तप आराधना

लक्ष्य | 2100

दिनांक - 11, 12, 13 नवम्बर 2023

निवेदक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

आप सभी से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में तेला तप आराधना एवं प्रभावना करें।

आरुग्गबोहिलाभं
गो व्रज
आरुग्गबोहिलाभं
गो व्रज
बिलोना घी
कुरियर सुविधा उपलब्ध
देशी गाय का शुद्ध बिलोना घी
गो व्रज उत्पाद
• धोवन राख • काला दन्त मंजन • बिलोना घी
• गोनाइल • गोमूत्र अर्क व अन्य उत्पाद...
मुरली मनोहर मन्दिर के पास, वाल्मीकि मोहल्ला, भीनासर
(बीकानेर)-334403 (राज.) फोन नं.: 72309 01111
govrajgoshala@gmail.com www.ablabham.com

:: अनुक्रमणिका ::

रुक्मिणी विवाह	:	08
श्रमणोपासक हैडलाइन्स	:	12
गुरुचरण विहार	:	13
विविध समाचार	:	26
विविध भेंट मार्फत	:	37
विनम्र श्रद्धांजलि	:	47
श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति	:	49
श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ	:	53

सुविचार

संगत

ठेके की दुकान पर, बैठकर पय पीवे।
अपवाद होगा उसे, रोक नहीं पाएँगे।।
करी या न करी चोरी, चोर के थे साथ हम।
पकड़ पुलिस बन्दीगृह में बिठाएँगे।।
गटर का पानी गर, गंगा में बहेगा कभी।
अँजुरी में लेकर भक्त, शीश पे चढ़ाएँगे।।
वीर कहे गौतम से, अचंभा नहीं है कछु।
सन्तों की संगत खल, मोक्ष पाए, पाएँगे।।

साभार- वीर कहे गौतम से

चिन्तन

चार बार नहीं सौ बार सोचो

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

शिक्षा की बात सुनने में, कहने में अच्छी लगती है किन्तु आचरण में लाना बड़ा कठिन होता है। जीवन में आनंद नहीं आने का कारण व्यक्ति स्वयं है। वह प्रशंसा-प्रिय होता है। जिसे प्रशंसा प्रिय होती है, उसे जब अपमान या तिरस्कार का मुकाबला करना पड़े तो उसका अन्तर भीतर ही भीतर कचोटने लग जाता है। यह मनुष्य की कमजोरी है। इस कमजोरी को दूर करने के लिए शिक्षा दी जाती है कि तुम ऐसा प्रयत्न करो कि कोई कितना भी अपमान या तिरस्कार करे, पर तुम्हारा अंतरमन कचोटे नहीं, तुम्हारे भीतर पीड़ा न हो। यथार्थ में किसी के अपमान करने से तुम्हारा कुछ भी कम नहीं होता है। उसी प्रकार किसी के प्रशंसा करने से तुम्हें कुछ उपलब्ध होने वाला नहीं है। केवल थोड़े से शब्दों का ही प्रयोग है, जिनसे मन हर्ष या खिन्नता का अनुभव कर लेता है। क्या तुम्हारा जीवन उन शब्दों के आधार पर ही टिका हुआ है? ध्यान रखो वे शब्द तुम नहीं हो। तुम्हारा अस्तित्व उनसे भिन्न है। तुम अपनी शक्ति को समझो।

अब तक संसार में भटकने का कारण भी यही है कि इन शब्दों के आधार पर हम बनते-बिगड़ते रहते हैं। साधु की पोशाक पहनकर भी यदि प्रशंसा-प्रिय बने रहे तो समझो हम राह पर नहीं हैं। हमारा रास्ता हमसे छूट चुका है। हमारा लक्ष्य वीतरागता है। निंदक-वंदक के लिए एक भाव बन जाना चाहिए। वंदक-निंदक के प्रति मन भिन्न है तो अभी मुक्ति दूर है। अभी और प्रयत्न की जरूरत है कि हम स्वयं को और साधें। प्रश्न हो सकता है कि कैसे साधें? स्वयं को साधने का अर्थ है कोई कितनी ही प्रशंसा करे, उससे मन को पुलकित मत होने दो। स्वयं में अनुभव करो कि वस्तुत: ''मैं वैसा हूँ भी या नहीं''। व्यक्ति प्रशंसनीय तब होता है, जब वह स्वयं को जीत सके। यदि वह स्वयं को जीतने में समर्थ नहीं हो पा रहा हो, इन्द्रिय-विषयों का गुलाम ही बना हुआ हो तो वैसी स्थिति में कोई कितनी भी प्रशंसा करे, उस प्रशंसा से क्या भला होने वाला है? नंदन मणियार प्रशंसा से मानव जीवन को हार गया। हमें उस राह पर बढ़ने से पहले चार बार नहीं सौ बार सोचना चाहिए।

फाल्गुन कृष्ण 14, मंगलवार, 08.03.2016 **साभार- आरोह** श्रमणोपासक

रुक्मिणी विवाह

▫▫▫▫▫▫▫▫▫▫

रुक्मिणी की प्रतिज्ञा

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

29-30 सितम्बर 2023 अंक से आगे....

बंधनानि खलु सन्ति बहूनि
प्रेमरज्जुकृतबन्धतमन्यत्।
दारुभेद निपुणोऽपि षड्घ्रिर्निष्क्रियो
भवति पंकजकोषे।।

अर्थात् संसार में अनेक प्रकार के बन्धन विद्यमान हैं, लेकिन प्रेमरूपी रस्सी का बन्धन सबसे बढ़कर है। काष्ठ को भेदने में समर्थ भ्रमर प्रेम की रस्सी से बँधकर कमल के मुख में बन्द होकर प्राण दे देता है, परन्तु उसे छेदकर निकलने की चेष्टा नहीं करता।

संसार में सच्चे प्रेमी बहुत कम हैं। वास्तव में प्रेमी बनना है भी कठिन। प्रेमी अपने प्रेमपात्र के लिए अपना सर्वस्व, यहाँ तक कि अपने प्राण को भी तृणवत् समझता है। ईश्वर और धर्म से प्रेम करने वालों के तो ऐसे अनेक उदाहरण मिलेंगे, परन्तु साधारण व्यक्ति से और वह भी स्वार्थ से सना हुआ प्रेम करने वालों के भी ऐसे कई उदाहरण मिलेंगे जिनसे प्रेमी ने अपने प्रेमास्पद पर प्राण तक न्यौछावर कर दिए।

यद्यपि कष्ट सहने का वास्तविक कारण प्रेम है या स्वार्थ, यह तो कहना कठिन है, लेकिन इससे यह तो जाना जा सकता है कि जब स्वार्थपूर्ण प्रेम के लिए भी इतने त्याग और कष्ट सहन की कठिन तपस्या की जा सकती है तो नि:स्वार्थ प्रेम के लिए कितने त्याग और कष्ट सहन करने की आवश्यकता है? वास्तव में प्रेम के मार्ग को वही अपना सकता है जो कष्ट को भी सुख मानने की क्षमता रखता हो। जिसमें ऐसी क्षमता नहीं है, उसका प्रेम भी तभी तक रहेगा, जब तक कि सामने कष्ट नहीं है।

मोक्ष की दृष्टि से तो वह प्रेम हेय है, जिसमें सांसारिक स्वार्थ की किंचित् भी बू है। सांसारिक स्वार्थपूर्ण प्रेम मोक्ष के लिए निरर्थक है। मोक्ष के लिए तो नि:स्वार्थ प्रेम की आवश्यकता है। नि:स्वार्थ प्रेम ईश्वरीय नियम है। नैतिक दृष्टि से स्वार्थपूर्ण प्रेम के दो भेद हो जाते हैं- एक पवित्र और दूसरा अपवित्र। अनन्य और विषय सुख की लालसा से रहित प्रेम पवित्र माना जाता है और इससे विपरीत प्रेम अपवित्र प्रेम नैतिक दृष्टि से हेय है।

रुक्मिणी के हृदय में कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम था। यह तो कहा नहीं जा सकता कि कृष्ण के प्रति रुक्मिणी का प्रेम विषय सुख की लालसा से था या इस लालसा से रहित था, परन्तु यदि विषय सुख की लालसा से ही रुक्मिणी को कृष्ण से प्रेम होता तो इसकी पूर्ति तो शिशुपाल से हो जाती। चूँकि कृष्ण के अनेक रानियाँ थीं इसलिए कृष्ण द्वारा उतना विषयजन्य सुख नहीं मिल सकता था, जितना शिशुपाल से मिल सकता था। फिर उसे कृष्ण के प्रेम में कष्ट उठाने की आवश्यकता नहीं थी। रुक्मिणी द्वारा कष्ट सहन को देखते हुए यह नहीं कहा जा सकता कि उसका कृष्ण के प्रति प्रेम विषय सुख की लालसा से ही था। यदि रुक्मिणी का प्रेम केवल विषय सुख की लालसा से ही होता तो आज उसकी कथा नहीं गाई जाती। इस प्रकार की लालसा अनैतिकता

तक पहुँचा देती है और अनैतिकता में पहुँचे हुए व्यक्ति के चरित्र को कोई भी भला आदमी आदर नहीं दे सकता। रुक्मिणी का प्रेम पवित्र माना जाता है। सम्भव है कि सांसारिक होने के कारण रुक्मिणी का प्रेम किंचित् विषय सुख की भावना लिए हुए भी हो, परन्तु इस भावना की प्रधानता न होने के कारण उसका प्रेम पवित्र ही माना जा सकता है और इस बात को उसका अनन्य कृष्ण प्रेम और भी पुष्ट बना देता है।

रुक्मिणी ने कृष्ण की प्रशंसा पहले से ही सुन रखी थी। उसके हृदय में कृष्ण की प्रशंसा सुनकर ही उनके प्रति प्रेम का अंकुर जम चुका था, परन्तु सहायता के अभाव में प्रेमांकुर की वृद्धि नहीं हुई थी। रुक्मिणी के विवाह को लेकर भीम और रुक्म में जो मतभेद हो गया था, उस मतभेद ने रुक्मिणी के प्रेमांकुर में जल सिंचन का कार्य किया।

रुक्मिणी को पिता और भाई के मतभेद का समाचार मालूम हुआ। वह अपने भाई की उद्दण्डता, अदूरदर्शिता और उच्छृंखलता को जानती थी और यह भी जानती थी कि मेरी माता पर भी भाई का प्रभाव है। अपने पिता की न्यायप्रियता, दूरदर्शिता और अनुभव पर उसे अटूट विश्वास था। उसने कृष्ण की प्रशंसा और शिशुपाल की निन्दा भी सुन रखी थी। उसमें शिशुपाल के प्रति किंचित् भी प्रेम नहीं था, लेकिन कृष्ण के प्रति प्रेम का अंकुर उसके हृदय में छिपा हुआ था। पिता द्वारा की गई कृष्ण की प्रशंसा और विवाह प्रस्ताव को सुनकर रुक्मिणी के हृदय का वह प्रेमांकुर लहलहा उठा, परन्तु उसे यह सुनकर चिन्ता भी हुई कि मेरे विवाह का भार भाई पर छोड़कर पिता तटस्थ हो गए हैं और मेरे भाई की इच्छा मेरा विवाह शिशुपाल के साथ करने की है तथा माता इस इच्छा से सहमत है।

भाई की इच्छा को दृष्टि में रखकर रुक्मिणी विचारने लगी कि मेरा भाई पिता के प्रस्ताव की तो अवहेलना कर रहा है, परन्तु क्या मुझसे पूछे बिना, मेरी इच्छा जाने बगैर ही मेरा विवाह शिशुपाल से कर देगा? क्या भाई का यह कार्य न्यायसंगत होगा? जिसको चिरसंगी बनाना है, उस कन्या की इच्छा भी नहीं जानी जाएगी? क्या मुझे मूक पशु की तरह चुपचाप अनचाहे पुरुष के साथ जाना पड़ेगा? क्या मुझे बलात् अपना जीवन अनिच्छित पुरुष को सौंपना पड़ेगा? मुझे अपने जीवनसाथी के विषय में विचार करने का किंचित् भी अधिकार नहीं है? मनुष्य होने के नाते मुझे अपना जीवनसाथी, अपना हृदयेश्वर चुनने का पूर्ण अधिकार प्राप्त है। क्या भाई मेरे इस अधिकार को मुझसे छीन लेगा? यदि भाई ने यह अन्याय कर डाला तो मैं इस अन्याय का प्रतिकार किस प्रकार करूँगी? मैं अपने अधिकार की रक्षा और उसका उपयोग कैसे कर पाऊँगी? क्या मुझे भाई के विरुद्ध विद्रोह करना पड़ेगा? नहीं, ऐसा करने की आवश्यकता ही क्यों पड़ेगी? कदाचित् भाई मेरी उपेक्षा भी कर दे, परन्तु मुझे अपनी चिरसंगिनी बनाने की इच्छा रखने वाला तो मेरी इच्छा जानेगा या नहीं? वह भी विचारेगा कि जिसे मैं अपनी चिरसंगिनी बनाना चाहता हूँ, वह भी मेरी चिरसंगिनी बनना चाहती है या नहीं? क्या वह भी मेरी उपेक्षा कर देगा? क्या कन्या का लेन-देन मूकपशुओं की ही तरह होगा? कन्या की इच्छा कोई भी जानना नहीं चाहेगा? पुरुष मुझ अबला के साथ ऐसा अन्याय कर डालेंगे? कदाचित् मेरे साथ ऐसा अन्याय होने लगा तो मैं अपने को ऐसे अन्याय से किस प्रकार बचा सकूँगी?

रुक्मिणी के मन में इसी प्रकार के विचार आते। उसे इस बात का किंचित् भी भान नहीं था कि उसके विवाह का टीका शिशुपाल के यहाँ भेज दिया गया है। रुक्म ने टीका चुपचाप भेजा, किसी को खबर भी नहीं होने दी। उसे भय था कि कहीं पिता की असहमति के कारण शिशुपाल ने टीका अस्वीकार कर दिया तो बहुत अपमान सहना पड़ेगा और पिता की सम्मति की उपेक्षा करने के कारण मेरी निन्दा भी होगी। इस भय से

उसने टीका चुपचाप भेजा ताकि यदि शिशुपाल टीका अस्वीकार भी कर दे तो राज्य में किसी को उस अस्वीकृति का पता न चले और यदि स्वीकार कर लिया तो फिर छिपाने की आवश्यकता ही क्या रहेगी?

रुक्मिणी इसी अनुमान में थी कि मेरा भाई पिता की इच्छा के विरुद्ध और मेरी इच्छा जाने बिना मेरा विवाह शिशुपाल के साथ तय नहीं करेगा, परन्तु चन्देरी से सरसत भाट के लौट आने पर उसका भ्रम मिट गया था। वह जान गई कि भाई मेरी इच्छा की अवहेलना करके स्वेच्छाचार से काम लेना चाहता है।

उधर चन्देरी में शिशुपाल को टीका चढ़ाकर और उससे विवाह तिथि स्वीकार करवाकर सरसत भाट ने शिशुपाल से विदा माँगी। शिशुपाल ने सरसत को सम्मान-सत्कारपूर्वक विदा किया। चन्देरी से विदा होकर सरसत कुण्डिनपुर आया। उसने रुक्म को बधाई देकर उससे शिशुपाल द्वारा टीका और विवाह तिथि स्वीकार कर लिए जाने का समाचार सुनाया। रुक्म को टीका स्वीकार किए जाने की बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने सरसत भाट को पुरस्कार देकर विदा किया और मंत्री को विवाह की तैयारियाँ करने की आज्ञा देते हुए कहा कि नगर को सजाओ, खाने-पीने और लेन-देन की वस्तुओं और ठहरने के स्थान का प्रबन्ध करो। ऐसा प्रबन्ध भी करो कि आवश्यकता पड़ने पर युद्ध भी किया जा सके।

रुक्म की आज्ञानुसार मंत्री ने विवाह विषयक प्रबन्ध शुरू कर दिए। बात ही बात में सारे नगर में यह समाचार फैल गया कि रुक्मिणी का विवाह चन्देरीराज शिशुपाल के साथ अमुक तिथि को होना निश्चित हुआ है। जनता इस विषय पर भिन्न-भिन्न सम्मति बनाने लगी। कोई इस विवाह को अच्छा बताता तो कोई बुरा। रुक्मिणी की सखियाँ भी यह शुभ समाचार सुनकर उसे बधाई देने आईं और रुक्मिणी से कहने लगीं- ''सखी! हम सब आपको बधाई देने आई हैं। अब तो हमारा आपका साथ थोड़े ही दिनों का है। थोड़े दिन बाद तो आप हमसे बिछुड़ जाएँगी। फिर तो शायद हमारी याद भी न रहे।''

सखियों की बात सुनकर **रुक्मिणी** उनसे कहने लगी- ''सखियो! आज निष्कारण तुम इस प्रकार की बातें क्यों कर रही हो? मैं तुम्हारा साथ छोड़कर कहाँ जा रही हूँ, जो तुम्हें विस्मृत कर दूँगी?''

सखियाँ- लो, सारे शहर में तो आपके विवाह की तैयारियाँ हो रही हैं और आपको पता भी नहीं। बहिन, जान-बूझकर इतनी भोली क्यों बन रही हो?

रुक्मिणी- मैं सत्य कहती हूँ कि मुझे इस सम्बन्ध में कुछ भी मालूम नहीं है। मैंने तो यह बात तुम्हीं से सुनी है।

सखियाँ- अच्छा तो हम आपको सुनाती हैं, सुनिए! आपका विवाह चन्देरीराज शिशुपाल के साथ तय हुआ है। विवाह का टीका भी चढ़ाया जा चुका है और माघ कृष्ण अष्टमी को विवाह होगा। इसी कारण हम कह रही हैं कि कुछ दिन बाद जब आप चन्देरी की रानी बन जाएँगी, तब आपको हमारी याद क्यों रहेगी? फिर तो किसी दूसरे की ही याद रहेगी।

रुक्मिणी की सखियाँ विचारती थीं कि रुक्मिणी शिशुपाल के साथ अपने विवाह की बात सुनकर प्रसन्न होगी और हमें पुरस्कार देगी, परन्तु विवाह का समाचार सुनकर रुक्मिणी की स्वाभाविक प्रसन्नता भी चिन्ता में परिणत हो गई। वे ऐसा होने के कारण का अनुमान भी नहीं लगा सकीं और रुक्मिणी से कहने लगीं- सखी! आप उदास क्यों हो गई हैं? क्या आपको यह विचार हो आया है कि मुझे चिर-परिचित गृह और सखी-सहेलियों को छोड़कर जाना होगा? यह तो प्रसन्नता की बात है। इसमें खेद का कोई कारण नहीं है। यह तो संसार का बहुत ही साधारण नियम है। कन्याओं का गौरव भी ससुराल में ही है। लता वृक्ष के साथ ही शोभा पाती है। इसी प्रकार स्त्री की शोभा भी पति के साथ रहने से ही है।

रुक्मिणी- सखियो! मैं इसलिए चिन्तित नहीं हूँ। मेरी चिन्ता का कारण है कि क्या मुझे ऐसे व्यक्ति को अपना जीवनसाथी बनाना पड़ेगा, जिसके लिए मेरे हृदय में किंचित् भी स्थान नहीं है? क्या इस विषय में भाई को मेरी इच्छा जानने की आवश्यकता नहीं थी? क्या कन्याओं का जीवन इतना निकृष्ट है कि उन्हें चाहे जिसके साथ सौंप दिया जाए? इन प्रश्नों से सुलझने का मुझे कोई मार्ग नहीं दिखता। तुम सब थोड़ी देर के लिए मुझे अकेली छोड़ दो, जिससे मैं इन समस्याओं के विषय में विचार कर सकूँ।

रुक्मिणी की इच्छानुसार रुक्मिणी की सखियाँ वहाँ से चली गईं। रुक्मिणी विचारने लगी कि मेरी इच्छा जाने बिना ही भाई ने मेरा विवाह शिशुपाल के साथ ठहराकर मेरे साथ अन्याय किया है। भाई को अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए मेरी इच्छा की हत्या नहीं करनी चाहिए। कन्या की इच्छा जाने बिना ही उसका जीवनसाथी चुनने का अधिकार किसी को नहीं हो सकता। प्रत्येक व्यक्ति इस बात के लिए स्वतन्त्र है कि वह जिसे भी चाहे, अपना जीवनसाथी बनाए, लेकिन भाई के कार्य से जान पड़ता है कि पुरुषों ने इस विषय में अन्याय मचा रखा है। उन्होंने हम कन्याओं की यह स्वतन्त्रता छीनकर अपने अधिकारों को विस्तृत बना लिया है। वे अपनी जीवनसाथिनी बनाने में स्वच्छन्दता और स्वतन्त्रता से काम लेते हैं, बलात् किसी को अपनी पत्नी बना लेते हैं। उसकी इच्छा की किंचित् भी अपेक्षा नहीं करते। मैं समझती थी कि भाई अपनी उद्दण्डता से कदाचित् मेरी इच्छा की अवहेलना भी कर डालेगा, तब भी जिसे मेरा जीवनसाथी बनाया जा रहा है, वह शिशुपाल तो मेरी इच्छा जानने के पश्चात् ही विवाह स्वीकार करेगा, परन्तु मेरा यह समझना केवल भ्रम निकला। भाई और शिशुपाल दोनों एक ही श्रेणी के निकले। इन दोनों ने मुझ पर अत्याचार करना चाहा है, मेरे अधिकार का हनन किया है, परन्तु क्या मुझे चुपचाप अपने पर अत्याचार होने देना चाहिए? क्या मुझे अपने अधिकार की रक्षा का प्रयत्न नहीं करना चाहिए? यदि मैंने इस अत्याचार का विरोध नहीं किया तो मेरी अनेक बहिनों को भी इसी प्रकार के अत्याचार का शिकार होना पड़ेगा। प्रश्न यह है कि मैं अपना प्रेमपात्र किसे बनाऊँगी? भाई मेरे जिस हृदय पर शिशुपाल का अधिकार कराना चाहता है, वह हृदय शिशुपाल से बचाकर किसे सौंपूँगी? कृष्ण के प्रति मेरे हृदय में प्रेम का छोटा-सा अंकुर अवश्य है, परन्तु उनके विषय में भी मैं अधिक कुछ नहीं जानती। ऐसी दशा में वह प्रेमांकुर बढ़ने भी कैसे दूँ?

रुक्मिणी इस प्रकार के विचारों में पड़ी हुई अपने विषय में किसी निश्चय पर नहीं पहुँच सकी। इसी बीच में नारद ऋषि आ गए। नारद की कृपा से उसके हृदय का कृष्ण प्रेमांकुर विशाल हो गया और उसने भविष्य के विषय में भी निश्चय कर लिया।

नारद जी कृष्ण के लिए एक योग्य पटरानी की खोज में लगे हुए थे। वे कृष्ण की पटरानी सत्यभामा के व्यवहार से असन्तुष्ट थे। इसका कारण था सत्यभामा का अभिमान। एक दिन सत्यभामा दर्पण में अपना मुख देख रही थी। इतने में ही वहाँ नारद जी पहुँच गए। सत्यभामा की पीठ की ओर नारद जी थे। इस कारण नारद जी का प्रतिबिम्ब भी उसी दर्पण में पड़ा। दर्पण में अपने मुख के पास नारद जी का मुख देखकर सत्यभामा रुष्ट हो कहने लगी- 'मेरे मुखचन्द्र के पास यह राहु-सा किसका मुख है?' सत्यभामा की यह बात सुनते ही नारद जी लौट पड़े। वे विचारने लगे कि सत्यभामा को अपने रूप का बहुत गर्व है। वह अपने मुख को चन्द्र के समान और मेरे मुख को राहु के समान मानती है। हरि की पटरानी को ऐसा गर्व तो नहीं होना चाहिए। कृष्ण तो इतने निरभिमानी हैं और उनकी पटरानी ऐसी अभिमानी हो, यह ठीक नहीं। कृष्ण के तो ऐसी पटरानी होनी चाहिए, जिसमें अभिमान न हो। मैं कृष्ण के वास्ते ऐसी ही पटरानी की खोज करूँगा जो कृष्ण के समान ही निरभिमानी हो।

साभार- श्री जवाहर किरणावली-5 (रुक्मिणी-विवाह)

-क्रमशः श्रमणोपासक

राम चमकते भानु समाना

❋ नीमच साधना महोत्सव चातुर्मास में लग रहे दीर्घ तपस्याओं के ठाठ। अब तक 78 मासखमण के प्रत्याख्यान। तपस्वी किरण कुमार जी हिंगड़ के 127 उपवास, तपस्विनी इन्द्रादेवी नाहर के 115 उपवास के साथ अनेक तपस्याएँ गतिमान।

❋ षट्रस तप की लहर में 440 से अधिक तपस्वियों ने की कर्मनिर्जरा। विभिन्न शिविरों की बहार।

❋ मुमुक्षु नमन जी मेहता, रतलाम की जैन भागवती दीक्षा 18 अक्टूबर को सम्पन्न, नवीन नामकरण नवदीक्षित संत श्री नमन मुनि जी म.सा. की घोषणा।

❋ प्रतिदिन कम से कम 10 मिनट बच्चों के साथ बिताने एवं बच्चों को संस्कारवान बनाने हेतु आचार्य भगवन् की अद्भुत प्रेरणा से हजारों अभिभावक प्रभावित।

❋ 23 साल से लगातार एकासन कर रहे भागचंद जी गेलड़ा, वाशिम ने ग्रहण किया 24वें वर्ष लगातार एकासन करने के प्रत्याख्यान।

❋ फतेहनगर, छोटीसादड़ी सहित अनेक स्थानों ने गुरुभक्तों ने पदयात्रा कर किए आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर सहित चारित्रात्माओं के दर्शन।

❋ राजस्थान सरकार के पूर्व मंत्री श्रीचंद जी कृपलानी, पूर्व विधायक अशोक जी नवलखा, आर.एस.एस. प्रमुख टेकचंद जी बरड़िया, बीकानेर, सिंगोली के पूर्व विधायक दुलीचंद जी जैन, फ्रांस से राजकुमार जी रघुराज सिंह जी चौरड़िया सहित अनेक गणमान्यजनों ने गुरुदर्शन सेवा का लाभ लेकर विविध विषयों पर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

❋ आचार्य भगवन् के वर्ष 2024 के चातुर्मास एवं विविध प्रसंगों हेतु कई क्षेत्रों के प्रतिनिधियों ने गुरुचरणों में पुरजोर विनती प्रस्तुत की।

❋ रियल रामेश रत्न प्रतियोगिता नीमच में सम्पन्न। प्रतिभावान बच्चों ने विजेता के रूप में लोहा मनवाया।

❋ समता संस्कार पाठशाला के बच्चों ने महत्तम महोत्सव पर आधारित प्रदर्शनी लगाई, लोगों ने दिल खोलकर सराहना की।

❋ आचार्य भगवन् के मुखारविंद से 05 नवम्बर 2023 को मुमुक्षु तमन्ना जी जैन, अलीगढ़ रामपुरा (राज.), 22 जनवरी 2024 को मुमुक्षु आर्ची जी नाहर, बेगूँ (राज.) व मुमुक्षु अंकिता जी बाफना, शिरपुर (महा.) और 17 फरवरी 2024 को मुमुक्षु नेहा जी राखेचा, शिरपुर (महा.) की जैन भागवती दीक्षाओं हेतु आगारों सहित स्वीकृति।

❋ स्वाध्यायी सम्मान समारोह में स्वाध्यायियों का सम्मान कर नीमच का कण-कण गौरवान्वित।

श्रमणोपासक

तप संयम गुण की खान, जय गुरु नाना जय गुरु राम।
नीमच में छाई है धर्म की बहार, जन-जन में खुशियाँ अपार।।

अब तक 78 मासखमण के प्रत्याख्यान

तपस्विनी इन्द्रादेवी नाहर के 115 उपवास गतिमान

जैन सिद्धांत बत्तीसी सीखने की होड़

षट्रस तप की अपूर्व लहर में 440 से अधिक तपस्वियों ने लिए प्रत्याख्यान

"धर्म में प्रवेश के लिए जीवन व्यवहार शुद्ध हो।
-आचार्य श्री रामेश
दूसरों के प्रभावों से स्वयं को मुक्त रखें।
-उपाध्याय प्रवर"

जैन स्थानक, राठौर परिसर, नीमच।

जन-जन को राग से वीतराग पथ की ओर अग्रसर करने वाले युगपुरुष, साधना के शिखर पुरुष, रत्नत्रय के महान आराधक, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील सम्प्रेरक, ज्ञान एवं क्रिया के बेजोड़ संगम, नानेश पट्टधर, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-8 के पावन सान्निध्य में '**साधना महोत्सव**' चातुर्मास में तप-त्याग एवं अध्यात्म की पावन गंगा निरंतर प्रवाहित हो रही है। महापुरुषों की एक झलक पाने हेतु जैन-जैनेतर धर्मप्रेमी जनता उमड़ रही है। यह चातुर्मास अनेक उपलब्धियों के साथ नित नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से अब तक 78 मासखमण के प्रत्याख्यान हो चुके हैं। अन्य अनेक तपस्याएँ गतिमान हैं। तपस्विनी इन्द्रा जी अजित जी नाहर के 115 की तपस्या गतिमान है। षट्रस तप में 440 से अधिक भाई-बहिन तपाराधना में संलग्न हैं। इस तप में 5-5 दिन दूध, दही, घी, तेल, मिठाई व नमक का त्याग करते हुए 30 दिन तप करना होता है। जैन सिद्धांत बत्तीसी सीखने की होड़ लगी हुई है। कर्मबंध और हमारा जीवन शिविर, नवकार आराधना शिविर, पच्चक्खाण से जीवन निर्माण शिविर व अनेक परीक्षाओं में भाई-बहिन उत्साहपूर्वक भाग ले रहे हैं।

आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से 18 अक्टूबर को मुमुक्षु नमन जी मेहता, रतलाम की जैन भागवती दीक्षा घोषित होते ही जन-जन में हर्ष एवं श्रद्धा की लहर छा गई। श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मण्डल, बहूमण्डल एवं समता युवा संघ, नीमच अहर्निश सेवारत हैं।

कोई साथ जाने वाला नहीं है

प्रतिदिन 10 मिनट बच्चों के साथ बिताएँ -आचार्य श्री रामेश

01 अक्टूबर 2023। प्रात:कालीन रविवारीय समता शाखा में समता आराधना कर सभी ने आचार्यदेव द्वारा प्रदत्त आयाम से जीवन धन्य बनाया। जैन सिद्धांत बत्तीसी, जैन संस्कार पाठ्यक्रम, सामायिक, प्रतिक्रमण का गहन अध्ययन श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने कराया।

प्रवचन स्थल पर आयोजित धर्मसभा में गुरुवचनों को आत्मसात् करने हेतु विशाल जनमेदिनी की उपस्थिति इस बात की ओर ईशारा कर रही थी कि धर्माराधना हेतु अपार जनसमूह जागरूक हो रहा है। अपूर्व कृपा बरसाते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**इन्द्रियों के विषयों में ही रमण न करें अपितु आत्मा का भी ध्यान रखें। अपनी दृष्टि बदलें। इन्द्रियों का आकर्षण आत्मस्वरूप को भटकाने वाला है। आत्मसौंदर्य कैसे निखरे इस ओर ध्यान दें। हमारा ध्यान इस ओर ज्यादा रहता है कि शरीर का सौंदर्य और बढ़े। बाहर के दृश्यों में न उलझे। पति-पत्नी, पुत्र-परिवार, गाड़ी-बंगला, धन-दौलत कुछ भी साथ जाने वाला नहीं है। शरीर को भी खूब खिलाया-पिलाया, पर यह भी साथ जाने वाला नहीं है। शरीर की दशा बदले, उससे पहले अपनी दिशा बदल लें।**'' आचार्य भगवन् ने बच्चों के साथ प्रतिदिन 10 मिनट बिताने, उन्हें संस्कार प्रदान करने और कथा, प्रार्थना, मांगलिक आदि का ज्ञान देने का आह्वान किया। सभा में उपस्थित अनेक लोगों ने इस हेतु संकल्प ग्रहण किया।

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि सब चीजें छूटने वाली है। दु:खों से मुक्त होना चाहते हो तो परिग्रह, आसक्ति से दूर हटें। साध्वीवर्याओं एवं आरुग्गबोहिलाभं की बहिनों ने *'पुण्यशाली हम भाग्यशाली कि गुरु पाए राम से, और कुछ नहीं मांगें भगवान से'* गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किए।

सुश्राविका चांदाबाई मोहनलाल जी कांकलिया, धुलिया के संथारापूर्वक महाप्रयाण पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। धर्मपाल प्रवृत्ति के राष्ट्रीय संयोजक, अ.भा. जयमल श्रावक संघ के नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष वीरपिता श्री कैलाशचंद जी बोहरा, मैसूर ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। मोक्ष आरोहण शिविर में भाग ले रहे बालक-बालिकाओं ने गुरुचरणों में भाव प्रस्तुत किए। दोपहर में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि का आयोजन हुआ।

पवित्र सोच से ऊर्जा का विकास

02 अक्टूबर 2023। मंगलमय दिन के शुभारंभ रूप पंच परमेष्ठी के गुणों का उच्चारण प्रार्थना सभा में किया गया। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने जैन सिद्धांत बत्तीसी का गहन अध्ययन कराया। तत्पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा में उपस्थित गुरुभक्तों को भगवान महावीर की वाणी से पावन करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''**गुरु ऊर्जा का प्रक्षेपण करते हैं। जीवन में हर कार्य में ऊर्जा की जरूरत होती है और जितनी ऊर्जा होगी कार्य में उतनी ही प्रगति होगी। क्षण-क्षण में ऊर्जा बढ़ती व घटती है। हमारी ऊर्जा का विकास हमारी**

सोच व प्रवृत्ति पर निर्भर करता है। किसी भी कार्य का परिणाम हमारी ऊर्जा पर निर्भर करता है। ऊर्जा का प्रभाव पड़ता है यह वास्तविकता है। हम जितना मोह से दूर रहेंगे उतने ही ऊर्जावान बनेंगे। हमारी ऊर्जा सशक्त है तो बड़ा परिणाम लाने वाली है। भगवान के आभामण्डल के प्रभाव से साँप और नेवले की शत्रुता भी समाप्त हो जाती है। हमारी सोच जितनी पवित्र होगी, ज्ञान, चरित्र, संयम का बल उतना ही मजबूत होगा। वह दुनिया में क्रांति लाने वाला होगा। 'मेरा कोई नहीं, मैं किसी का नहीं' यह आत्मचिन्तन बना रहे।

अनाथी मुनि ने एक बार वेदनामुक्त होते ही दीक्षा ग्रहण कर लेने का संकल्प लिया। उसी भाँति हमारे राम गुरुवर का भी संकल्प बना और आपश्री जी दीक्षा ग्रहण कर स्व-पर कल्याण की दिशा में प्रगति के शिखर छू रहे हैं।''

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आसक्ति, लगाव, मेरेपन के भाव सुखी नहीं बनने देते। जुड़वा बहिनों मानसी व मनस्वी खिंदावत ने ***'गुरुवर भूल नहीं जाना'*** एवं मोक्ष आराधना के बालकों ने ***'यह प्रार्थना मेरी बेकार नहीं होगी'*** गीतिकाएँ प्रस्तुत की। 23 साल से लगातार एकासन कर रहे भागचंद जी गेलड़ा, वाशिम ने एक वर्ष और एकासन करने का संकल्प लिया। भजन स्तवन शिविर में साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा. ने बालक-बालिकाओं को प्रभु गुरुभक्ति से सराबोर कर दिया। मोक्ष आरोहण शिविर का सफल आयोजन महापुरुषों के सान्निध्य में हुआ। भागेश्वर मंदिर में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष जी एवं नीमच संघ अध्यक्ष जी सहित गणमान्यजनों ने विजेताओं को सम्मानित किया।

सामायिक से पहले हमारा जीवन व्यवहार सही बने

03 अक्टूबर 2023। प्रात:कालीन मंगल प्रार्थना में प्रभु एवं गुरुभक्ति का बखान किया गया। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने जैन सिद्धांत बत्तीसी का अध्ययन कराया। राठौर परिसर में आयोजित धर्मसभा में शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् ने फरमाया कि ''**हमारी धारणा बनी रहती है कि बिना झूठ के व्यवहार और व्यापार नहीं चलता। सत्यनिष्ठ व्यक्ति का हर काम बिना झूठ के चलता है। सत्य से ही सारे कार्य सम्पन्न होते हैं। आपका सत्य बोलने वाले व्यक्ति पर विश्वास होता है या असत्य बोलने वाले व्यक्ति पर? सत्य बोलने वाले पर होता है। झूठ का व्यवहार करने वाले कितने ही भरोसे की बात कर लें, लोग उस पर भरोसा नहीं करेंगे। सत्यवादी हमेशा विश्वासपात्र होता है। श्रावक का जीवन धर्म की प्रभावना करने वाला होना चाहिए। हम बिस्किट, पेड़े, खोपरे, पेन आदि की प्रभावना करते हैं और सोचते हैं व्याख्यान में हमारा नाम बोला जाएगा। मुख्य रूप से प्रभावना, श्रावक जीवन और जीवन व्यवहार प्रभावी बने। अज्ञानी व्यक्ति भी उसके सामने नतमस्तक हो जाए। श्रावक व साधु का जीवन ऐसा होना चाहिए जो दूसरों को प्रभावित कर सके। बच्चे संस्कारित होंगे तो धर्म की प्रभावना करने वाले होंगे। हमने बच्चों को कितना संस्कारित किया? हम केवल धन कमाने की जिम्मेदारी निभाते हैं। यदि संस्कार दे दिए तो उनका जीवन सुखी हो जाएगा। पैसा चला जाएगा, लेकिन संस्कारों का धन सदैव साथ रहेगा। धर्म शिक्षा क्या देनी है? यदि ऐसा सोच रहे हैं तो ध्यान रखें कि सामायिक, प्रतिक्रमण करना बाद की बात है, पहले जीवन कैसे जीना, व्यवहार कैसा करना आदि शिक्षाएँ देनी हैं। सरल व्यवहार करना सीखो। देवरानी, जेठानी, ननद, भाभी, सास-बहू, पिता-पुत्र का आपसी व्यवहार कैसा होना चाहिए, इस पर विशेष ध्यान देवें। हमने सामायिक कर ली, लेकिन पहले जीवन व्यवहार सही बने तब सामायिक करना सार्थक होगा। जीवन व्यवहार सुधार कर देखें कि इस प्रयोग से कितने लोग हमसे प्रभावित होते हैं। अपने व्यवहार से खुद को कितनी संतुष्टि मिलती है? बाजार में, घर में हमारे व्यवहार की साख होती है। हमने व्यवहार नहीं सुधारा तो हम भले ही कहीं पर भी चले जाएँ, हम सुखी होने वाले नहीं हैं।**'' आचार्य भगवन् ने सुनंदा चारित्र की सुन्दर व्याख्या फरमाई।

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि सच्चे श्रावक कौन? जो श्रावक धर्म का निरतिचार पालन करे और जो दृढ़ श्रद्धावान हो वही सच्चा श्रावक है। साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। साध्वी श्री जयती श्री जी म.सा. ने 11 उपवास के प्रत्याख्यान लिए। फतेहनगर से 110 किमी. की पदयात्रा कर गुरुभक्त नीमच में गुरुचरणों में उपस्थित हुए।

व्यक्ति के सुधरने से परिवार-समाज सुधरेगा

04 अक्टूबर 2023। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना में पंच परमेष्ठी के गुणानुवाद की स्वर लहरी प्रस्फुटित हुई। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने जैन सिद्धांत बत्तीसी का गहन अध्ययन कराया। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा में परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**आगम साधु की आँख होते हैं अर्थात् साधु की आँख ज्ञान है। उसे ज्ञान की आँखों से देखना चाहिए। तीर्थंकर देव जो करते हैं वैसा करना हमारा उद्देश्य नहीं होना चाहिए अपितु तीर्थंकर देवों ने जो कहा है वैसा करना हमारा उद्देश्य होना चाहिए। इसमें बहुत बड़ी साधना रही हुई है। विनय के बिना ज्ञान नहीं चढ़ता है। अहंकार की प्रवृत्तियाँ जब तक नहीं गलेगी तब तक ज्ञान प्रवेश नहीं कर पाएगा। अहंकार की ग्रन्थि को खोलना पड़ेगा। गुरु से ज्ञान लेने की बात बताई गई है। गुरु के मुख से ज्ञान स्वीकार करना चाहिए। पहले राजकुमार हो या सेठ का बेटा, कला सीखने गुरु के पास ही जाता था। हमें गुरु से ज्ञान लेना है तो हमें अपना व्यवहार गुरु के अनुकूल बनाना होगा। गुरुजी प्रिय भाषा में कहें या अप्रिय भाषा में, उसको विनय के साथ हृदय में धारण करें। जिसमें यदि ऐसी क्षमता होती है तो उस पर अपने आप ज्ञान चढ़ेगा। हमारा जीवन तब सुधरेगा जब सीखे हुए ज्ञान पर अमल करेंगे। जीवन की स्थितियाँ सुधरेगी और सीखा हुआ ज्ञान आचरण में लाएँगे तो आत्मा शक्तिशाली बनेगी। धर्म में प्रवेश के लिए जीवन व्यवहार का शुद्धिकरण होना चाहिए। वात्सल्य के धागे में परिवार को पिरोकर रखा जाए तो परिवार बिगड़ेगा नहीं, बिखरेगा नहीं। वात्सल्य एक ऐसा गुण है जो परिवार को बाँधने में सफल रहता है। संस्कारों की शुरुआत कहाँ से होनी चाहिए? पहले स्वयं से होनी चाहिए। व्यक्ति सुधरेगा तो परिवार सुधर जाएगा। परिवार सुधरा तो समाज सुधर जाएगा। हम पहले दुनिया को सुधारने की कोशिश करते हैं, लेकिन वास्तव में स्वयं में संशोधन करने की जरूरत है।**''

> तीर्थंकर देव जो करते हैं वैसा करना हमारा उद्देश्य नहीं होना चाहिए अपितु तीर्थंकर देवों ने जो कहा है वैसा करना हमारा उद्देश्य होना चाहिए।

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि धीरज का फल मीठा होता है। हर परिस्थिति में धैर्य बनाए रखें। साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा., साध्वी श्री कुसुमकान्ता जी म.सा., साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुवर्णा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति भजन प्रस्तुत किया। दस मिनट बच्चों के साथ बिताकर उन्हें सुसंस्कार देने का संकल्प कई भाई-बहिनों ने लिया। षट्रस तप में लगभग 440 भाई-बहिन भाग ले रहे हैं। माह में एक दिन मोबाइल का त्याग कई भाई-बहिनों ने ग्रहण किया।

> दस मिनट बच्चों के साथ बिताकर उन्हें सुसंस्कार देने का संकल्प कई भाई-बहिनों ने लिया।

जैसी संगत वैसी रंगत

05 अक्टूबर 2023। भोर के सूर्योदय के साथ ही मंगलमय प्रार्थना के स्वरों से सम्पूर्ण धर्मस्थल गूँज उठा। जैन सिद्धांत बत्तीसी का गहन अध्ययन श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने कराया। तत्पश्चात् राठौर परिसर में आयोजित विशाल जनमेदिनी से परिपूरित धर्मसभा में तरुण तपस्वी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **''जैसी संगत होती है, वैसी ही रंगत आती है। जो मुझे सत्य की पहचान कराए वो सत्संगत और जो मुझे भ्रमित कर दे वो सत्संगत कभी नहीं हो सकती। रोज-रोज सत्संग करने से हमारे चित्त में निर्मलता आती है। जहाँ भी साधु-संत की संगति मिले, वहीं लाभ लो। हमारे गुरु का लक्ष्य हमारा विकास करना होता है। गुरु तो अपने शिष्य को भी गुरु बनाने की कोशिश करते हैं। दुनिया की संगत संसार बढ़ाने वाली होती है। सत्संग के अवसर को सजाना चाहिए। अपनी योग्यता विकसित करने के लिए धर्म करें। हर व्यक्ति अपने आपको योग्य समझकर चलता है। हम हर क्षेत्र में योग्य नहीं हैं, फिर भी हम अपनी योग्यता को देखते हैं, अयोग्यता को नहीं देखते। हमें अपनी मोक्ष जाने की योग्यता को देखना है। ऐसी आराधना करें कि मोक्ष जाने की योग्यता प्रकट हो जाए। हमारा अपना ही कर्म हमें सुख और दुःख देता है।''**

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने गुरुवर राम के प्रति अटूट श्रद्धा रखने की प्रेरणा दी। साध्वी मण्डल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। तपस्याओं के विभिन्न प्रत्याख्यान हुए।

निष्काम बनो

06 अक्टूबर 2023। मंगलमय प्रार्थना में गुरुभक्ति एवं पंच परमेष्ठी की आराधना के साथ दिन के मंगलमय आगाज के पश्चात् ज्ञान-पिपासु गुरुभक्तों को आगमों के सार रूप अमृतवाणी का रसपान कराते हुए प्रशान्तमना आचार्य भगवन् ने मधुरवाणी में *'धम्म सद्धा चालीसा'* की पंक्तियों के उच्चारण के साथ फरमाया कि –

धम्म सद्धा हृदय धरूँ, धर्म बने मुझ प्राण।
धर्माराधन नित्य करूँ, धर्म सदा सुख त्राण।।

''शालिभद्र के पास अखूट सम्पत्ति थी, जिसका वह उपयोग कर रहा था, पर उससे चिपका नहीं। जो चिपकता है वह दुःखी होता है। हम भी पदार्थ के साथ चिपके हैं तो खतरा है। भँवरा मकरंद लेकर उड़ जाता है, चिपकता नहीं है। हम पदार्थ के उपभोक्ता बने, रागी-द्वेषी नहीं बनें। इस सिद्धांत को ध्यान में ले लिया तो दुःखी नहीं होंगे। आसक्ति, लगाव तो घी-तेल के जैसे हैं, इनसे कर्म चिपक जाते हैं। निष्काम भाव से उपयोग कर बचाव हो सकता है। पदार्थ का भोग करना बुरी बात नहीं है, पर पदार्थ भोग करने लग जाए तो बुरी बात है। पदार्थ से जो चिपकेगा वह संसार से छूट नहीं पाएगा। त्याग, आसक्ति को हटाने वाला है। हमें किसी भी चीज पर आकर्षित नहीं होना है। भगवान महावीर फरमाते हैं कि निष्काम बनो।'' आपश्री जी ने सुनंदा चारित्र की सुन्दर व्याख्या फरमाई।

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आज संस्कारों की कमी के कारण बाल-युवा पीढ़ी भटक रही है। हमें बच्चों को कार नहीं, संस्कार देने हैं। ऐसा कोई काम न करें कि आत्मा जन्म-मरण के झंझट में भटकती रहे।

साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा., साध्वी श्री सुवर्णा श्री जी म.सा., साध्वी श्री कुसुमकान्ता श्री जी म.सा., साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा., साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा., साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री विजेता श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया-

'मिले हो तुम हमें गुरुवर, सभी कुछ हमने पाया है।
लगता है आज धरती पर, खुदा खुद चलकर आया है।।'

पंच दिवसीय नवकार आराधना शिविर में साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा. ने पंच परमेष्ठी पर सुन्दर व्याख्या फरमाते हुए भीतर की शक्तियों का अहसास कराया।

लघुता से प्रभुता

07 अक्टूबर 2023। मंगलमय प्रार्थना में भक्ति एवं गुणों की आराधना की गई। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने जैन सिद्धांत बत्तीसी का तलस्पर्शी अध्ययन कराया। धर्मसभा में उपस्थित चतुर्विध संघ को सम्बोधित करते हुए सिरीवाल प्रतिबोधक आचार्य भगवन् ने अमृतमय वाणी में धम्म सद्धा चालीसा की पंक्तियों के वाचन के साथ फरमाया कि ''**संसार मार्ग सचमुच में मार्ग नहीं अपितु भूलभूलैया है। यह मंजिल दिलाने वाला नहीं है। पड़ाव मंजिल नहीं है। मंजिल तो वह है जहाँ सदा के लिए पहुँचा जाए। मंजिल की खोज ही सही खोज है। हमारा मुख्य प्रयोजन शाश्वत सुख को पाना है, शांति समाधि को पाना है। जिसने उस शांति के रहस्य को जाना है वही रहस्यज्ञाता बन सकता है। भगवान महावीर का जीवन हमारे लिए आदर्श रूप है। उन्होंने अपने जीवन में आए सभी उपसर्ग शांति से सहन किए। हमारा ध्यान बाह्य पदार्थों में बना हुआ है। हमें सम्पत्ति लुभा रही है। मोह के बिल में हाथ डालेंगे तो मूर्च्छा बढ़ेगी। संसार के प्रति आसक्ति हमें अतृप्त बनाएगी। धन जाए तो जाए, पर धर्म नहीं जाना चाहिए। प्रभु सुमिरण को कभी भूलना नहीं चाहिए और मान-प्रशंसा में कभी फूलना नहीं चाहिए। सदा प्रभु का दास बनकर रहना चाहिए। इससे लघुता आती है और लघुता से प्रभुता आती है।**'' आपश्री जी ने सुनन्दा चारित्र की सुन्दर व्याख्या प्रस्तुत की।

राजस्थान सरकार के पूर्व मंत्री श्रीचंद जी कृपलानी, पूर्व विधायक अशोक जी नवलखा आदि ने गुरुदेव के दर्शन कर अनेक विषयों पर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

पैसा भाइयों में वैर डालता है

08 अक्टूबर 2023। रविवार का दिन होने से प्रात:काल से ही गुरुभक्तों की उपस्थिति हर्षित करने वाली थी। आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त विशेष आयाम रविवारीय समता शाखा का आयोजन प्रात: प्रार्थना के समय हुआ। इस आयाम में समता आराधना कर सैंकड़ों गुरुभक्तों ने अपना जीवन पावन किया। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने जैन सिद्धांत बत्तीसी, सामायिक, प्रतिक्रमण आदि का अध्ययन कराया।

विशाल धर्मसभा में प्रात:स्मरणीय आचार्य भगवन् ने उपस्थित जनसमूह को अपनी मधुरवाणी में संबोधित करते हुए फरमाया कि ''**हमारे विचार आत्महित प्रवृत्ति और आत्महित रहित प्रवृत्ति करवाते हैं। हम जानते हैं कि हमारी आत्मा का हित या अहित किसमें है किन्तु हमारी प्रवृत्ति आत्महित की दिशा में कम होती है। आत्महित रहित प्रवृत्ति में हमारा योग ज्यादा रहता है। स्वार्थ आत्महित है या आत्मरहित है? क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष आत्मा के अहित हैं। ये सारी अवस्थाएँ आत्मा के लिए अहितकर हैं, आत्मा के लिए शुभकर, हितकर नहीं हैं। हित क्या है? तुम दूसरों के प्राणों का हरण मत करो। हरण नहीं करोगे तो तुम्हारे प्राणों का भी कोई हरण नहीं करेगा। यदि कर लिया तो तुम सुरक्षित नहीं रह सकते। तलवार यदि म्यान में रहती है तो भय नहीं रहता। हमारे मन, वचन, काया वर्षों से खुले हैं। वर्षों से संवृत्त नहीं हैं। म्यान में रहेंगे तो दूसरों को भयभीत व परेशान करने वाले नहीं रहेंगे।**

कई भाई-बहिनों ने 108 नवकार, 108 लोगस्स, 108 नमोत्थु णं करने का संकल्प लिया।

हमारे भीतर जो वात्सल्य भाव हैं वे धर्म को बढ़ाने वाले हैं। जिस परिवार में वात्सल्य भाव होता है वह परिवार कभी टूटता नहीं है। वात्सल्य भाव की कमी व संकीर्णता परिवार के टूटने का कारण है। यदि आप में वात्सल्य भाव हैं और यदि परिवार का कोई सदस्य अलग हो भी गया तो वह आपके वात्सल्य भाव के प्रभाव से प्रेरित होगा। वो आपके भाव को भुला नहीं पाएगा। भाइयों में भेद कौन डालता है? पैसा। पैसा पाप है। पैसा ही भेद डालता है। सम्पत्ति का बँटवारा बराबर नहीं हुआ, मुझे सम्पत्ति कम मिली अथवा बराबर नहीं मिली, ऐसे भाव आएँ तो विचार करो कि यदि सम्पत्ति मिल भी गई तो भाग्य नहीं होने से वह रहेगी कि चली जाएगी?''

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि अर्थ ने जीवन को व्यर्थ बना दिया है। धन से दूसरे को सहयोग कर उसका सदुपयोग करें।

आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से इन्द्रा जी नाहर के 108 उपवास, साध्वी श्री यतना श्री जी म.सा. एवं साध्वी श्री लोकोत्तर श्री जी म.सा. के 19-19 उपवास की जैसे ही घोषणा हुई, सम्पूर्ण सभा केसरिया-केसरिया एवं हर्ष-हर्ष, जय-जय के नाद से गुँजित हो उठी। कई भाई-बहिनों ने 108 नवकार, 108 लोगस्स, 108 नमोत्थु णं करने का संकल्प लिया। आचार्य भगवन् के वर्ष 2024 के चातुर्मास हेतु चित्तौड़गढ़ संघ ने पुरजोर विनती प्रस्तुत की। छोटीसादड़ी के 108 भाई-बहिनों ने नीमच तक 20 किमी. पदयात्रा कर गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। परम गुरुभक्त वीरेन्द्र जी लालचन्द जी कोठारी, रतलाम के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। आचार्य भगवन् ने पचरंगी करने की प्रेरणा दी।

'मैं'... 'मैं'... के कचरे की करें धुलाई

09 अक्टूबर 2023। प्रवचन स्थल पर आयोजित धर्मसभा में अपनी अमृतमयी वाणी में बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने फरमाया कि **''गुरु शिष्य से कह रहे हैं कि मोह का त्याग कर। शिष्य कहता है- मोह का त्याग करना बहुत कठिन है। मोह का त्याग कैसे करूँ? मुझे सुख, शांति, आनंद मोह में ही मिलते हैं। मैं जिनसे सुख का अनुभव करता हूँ। वह देने वाले कौन हैं? मेरा परिवार मुझे आनंद देता है। मेरी सुविधाएँ मुझे आनंद देती हैं। अगर मोह छोड़ दूँगा तो मेरे पास बचेगा ही क्या? जो आकुल-व्याकुल रहता है वो ही भयभीत रहता है। उसे हर रास्ते में आतंक दिखता है। उसके मन में डर रहता है कि अगर पीछे की जगह छोड़ दी तो आगे नहीं बढ़ पाऊँगा। वह जहाँ है, वहीं चिपका रहता है। वर्तमान में समाज में कुछ लोगों की आदत बन गई है अपने 'मैं' का बखान करने की। कोई भी मिल जाए तो शुरू हो जाते हैं अपने 'मैं' की कहानी सुनाने कि 'मैं ऐसा हूँ। मैंने ऐसा कर दिया, ऐसा कह दिया' आदि। सामने वाले को अच्छा लगे या बुरा इससे उनको कोई मतलब नहीं होता। उनको तो यही लगता है कि 'मैंने दुनिया में बड़े-बड़े काम किए हैं। मैंने ही संघर्ष किया और इतनी सारी उपलब्धियाँ हासिल की हैं। मैंने जो किया या कर रहा हूँ वह दूसरे लोग नहीं कर सकते। समाज के हर व्यक्ति को मालूम चल जाना चाहिए कि मैंने कितना बड़ा काम किया है।' उन्हें अपने आप के बारे में स्वयं ही बताना बड़ा आनन्ददायक लगता है। वे हर किसी पर प्रभाव डालने की नाकाम कोशिश करते हैं। इसका कारण है कि दिमाग में एक ही कचरा है, 'मैं'... 'मैं'... का कचरा। लोग इनकी झूठी प्रशंसा कर इनके दिमाग में और कचरा डाल रहे हैं। अरे! आप तो बड़े महान हैं। ऐसी झूठी प्रशंसा 'मैं' के कचरे को बढ़ाती है। स्वच्छता अभियान में दिमाग के इस कचरे की सफाई होनी चाहिए।''**

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि धर्म का सम्यक् आचरण करने से जीव को अजर-अमर गति की प्राप्ति होती है। धर्म पर सम्यक् श्रद्धा करने, उस अनुसार आचरण करने से जीव को सिद्ध अवस्था प्राप्त हो जाती है। धर्म क्या है? अग्नि का उष्ण, जल का शीतल स्वभाव है। उसी रूप में उनका धर्म है। जिस धर्म की बात हो रही है, वो हमारी आत्मा का स्वभाव है। क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष क्या ये हमारे स्वभाव हैं? नहीं, ये सभी विभाव हैं। ये आत्मा के विकार हैं। शुद्ध आत्मा का धर्म स्वभाव नहीं कहा जा सकता।

साध्वीवृंद ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। नवकार आराधना शिविर में साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा. ने नवकार महामंत्र की अद्‌भुत महिमा बताई। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने श्रुत आरोहक कक्षा में महिलाओं को मार्गदर्शन प्रदान किया।

अकेले चलो

10 अक्टूबर 2023। प्रात: प्रार्थना एवं श्रुत आरोहक व प्रतिक्रमण की कक्षा में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने विशेष मार्गदर्शन प्रदान किया। तत्पश्चात् विशाल धर्मसभा में गुरुभक्तों पर जिनवाणी का अमृतवर्षण करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''अकेलेपन से डर लगता है। मैं अकेला संकटों का सामना कैसे करूँगा। यदि कोई साथ मिल जाता है तो बल मिल जाता है, उत्साह बढ़ जाता है। इससे मन में संतोष रहता है कि कोई मेरे साथ है। गुरु शिष्य से कहते हैं कि अकेले चलो। किसी का साथ नहीं चाहिए। जहाँ एक रहता है वहाँ सब कुछ है। जहाँ दो हैं वहाँ सब कुछ खत्म। तीर्थंकरों ने संसार के प्राणियों को सुखी बनाने के लिए जो उपदेश प्रदान किया है उसमें बार-बार एकला चलने की बात कही गई। भगवान के समय में स्पष्ट था कि जब तक व्यक्ति कमजोर है तब तक वह पराश्रित है। पराश्रय कभी शक्ति बढ़ाने वाला नहीं है। शक्ति का विकास सहारे का त्याग करने से होता है। जो काम सारी दुनिया नहीं कर सकती, वह तुम कर सकते हो। जब दुनिया का सहारा लेना छोड़ दोगे तो तुम अकेले ही सब कुछ कर सकते हो। एक तत्त्व का गहरा बोध होना चाहिए। आत्मा जब अच्छे काम में लगे तो वह मित्र और बुरे काम में लगे तो वह शत्रु हो जाती है। अकेला चलने का मतलब यह नहीं है कि किसी का सहयोग न लिया जाए या किसी को सहयोग न दिया जाए। अकेले चलने का तात्पर्य क्या है? दूसरों के प्रभावों से स्वयं को मुक्त रखना ही अकेले चलना है।''**

दूसरों के प्रभावों से स्वयं को मुक्त रखना ही अकेले चलना है।

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि बिल्ली रास्ता काट दे तो अपशकुन मानते हैं और कोई डर होता है तो घर-दुकान के सामने नींबू-मिर्ची लटका लेते हैं। हमें डर किस बात का है? देव, गुरु, धर्म पर अटूट आस्था होनी चाहिए। खराब से खराब क्या होगा? जीव का नाश होगा।

नवकार आराधना शिविर में साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा. ने नवकार की महिमा पर प्रकाश डालते हुए नवकार को गुणपूजक एवं सारे कर्मों को भस्म करने की ताकत बताया।

प्राणीमात्र के साथ रखें मैत्रीभाव

11 अक्टूबर 2023। प्रात: मंगलमय प्रार्थना के संगान के पश्चात् श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने श्रुत आरोहक एवं प्रतिक्रमण की कक्षा में विशेष अध्यापन कराया। राठौर परिसर में आयोजित धर्मसभा में आचार्य भगवन् ने अपने दिव्य उद्‌बोधन में भगवान महावीर की वाणी का सार बताते हुए फरमाया कि **''हमारे निमित्त से किसी भी जीव को**

पीड़ा नहीं पहुँचनी चाहिए। हमें अहिंसा का बोध करना चाहिए। प्राणी मात्र के साथ मैत्री भाव हो। सदैव सत्य वचन बोलें क्योंकि झूठ ज्यादा देर तक नहीं टिकता। जो झूठ बोलता है उससे लोगों का विश्वास उठ जाता है।'' आचार्य भगवन् सुनन्दा चारित्र के माध्यम से नित नवीन प्रेरणा प्रदान कर रहे हैं।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि बाहर के पुद्‌गलों को खोजने का काम हमने बहुत किया है। जीवन में बहुत सारी समस्याएँ आती हैं। उनमें उलझना नहीं है। हमें आत्मतत्त्व की खोज करनी है। श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने श्रद्धा को परम दुर्लभ बताया।

साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा., साध्वी श्री प्रभावना श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुवर्णा श्री जी म.सा., साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा., साध्वी श्री किरणप्रभा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने ***'दुनिया में डंको बाजे रे, खम्मा खम्मा म्हारा राम गुरुवर ने'*** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। पच्चक्खाण से जीवन निर्वाण शिविर में साध्वी श्री जयती श्री जी म.सा. ने छोटे-छोटे त्याग-नियम व पच्चक्खाण से जीवन में लाभ होने की बात कही।

ज्ञान क्रिया से मोक्ष प्राप्ति

12 अक्टूबर 2023। प्रात:कालीन प्रार्थना में गुरु एवं प्रभु भक्ति पश्चात् श्रुत आरोहक व प्रतिक्रमण की कक्षा में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने गहनतम अध्ययन कराया। विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने उपस्थित अपार जनसमूह को संबोधित करते हुए अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''निज स्वरुप की जो साधना होती है, वह क्रिया हमें मुक्ति की ओर बढ़ाने वाली होती है। उसी से आत्म-स्वरुप की परिपूर्णता प्राप्त होती है। एक कमरे में गंध देने वाले दो पदार्थ पड़े हैं, जिनमें से एक से दुर्गंध आ रही है और दूसरे से सुगंध। कौन-सा पदार्थ सुगंध देने वाला है और कौन-सा दुर्गंध देने वाला इसका निर्णय एकदम से नहीं किया जा सकता। वैसे ही राग-द्वेष हमारे भीतर भरे हुए हैं। राग-द्वेष दोनों को ही हमने बाहर से ग्रहण किया है। इनमें से हमारा अपना कोई तत्त्व नहीं है। इन दोनों से हम खाली हो जाएँगे तो एक मात्र आत्मभाव का अवसर रहेगा।**

'ज्ञान से मोक्ष मिलता है या क्रिया से?' यदि क्रिया से मिलता है तो ज्ञान की प्राप्ति क्यों? तुम्हारा ज्ञान प्रकट हो जाएगा तो तुम्हारी मुक्ति हो जाएगी। आत्मा का बोध होने के बाद कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं। भगवान कहते हैं कि न ज्ञान से मोक्ष मिलेगा और न ही क्रिया से। ज्ञान और क्रिया दोनों जुड़ेंगे तो आत्म-स्वरुप के भाव से मोक्ष मिलेगा।''

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि विद्या वही जो मुक्ति के मार्ग पर ले जाए। शिक्षा के साथ समझ होनी चाहिए। समता महिला मण्डल, दुर्ग ने *'हम तुमको शीश झुकाते हैं और धन्य-धन्य हो जाते हैं'* गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। साध्वीवर्याओं ने *'तप के बिना किसी को मिलती नहीं शुभ गति'* तपस्या गीत प्रस्तुत कर सभी को तप-त्याग की प्रेरणा दी। जितनी उम्र उतने नवकार महामंत्र गिनने का प्रत्याख्यान सभा में उपस्थित सैंकड़ों लोगों ने ग्रहण किया।

आचार्य भगवन् के वर्ष 2024 के चातुर्मास एवं अन्य विविध प्रसंगों हेतु निम्बाहेड़ा संघ ने पुरजोर विनती प्रस्तुत की। पच्चक्खाण से जीवन निर्माण शिविर का क्रम जारी रहा।

प्रज्ञा से करें धर्म की समीक्षा

13 अक्टूबर 2023। प्रात:कालीन प्रार्थना एवं श्रुत आरोहण व प्रतिक्रमण कक्षा में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. द्वारा अध्यापन पश्चात् प्रवचन सभा में चतुर्विध संघ की उपस्थिति अद्भुत दृश्य उपस्थित कर रही थी। इस धर्मसभा में आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**हमारे मस्तिष्क का संतुलन सही नहीं हो तो महाभारत खड़ा हो सकता है। दु:ख का कारण हमारी सोच है, हमारे विचार हैं। प्रज्ञा से धर्म की समीक्षा करें। संसार के सभी प्राणी जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। अहिंसा का मतलब ना जीने की इच्छा ना मरने की तमन्ना। आत्मा का कभी विनाश नहीं होता, लेकिन शरीर का मरण निश्चित है।**''

आचार्य भगवन् ने महिला आरक्षण पर फरमाया कि ''**महिलाओं को राजनीति की बजाय परिवार की ओर ध्यान देना चाहिए। परिवार मजबूत है तो राष्ट्र मजबूत बनेगा। यदि अच्छे विचार रखेंगे तो जीवन प्रगति पथ पर बढ़ेगा और यदि बुरे विचार रखेंगे तो जीवन का पतन निश्चित है।**'' आपश्री जी ने सुनन्दा चारित्र की मार्मिक व्याख्या फरमाई।

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमें दुनिया को नहीं अपने आपको बदलना है।

साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा., साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा., साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुवर्णा श्री जी म.सा., साध्वी श्री विराट श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुहर्षा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने गुरु नाना के हो राम, मेरे दिल में बस जाए गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

पच्चक्खान से निर्वाण शिविर में साध्वी श्री जयति श्री जी म.सा. ने महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की।

गुणात्मक भाव से की गई पूजा-अर्चना स्वीकार

> " प्रशंसा का रिएक्शन हो या न हो किन्तु कोई निन्दा या बुराई करे तो उसका रिएक्शन बहुत जल्दी हो जाता है।

14 अक्टूबर 2023। दैनिक धार्मिक चर्या में प्रार्थना एवं तत्त्वबोध कक्षा में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. द्वारा सैद्धांतिक जानकारी प्रदान करने के पश्चात् आयोजित धर्मसभा में जन-जन की आस्था के केन्द्र आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी से उपस्थित गुरुभक्तों के हृदयों को पावन करते हुए तीर्थंकर शीतलनाथ भगवान की स्तुति की पंक्तियों के गान के पश्चात् फरमाया कि ''**पूजा-अर्चना तरीके से होती है। कोई कुमकुम, केसर, चन्दन से करता है तो कोई गुणात्मक भावों से करता है। चन्दन, केसर भौतिक पदार्थ हैं। इनसे तीर्थंकर देवों का कोई लेना-देना नहीं है, क्योंकि उन्होंने इन सबका त्याग कर दिया था। सच्ची पूजा-अर्चना अहिंसक तरीके से स्वीकार हो सकती है। तीर्थंकर देवों ने छोटे से छोटे प्राणी को कष्ट नहीं पहुँचे यही लक्ष्य रखा। उनके जीवन व्यवहार, आचरण में हिंसा भाव होने तो दूर की बात है, वे तो इतन विवेक रखते थे कि उनके निमित्त से किसी जीव को कष्ट नहीं पहुँचे। जिस पूजा-अर्चना में हिंसा हो, उसे वे कैसे स्वीकार करेंगे? गुणात्मक भाव से की गई पूजा-अर्चना ही स्वीकार होती है। कोमलता, विदारणता, उदासीनता, शीतलता अर्थात् करुणा भाव। प्राणी मात्र पर अनुकंपा की भावना या करुणा का भाव दूसरा विदारण है। जब कर्मों का विदारण करने का प्रयोग उचित हुआ तो निर्मल बन गए। शत्रु को परास्त करना है तो रहम काम नहीं आएगा। वहाँ तीक्ष्ण भाव की आवश्यकता होती**

है। तीक्ष्णता व संक्लेश में फर्क है। संक्लेश कर्मबंधन कराने वाला होता है। तीक्ष्णता कर्मों का विदारण कराने वाली होती है। तीसरा, उदासीनता बहुत ही महत्त्वपूर्ण होती है। कोई एक्शन नहीं, कोई रिएक्शन नहीं। अधिकांशतः हमारे भीतर रिएक्शन पैदा हो जाता है। अनुकूल परिस्थितियाँ हैं तो हम सह लेंगे, लेकिन यदि प्रतिकूल परिस्थितियाँ होंगी तो उनके प्रति हमारा रिएक्शन यानी प्रतिक्रिया चालू हो जाएगी। उदासीनता का मतलब तटस्थ हो जाना है। समभाव को उदासीनता कहा गया है। प्रशंसा का रिएक्शन हो या न हो किन्तु कोई निन्दा या बुराई करे तो उसका रिएक्शन बहुत जल्दी हो जाता है।''

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि दुःख क्यों होता है? जो इच्छाओं से निवृत्त नहीं हुआ वो चिंतित व खिन्न है। आज की बीमारियों का सबसे बड़ा कारण तनाव व चिंता है। बिस्तर सोने के लिए है सोचने के लिए नहीं। बुढ़ापा रात में ही आता है।

आर.एस.एस. प्रमुख टेकचंद जी बरड़िया, बीकानेर, सिंगोली के पूर्व विधायक दुलीचंद जी जैन, गुरुभक्त राजकुमार जी रघुराज सिंह जी चौरड़िया, फ्रांस एवं सुधा जी रामपुरिया-बीकानेर सहित हजारों गुरुभक्तों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। सूरत महिला मण्डल एवं बहू मण्डल ने विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किए।

समता संस्कार पाठशाला के अन्तर्गत टाउन हॉल में आयोजित '**रियल रामेश रत्न**' प्रतियोगिता में विभिन्न स्थानों के प्रतिभावान बच्चों ने धार्मिक गायन आदि की प्रस्तुति दी। पाठशाला राष्ट्रीय संयोजक के नेतृत्व में सम्पन्न इस कार्यक्रम में संघ एवं संघ की शाखाओं के पदाधिकारियों की गरिमामय उपस्थिति रही।

मन तृप्त होगा तो ही धर्म की सही आराधना

किरण कुमार जी हिंगड़ के 127 उपवास

15 अक्टूबर 2023। आचार्य श्री रामेश द्वारा प्रदत्त विशेष आयाम रविवारीय समता शाखा आराधना में श्रावक-श्राविकाओं का उत्साह देखते ही बनता था। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने सैद्धांतिक धारणा पर विशेष मार्गदर्शन प्रदान किया।

नीमच की पावन धरा पर राठौर परिसर में चतुर्विध संघ की उपस्थिति में समवशरण सदृश्य आयोजित धर्मसभा में विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने फरमाया कि **''धर्म का परिणाम चित्त की शांति एवं समाधि है। मन दौड़ता रहता है। मन तृप्त हो गया तो धर्म की सही आराधना होगी। धर्म की आराधना चित्त को विश्राम देने वाली है। पहला विश्राम- सामायिक। सामायिक यानी कोई तनाव-टेंशन नहीं। वहाँ सिर्फ हलकापन है। मन स्वस्थ होता है तो हलका लगता है। शरीर स्वस्थ हो तो हलकापन महसूस होता है। बीमारी हो तो हलकापन नहीं लगता। सामायिक मन को हलका करने वाली होती है। दूसरा है पौषध। इसमें चौबीस घण्टे के लिए दो करण तीन योग से पापकारी क्रियाओं का त्याग किया जाता है। आत्मा को पोषण मिले तो आत्मबल सुदृढ़ होता है। संसार के संबंध मेरे नहीं है, यही चिंतन रहता है। तीसरा है संलेखना संथारा। इसमें यह भाव रहता है कि मैं किसी का नहीं, कोई मेरा नहीं। शरीर भी मेरा नहीं है। मनुष्य जन्म से हम जन्म-मरण से मुक्ति पा सकते हैं। कोई क्या कर रहा है इस पर हमारी नजर नहीं होनी चाहिए। हमारी नजर दूसरों पर नहीं अपने पर होनी चाहिए। हमें दिखावा नहीं, जीवन को सीमित करना है ताकि हम सुखी रहें। अधिकार बोध समस्या है। अतः अधिकार छोड़कर कर्त्तव्य बोध को प्राप्त करने का लक्ष्य रखें।''**

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने फरमाया कि ''**जो चीज जैसी है उसे वैसा बताने वाले गुरु होते हैं। आत्मा का स्वभाव गहरा होता है। हमारा सुख इस बात पर निर्भर करता है कि हम सच्चे मुनि व श्रमणोपासक बनें। हमारी एकाग्रता अपने धर्म के विकास व पालन की होनी चाहिए। जो अपने धर्म पर केन्द्रित है, वह सुखी है। साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका अपने धर्म का पालन करते हैं तो यह उनकी धर्म के प्रति समर्पणा है। हमारा जीवन धर्म से कितना सराबोर है? धर्म अंतर में कितना गहरा है? आरम्भ, परिग्रह, आसक्ति, अभिमान कम करने की दिशा में हमने कितना प्रयास किया है? सत्य को पाने की हम में कितनी ललक है। धर्म संघ की सेवा का तात्पर्य साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका की सेवा है। धर्म भाव बढ़ाने की भावना भाएँ। धर्म भाव बढ़ेगा तो धर्मसंघ बढ़ेगा।**''

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि परिग्रह, लगाव, आसक्ति छोड़ने से कर्मबंध नहीं होगा। भ्रूणहत्या त्याग का संकल्प कई भाई-बहिनों ने लिया।

पाठशाला के बच्चों ने महत्तम महोत्सव की प्रेरक प्रदर्शनी लगाई, जिसे लोगों ने खूब सराहा। **आचार्य भगवन् के मुखारविंद से तपस्वी किरण कुमार जी हिंगड़, रायपुर/भीलवाड़ा ने 127 उपवास का प्रत्याख्यान ग्रहण किया।**

उभय गुरु-भगवंतों के पावन सान्निध्य में आगम वांचनी, प्रश्नोत्तरी, जिज्ञासा-समाधान एवं ज्ञानचर्चा आदि धार्मिक कार्यक्रम प्रतिदिन हो रहे हैं, जिनसे गुरुभक्त लाभान्वित होकर जीवन उत्थान कर रहे हैं। श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, महिला समिति एवं समता युवा संघ के पदाधिकारियों व सदस्यों तथा देशभर के विभिन्न स्थानों से पधारे श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। संघ समर्पणा महोत्सव के विभिन्न आयोजन हुए।

नीमच चातुर्मास अपूर्व धर्मोल्लास के वातावरण में चरमोत्कर्ष की ओर गतिमान है। श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ, समता महिला मण्डल, समता युवा संघ एवं बहूमण्डल नीमच अहर्निश सेवारत रहकर चातुर्मास की सफलता हेतु दृढ़संकल्पित नजर आ रहे हैं।

तपस्या सूची

संत-सती वर्ग

साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा.	14 उपवास (गतिमान)	साध्वी श्री जयती श्री जी म.सा.	11 उपवास
		साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा.	11 उपवास
साध्वी श्री यतना श्री जी म.सा.	26 (गतिमान)	साध्वी श्री विराट श्री जी म.सा.	36 आयंबिल (गतिमान)
साध्वी श्री लोकोत्तर श्री जी म.सा.	26 (गतिमान)		

श्रावक-श्राविका वर्ग

आजीवन शीलव्रत	महेन्द्र जी लता जी बोथरा-धरणगाँव, कन्हैयालाल जी भण्डारी-पिपलियामण्डी, सुमित्रा जी बोथरा-दिल्ली, कन्हैयालाल जी मट्ठा-उदयपुर, सुधीर जी दुग्गड़-जोधपुर, सुशील जी सोनावत-भीनासर, घेवरबाई राजपूत-ब्यावर, रिद्धकरण जी बरड़िया-दिल्ली, सुन्दरलाल जी सेठिया-छिंदवाड़ा, प्रकाश जी मेहता-छोटीसादड़ी, देवचंद जी-सुशीलाबाई सांड-देशनोक, लीलादेवी, सुरेन्द्र जी झामड़-किशनगढ़, प्रकाश जी श्रीश्रीमाल-जावरा, फतेहसिंह जी पितलिया-मंदसौर, जम्बूकुमार जी बम्बोरिया-उदयपुर, सुरेश जी पोखरना-

	उदयपुर, अन्तरबाई जैन–रुड़की, कमलाबाई जैन–रुड़की, ताराचंद जी भंसाली–बीकानेर, नरेन्द्र कुमार जी जैन–मुजफ्फरनगर, सुजानमल जी सिंघवी–निम्बाहेड़ा, मदनलाल जी लीलाबाई बोहरा, धर्मचन्द जी मदनदेवी गिड़िया–राजनांदगाँव, बसंती जी पींचा–गंगाशहर, मनोरमा जी मुणोत–रतलाम, मनसुख जी ऊषा जी दुग्गड़–नासिक, अर्जुन जी सुशीला जी खिमेसरा–सूरत, चाँदमल जी दिलवर जी लोढ़ा–ब्यावर, धर्मचंद जी सरोज जी बरड़िया–खरियार रोड, प्रकाश जी सरूपरिया–उदयपुर
सामायिक	**1500–** मदन जी सांखला–दुर्ग
पक्की नवकारसी	**आजीवन–** विधान जी लोढ़ा–दुर्ग, सुशीलाबाई भूरा–देशनोक (आजीवन चौविहार भी), विमला जी गन्ना–गोवा **100–** नीलिमा जी गिड़िया, पुष्पा जी खिंवसरा, सुशीला जी मोगरा–मंदसौर
पोरसी	**100–** कल्पना जी चौपड़ा–हैदराबाद, संजय जी नौलखा–बीकानेर, ज्योति जी कांकरिया–सेंधवा **एक वर्ष डेढ़ पोरसी–** हंसमुख भाई गुलेच्छा–लिमड़ी
उपवास	**127 :** किरण कुमार जी हिंगड़ (प्रत्याख्यान), **115 :** इन्द्रा जी नाहर (गतिमान), **33 :** प्रेमलता जी जैन, **31 :** प्रियंका जी दशोरिया–नयागाँव, **30 :** किरणदेवी सिपाणी–गुवाहाटी, सुरेश जी गाँधी, **27 :** राखी जी ओसवाल (गतिमान), **26 :** श्वेता जी गांग (गतिमान), **25 :** नीता जी मेहता–मंदसौर (गतिमान), **9 :** जुबिन जी मुणोत, प्रेमबाई कांठेड़, मोनिका जी कटारिया, **8 :** सोहनबाई सिंघवी, स्नेहा जी पितलिया, विजयलक्ष्मी जी मोदी–भदेसर
एकासन का एकान्तर	मंजूदेवी–पुनमचन्द जी कोठारी–ब्यावर
वर्षीतप	कोयलबाई पोखरना–दाँता
आजीवन चौविहार	सुमन जी पीपाड़ा–बिरमावल
गाथाओं का स्वाध्याय	**वर्ष में डेढ़ लाख–** चन्द्रकला जी मुणोत–अमरावती **वर्ष में एक लाख–** डॉ. खेमचन्द जी डागा–मालेगाँव (1 हजार सामायिक भी)
जूते-चप्पल, हरी घास पर चलने का त्याग	निर्मल जी मोगरा–बेंगलुरु

-महेश नाहटा श्रमणोपासक

गीता में कहा गया है कि 'मुझको सब में देखो, सब में मुझको देखो।' इसी बात को भगवान महावीर ने व्यापक परिवेश प्रदान कर आत्मा के संबंध में इस प्रकार कहा है– **'सव्व भूयप्प भूयस्स, सम्मं भूयाइ पासओ।'** सभी जीवों को अपनी आत्मा के समान देखो। जो सभी प्राणियों को अपने समान नहीं देखता, उसके संबंध में कहा गया है– वह देख ही नहीं रहा है। देखता कौन है? हम आँखों से देखते हैं, पर केवल आँखों से देखना ही पर्याप्त नहीं है, अन्तर्चेतना से देखा जाना चाहिए।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

:::::::::::::: मेवाड़ अंचल ::::::::::::::

उदयपुर। श्री साधुमार्गी जैन संघ के तत्वावधान में नीमच एवं रतलाम में विराजित चारित्रात्माओं के दर्शनार्थ 23-24 सितम्बर को यात्रा आयोजित हुई, जिसमें शामिल 330 श्रावक-श्राविकाओं ने प्रात: 5 बजे बसों से रवाना होकर नीमच में चातुर्मासार्थ विराजित परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वंदन एवं प्रवचन श्रवण का लाभ लिया। आचार्य भगवन् ने उदयपुर के गुरुभक्तों से नीमच में चल रही तपस्याओं के अनुमोदनार्थ 41 तेले तप का आह्वान किया। इस पर उदयपुर के 51 सदस्यों ने खड़े होकर तेले तप के प्रत्याख्यान लिए। प्रवचन पश्चात् आचार्यश्री जी ने विशेष कृपा कर दर्शन लाभ प्रदान किया। उदयपुर संघ ने उदयपुर में प्रतिवर्ष चारित्रात्माओं के चातुर्मास हेतु विनती प्रस्तुत की। दोपहर में उदयपुर संघ की ओर से मुमुक्षु बहिन तमन्ना जी जैन का अभिनन्दन किया।

नीमच से रवाना होकर यात्री दल ने रतलाम में रात्रि विश्राम किया। अगले दिन प्रात: शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वंदन पश्चात् रविवारीय समता शाखा के साथ प्रवचन श्रवण का लाभ लिया एवं आपश्री जी के वर्ष 2024 के चातुर्मास हेतु पुरजोर विनती की। प्रवचन पश्चात् सन्तरत्नों का विशेष सान्निध्य प्राप्त हुआ। यात्री दल ने रतलाम में विराजित महासतीवर्याओं के दर्शन-वंदन का भी लाभ लिया। दोपहर में मांगलिक पश्चात् पुन: उदयपुर की ओर रवाना हुए। नीमच एवं रतलाम के आतिथ्य सत्कार की सभी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। **-अल्पेश धाकड़**

भीण्डर। समता भवन में शासन दीपिका साध्वी श्री चंचलकँवर जी म.सा. आदि ठाणा-7 के सान्निध्य में चातुर्मासिक धर्माराधना का ठाठ लगा हुआ है। तप के क्रम में विजयसिंह जी भाणावत एवं सुशीलाबाई भाणावत के सजोड़े 31 उपवास एवं रत्नेश जी कोठारी के 34 उपवास (गतिमान) की तपस्या हो चुकी है। संघ द्वारा इन तपस्वियों का बहुमान किया गया। इसके अलावा एकासन, आयंबिल, उपवास की लड़ी निरन्तर चल रही है। अब तक ग्यारह की 4, नौ की 2, अठाई 4, पाँच की 5, चार की 4, लगभग 65 तेले एवं 1333 संवर की तपस्याएँ पूर्ण हुई। दर्शनार्थियों का आवागमन जारी है।

धर्मसभा में साध्वी श्री चंचलकँवर जी म.सा. ने फरमाया कि आसक्ति दु:ख का कारण है। इससे भी कर्मों का बंध होता है। मोहकर्म आसक्ति को बढ़ाने वाला है। यह मेरा नहीं है, इसका चिंतन सदैव करना चाहिए। आजीवन शीलव्रत का प्रत्याख्यान नवरतनमल जी चंदादेवी दक, भीण्डर एवं ललित कुमार जी सरोजबाई गांधी, कांकेर ने ग्रहण किया। संवर की आराधना निरंतर जारी है। **-प्रकाश कुदाल**

बड़ीसादड़ी। व्यसनमुक्ति कार्यक्रम के तहत महेश जी नाहटा द्वारा मॉडल स्कूल, बड़ीसादड़ी में कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें आपने व्यसन न करने की शिक्षा देते हुए इससे होने वाली हानियों के बारे में विद्यार्थियों को अवगत कराया तथा आपने आत्महत्या नहीं करने हेतु समझाइश दी। 500 से अधिक बच्चों ने व्यसनमुक्त रहने एवं आत्महत्या नहीं करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में श्री साधुमार्गी जैन संघ के कोषाध्यक्ष एवं समता युवा संघ मेवाड़ अंचल के मंत्री सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे। **-नरेंद्र रांका**

मंगलवाड़। शासन दीपिका साध्वी श्री समता श्री जी म.सा. आदि ठाणा 5 के पावन वर्षावास में धर्म-ध्यान का अद्‌भुत ठाठ लग रहा है। प्रात: प्रार्थना के पश्चात् सामायिक, प्रतिक्रमण, जैन सिद्धांत बत्तीसी की कक्षा एवं प्रवचन से सभी गुरुभक्त लाभान्वित हो रहे हैं। दोपहर में श्राविकाओं के लिए ज्ञान कक्षा चल रही है। रविवारीय समता शाखा में अच्छी उपस्थिति रहती है। प्रत्येक रविवार को दोपहर में बच्चों का शिविर चल रहा है।

धर्मसभा में साध्वी श्री समता श्री जी म.सा. एवं साध्वी श्री प्रसिद्धि श्री जी म.सा. द्वारा आगम आधारित अमृतवाणी का रसपान कराया जा रहा है। आपश्री जी की प्रेरणा से तपस्याओं का ठाठ लगा हुआ है। पर्युषण महापर्व में विविध विषयों पर हृदयस्पर्शी प्रवचन फरमाए। आठों ही दिन 24 घंटे अखण्ड नवकार महामंत्र जाप हुआ। पर्युषण के दौरान 131 तेले और 19 अठाई के प्रत्याख्यान तथा सतरंगी आदि तप हुए।

युवा दम्पति शिविर में 30 जोड़ों ने सहभागिता निभाई। साध्वीवृंद ने बच्चों को संस्कार और चरित्र प्रदान करने के विषय में फरमाया। सास-बहू शिविर में 150 श्राविकाओं ने भाग लिया। 24 सितम्बर को एक दिवसीय मेवाड़ क्षेत्रीय बालिका शिविर में 240 बालिकाओं ने भाग लिया। साध्वी श्री प्रसिद्धि श्री जी म.सा. ने बालिकाओं को स्वच्छन्दता बनाम स्वतंत्रता सहित विविध विषयों पर सारगर्भित मार्गदर्शन प्रदान किया। विभिन्न गतिविधियाँ करवाई गई। बालिकाओं ने विभिन्न प्रत्याख्यान ग्रहण किए। शिविर पश्चात् व्यसनमुक्ति रैली निकाली गई।

तपस्या के क्रम में साध्वी श्री रविप्रभा श्री जी म.सा. ने चातुर्मास प्रारंभ में 11 की तपस्या और 29 सितम्बर को मासखमण (31 उपवास) की तपस्या पूर्ण की। अब तक मनीष जी पोखरना 31, राजेन्द्र जी फाफरिया 31, सुनीता जी डूंगरवाल 31, सीमा जी लोढ़ा 31, हर्षवर्द्धन जी लोढ़ा 31, रामलाल जी सिरीवाल 37, ममता जी महात्मा 31 उपवास, पुष्पा जी सिसोदिया लगातार 55 आयम्बिल, 2 धर्मचक्र, 17 की 1, 15 की 6, 11 की 6, 10 की 1, 9 की 13, 8 की 5, 7 की 1, 5 की 12 आदि तपस्याएँ पूर्ण हो चुकी हैं। एकासन, आयम्बिल, उपवास, मौन (9 घंटा) की लड़ी सहित अनेक तपस्याएँ गतिमान हैं। जैनेतर अनोपबाई नाथ के 21 उपवास के प्रत्याख्यान हुए, आगे बढ़ने के भाव हैं। वीर बहन सुनीता जी डूंगरवाल ने मासखमण तप की पूर्णता पर पति अशोक जी डूंगरवाल सहित सजोड़े आजीवन शीलव्रत के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। **-मनीष कुमार पोखरना**

नाई। श्री वर्धमान जैन श्रावक संघ के तत्वावधान में तीन दिवसीय समीक्षण ध्यान योग शिविर शासन दीपिका साध्वी श्री रिभिता श्री जी म.सा. के सान्निध्य में महावीर भवन में आयोजित हुआ, जिसमें योग प्रशिक्षक डॉ. सत्यनारायण शर्मा ने योगिक क्रियाओं सहित मानसिक शांति हेतु आचार्य श्री नानेश की अद्‌भुत देन समीक्षण ध्यान एवं विभिन्न आसनों का अभ्यास कराया। एक्यूप्रेशर से विभिन्न बीमारियों का उपचार किया गया।

-सत्यनारायण शर्मा

आसावरा। शासन दीपिका साध्वी श्री मनीषा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 सुख-सातापूर्वक विराज रहे हैं। आपश्री जी की प्रेरणा से स्थानीय एवं भदेसर संघ में 34 तेले पूर्ण हो चुके हैं। अठाई 3, चार की 4, तेले 125, बेले 7, पाँच की 6, छह की 3, नौ की 13, ग्यारह की 5, पन्द्रह की 1, सोलह की 1, सतरह की 2, अट्ठाईस की 1, इकतीस की 4, तैंतीस की 1 तपस्या सहित 6 मासखमण पूर्ण हो चुके हैं।

पर्युषण महापर्व पर साध्वी श्री धैर्यप्रभा श्री जी म.सा. ने अंतकृद्दशांग सूत्र का वाचन किया। साध्वी श्री मृणालकँवर जी म.सा. ने आठों ही दिन अलग-अलग विषयों पर प्रवचन फरमाया। नवकार महामंत्र का जाप 12 घंटे लगातार हुआ। साथ ही एकासन, उपवास, आयंबिल,

तेला सहित अनेक तपस्याओं का ठाठ लगा रहा।

साध्वी श्री मृणालकँवर जी म.सा. ने एक दिवसीय निर्दोष भिक्षा शिविर में महिलाओं को मार्गदर्शन प्रदान किया। जैन सिद्धांत बत्तीसी, लघुदण्डक, दशवैकालिक सूत्र के 4 अध्ययन का ज्ञानार्जन कराया गया। कमलबाई मट्ठा, स्नेहलता जी कवाड़, विजयलक्ष्मी जी मोदी ने वर्षीतप के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। **-लोकेश लोढ़ा**

:::::: बीकानेर-मारवाड़ अंचल ::::::

जोधपुर। श्री साधुमार्गी जैन समता महिला मण्डल, समता बहु मण्डल एवं समता बालिका मण्डल के संयुक्त तत्वावधान में 28 सितम्बर को ओसवाल कम्युनिटी हॉल में समता महिला संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में 400 से अधिक साधुमार्गी श्राविकाओं ने सहभागिता निभाई। मंगलाचरण एवं स्वागत गीत से शुभारंभ पश्चात् आचार्य श्री रामेश द्वारा प्रदत्त विशेष आयाम उत्क्रांति, बारह भावना पर प्रस्तुति दी गई। इस दौरान पर्युषण महापर्व, चातुर्मास अठाई एवं इससे अधिक की तपस्या करने वाली 21 श्राविकाओं का बहुमान तथा 65 वर्ष से अधिक आयु की 21 वरिष्ठ श्राविकाओं को बुजुर्ग सम्मान प्रदान किया गया। संगोष्ठी के दौरान आयोजित जैन धार्मिक हाऊजी के विजेताओं को भी पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में श्री साधुमार्गी जैन संघ एवं समता युवा संघ के पदाधिकारियों की उपस्थिति रही। **-सुबोध मिन्नी**

गंगाशहर-भीनासर। श्री साधुमार्गी जैन संघ में पाँच स्थानों पर चातुर्मास गतिमान है। शिवा बस्ती स्थित समता महिला भवन में शासन दीपक श्री रमेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा, बांठिया पौषधशाला में शासन दीपक श्री गौतम मुनि जी म.सा. आदि ठाणा, श्री जवाहर विद्यापीठ में शासन दीपक श्री प्रशम मुनि जी म.सा. आदि ठाणा, रामेश रत्नम् में शासन दीपिका साध्वी श्री श्वेता श्री जी म.सा. आदि ठाणा, पटवा निवास में शासन दीपिका साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा श्री जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में धर्म-ध्यान का ठाठ लगा हुआ है। प्रात: प्रार्थना, प्रवचन, ज्ञानचर्चा से लोग अपने आपको धन्य बना रहे हैं।

11 से 21 सितम्बर तक आयोजित ग्यारह दिवसीय आध्यात्मिक महोत्सव के अन्तर्गत वर्तमान में रामेश शासन में विचरण करने वाली इस क्षेत्र की चारित्रात्माओं के वीर माता-पिता का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इसी के साथ सर्वाधिक धार्मिक परीक्षा देने वाले 3 भाइयों एवं 3 बहिनों तथा एक ही चौके में सर्वाधिक सदस्यों का सामूहिक भोजन बनने वाले छह परिवारों का शॉल, चुनड़ी, माला व मोमेंटो से अभिनन्दन किया गया। भजनों एवं भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन भी क्रमश: हुआ। विजेताओं का अभिनन्दन किया गया। महोत्सव के अन्तर्गत प्रत्येक दिवस प्रश्न-पत्र हल करवाया गया और प्रतिदिन 10 प्रतियोगियों को पारितोषिक प्रदान किया गया।

साध्वी श्री श्वेता श्री जी म.सा. की विशेष प्रेरणा से चन्द्रकला तप की आराधना में लगभग 50 भाई-बहिन जुड़कर अपनी आत्मा को भावित कर संघ का गौरव बढ़ा रहे हैं। बड़ी तपस्याओं में 7 वर्षीय नन्हें बालक गर्वित सेठिया ने अठाई तप कर अपने आत्मबल से सभी को अचंभित कर दिया। ज्योति जी सुराणा एवं केसरदेवी पींचा ने 15 उपवास की तपस्या सम्पन्न की। चारित्रात्माओं के एकान्तर तप एवं बेले-बेले की तपस्या के साथ ही श्री हेमगिरी जी म.सा. के 10 उपवास का पारणा हुआ। बाहर से दर्शनार्थियों का तांता लगा हुआ है। **-विमल कुमार सेठिया**

नोखा। श्री जैन जवाहर भवन में शासन दीपिका साध्वी श्री सुसमृद्धि श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 के

चातुर्मास में तेला, उपवास, आयम्बिल, एकासन, बियासन पोरसी, 24 घण्टा मौन, रात्रिसंवर, बच्चों में रात्रि चौविहार आदि तप गतिमान हैं। समता संस्कार पाठशाला के बच्चे टी.वी., मोबाइल, लैपटॉप त्याग, चौविहार, तिविहार, जमीकंद त्याग, कच्चे पानी का त्याग आदि के प्रत्याख्यानों से जीवन को निखार रहे हैं। प्रत्येक रविवार को बच्चों में 5-5 सामायिक होती है एवं 10 वर्ष से अधिक आयु के बच्चों का शिविर लगता है। समता युवा संघ का शिविर दो माह चला, जिसमें 50 युवाओं की उपस्थिति रही। शिविर के पश्चात् प्रतिदिन 20 युवा प्रतिक्रमण सीख रहे हैं। प्रवचन पश्चात् बहू मण्डल की ज्ञानवर्द्धक कक्षा चल रही है। दोपहर में ज्ञानार्जन होता है। अब तक आजीवन शीलव्रत के 4 प्रत्याख्यान सहजोड़े हो चुके हैं।

पर्युषण महापर्व में 24 घण्टे नवकार महामंत्र जाप हुआ। आठों ही दिन समता संस्कार पाठशाला के बच्चों को अलग से विधि सहित प्रतिक्रमण करवाया गया, जिसमें 50 बच्चों की उपस्थिति रही। इस दौरान 12 प्रहर, 08 प्रहर, 04 प्रहर पौषध, सामूहिक प्रतिक्रमण व रात्रिसंवर की आराधना अच्छी संख्या में हुई।

चातुर्मास में अब तक 5 मासखमण, 2 पखवाड़ा, 11 व 9 की तपस्या 4 और अठाई 11 हुईं। कुछ तपस्याएँ गतिमान है। मासखमण तप अनुमोदना में सामूहिक रूप से 11 सामायिक, 5 सामायिक, उपवास, बियासन आदि तप हुए। **-विकास सुराणा**

देशनोक। शासन दीपिका साध्वी श्री निखार श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 के वर्षावास में एकासन, उपवास, आयंबिल की लड़ी निरन्तर चल रही है। साध्वी श्री अनमोल श्री जी म.सा. श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र के 20वें अध्ययन का वाचन कर रहे हैं। तत्पश्चात् प्रवचन में साध्वी श्री निखार श्री जी म.सा. ने 29वें अध्ययन को उदाहरण सहित समझाते हुए फरमाया कि हमारा लक्ष्य मोक्ष है। उसके लिए राग-द्वेष को समाप्त करना होगा। कोई मेरा नहीं है, मैं किसी का नहीं हूँ। इस सूत्र को याद रखते हुए निष्काम भाव से जीवन को उन्नति की ओर अग्रसर करें। साध्वीवर्याओं की प्रेरणा से षट्रस तप, दस प्रत्याख्यान, चन्द्रकला तप आदि हुए। आपश्री जी के सान्निध्य में बच्चों, युवतियों, महिलाओं के 7 शिविरों का आयोजन हो चुका है। कर्मप्रज्ञप्ति की कक्षा चल रही है। रविवार को जैन सिद्धान्त बत्तीसी की कक्षा लगती है। जैनेतर भगवान दास जी स्वामी ने 15 उपवास की तपस्या कर कर्मनिर्जरा का लाभ लिया।

-सरितादेवी बरड़िया

सिरसा। शासन दीपक श्री आदर्श मुनि जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में श्री साधुमार्गी जैन संघ-मंगलदेश, एस.एस. जैन सभा-रोड़ी बाजार एवं श्री भगवान महावीर ट्रस्ट-सिरसा के संयुक्त तत्वावधान में श्री समता प्रचार संघ की ओर से तीन दिवसीय ज्ञान ज्योति शिविर का आयोजन 30 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक जैन सभा में किया गया। शिविर में समता प्रचार संघ के संयोजक मण्डल, पूर्व राष्ट्रीय संयोजक एवं स्वाध्यायी बहिनों की अमूल्य सेवाएँ प्राप्त हुईं।

श्री आदर्श मुनि जी म.सा. ने शुद्ध पच्चक्खाण विधि एवं आगार आदि के बारे में जानकारी दी। श्री नवोन्मेष मुनि जी म.सा. ने तीर्थंकरों के बारे में विवेचन फरमाया। समता प्रचार संघ के संयोजक, संयोजक मण्डल सदस्य, पूर्व राष्ट्रीय संयोजक ने नवकार करे भवपार, 10 दुर्लभ बोल, मनुष्य भव की महत्ता, सामायिक की महत्ता एवं भाव प्रतिक्रमण, कर्मबंध और हमारा जीवन, नवतत्त्व एवं बोलचाल की भाषा के विवेक विषय पर रोचक जानकारी दी। शिविर में संगरिया, गोलुवाला, रावतसर, रत्तेवाला, मलोट, डबवाली, सार्दुलगढ़, सूरतगढ़ आदि क्षेत्रों के प्रतिभागी 87 भाई-बहिनों ने स्वाध्यायी सेवा देने हेतु स्वीकृति प्रदान की।

समापन समारोह में श्री साधुमार्गी जैन संघ, मंगलदेश सहित सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं गणमान्यजनों ने भाग लिया। संघ द्वारा सभी अतिथियों का सम्मान व शिविरार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

-सुनील जैन

:::::::: जयपुर-ब्यावर अंचल ::::::::

ब्यावर। शासन दीपक श्री हेमंत मुनि जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में आचार्य श्री नानेश का 61वाँ युवाचार्य चादर प्रदान दिवस एवं संघ समर्पणा दिवस 5-5 सामायिक के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आपश्री जी ने फरमाया कि संघ हमारा जीवन है। हम सभी का संघ को वंदन है। '**हु शि उ चौ श्री ज ग नाना, राम चमकते भानु समाना**' ने सदैव संघ का मान बढ़ाया है। आसोज सुदी दूज को संघनायक आचार्य श्री नानेश ने श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ की स्थापना की। संघ के लिए जीना और संघ के लिए मरना ही लक्ष्य होना चाहिए।

श्री हिमांशु मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि साधुमार्गी का अर्थ है तीर्थंकरमार्गी, आगममार्गी। हम पुण्यशाली हैं जो हमने गुरु राम को पाया है। इनकी कथनी-करनी एक समान है। श्री लाघव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि श्री ऋषभदेव जी ने संघ की स्थापना की, जो परम्परा आज तक अविच्छिन्न चल रही है। संघ पाँचवे आरे के अंतिम समय तक चलता रहेगा।

साध्वी श्री प्रेक्षा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि साधुमार्गी संघ नाना गुरु की देन है। आपश्री जी ने संघ को खून-पसीने से सींचा। राम गुरु इस संघ को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कर रहे हैं। अंत में ब्यावर में विराजित साधुमार्गी संघ के सभी चरित्रात्माओं को श्री हेमंत मुनि जी म.सा. द्वारा संकल्प-सूत्र का वाचन कराया गया।

-नोरतमल बाबेल

:::::::::: मध्यप्रदेश अंचल ::::::::::

दलौदा। श्री साधुमार्गी जैन संघ की ओर से मुमुक्षु बहिन सुश्री तमन्ना जी जैन का शानदार अभिनंदन 22 सितम्बर को किया गया। इस अवसर पर महेश जी नाहटा, संघ एवं महिला मण्डल अध्यक्ष, मंत्री सहित अनेक गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।

-अशोक जैन

रतलाम। शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-5 के पावन सान्निध्य में रत्नपुरी रतलाम में 'राम महिमा महोत्सव' चातुर्मास के अन्तर्गत तपस्याओं का अद्भुत ठाठ लगा हुआ है। आपश्री की प्रेरणा से जन-जन तप-त्याग के क्षेत्र में अग्रणी हो रहा है। अब तक पुष्पा जी पगारिया के 36 उपवास, वीर पिता प्रदीप जी जैन के 35 उपवास, मनीषा जी कांठेड़ के 33 उपवास, राजेन्द्र जी मुणत, खुशी जी पिरोदिया, नेहल जी श्रीश्रीमाल, ज्योति जी कटारिया, वीर पिता महेश जी मुणत, राजकुमार जी मुणत, परी जी लसोड़ के 31 उपवास, सुशीला जी बाफना, पल्लव जी घोटा, देवांश जी घोटा, अक्षय जी मेहता, प्रियंका जी चौपड़ा, शिरोमणि जी कोठारी, खुशबू जी कटारिया, सोना जी मालवी, आगम जी चपरोट, निर्मल जी भंडारी, मंजुला जी छाजेड़, डाली जी पटवा, प्राची जी कटारिया के 30 उपवास, हर्षित जी मोगरा के 21 उपवास आदि तप सम्पन्न हो चुके हैं। एकासन, आयंबिल, बियासना, संवर, पौषध आदि अनेक तपस्याएँ गतिमान हैं। प्रार्थना, प्रवचन, प्रतिक्रमण आदि में आशा से अधिक उपस्थिति हर्षातिरेक करने वाली है।

-सुदर्शन पिरोदिया

:::::::::: तमिलनाडु अंचल ::::::::::

चेन्नई। श्री साधुमार्गी जैन संघ की ओर से 24 सितम्बर को एस.पी.आर. सिटी में समता संस्कार

पाठशाला का शुभारम्भ किया गया। इस अवसर पर आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि हितेष जी कवाड़ (मैनेजिंग डायरेक्टर, एस.आर.पी. ग्रुप), विशिष्ट अतिथि चेतन जी बोहरा (डायरेक्टर, एस.आर.पी. ग्रुप) एवं नवीन जी रांका (प्रिंसिपल, श्रीराम यूनिवर्सल स्कूल) सहित अच्छी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं आदि की उपस्थिति रही। संघ मंत्री ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। संघ के वरिष्ठ सदस्यों द्वारा अतिथियों का माला, शॉल मोमेंटो से स्वागत किया गया। अतिथियों ने अपने विचार रखते हुए समता संस्कार पाठशाला शुभारंभ पर प्रसन्नता व्यक्त की। पाठशाला अध्यापिका ने गीतिका प्रस्तुत की। पाठशाला के बारे में प्रोजेक्टर से जानकारी प्रस्तुत की गई। पाठशाला में 90 विद्यार्थियों का रजिस्ट्रेशन हो चुका है। पधारे हुए सभी महानुभावों का आभार एवं धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

-कन्हैयालाल झाम्बर

:::::::: मुम्बई-गुजरात अंचल ::::::::

अहमदाबाद। शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा. (मोड़ी वाले) आदि ठाणा-8 के सान्निध्य में मणिनगर संघ चातुर्मास में धर्म-ध्यान, तप-त्याग की अनुपम छटा है। केसरिया कार्यशाला एवं मासिक मण्डल के आयोजन के साथ कक्षाओं का भी आयोजन होता है। कार्यशाला में आयोजित प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

तीन दिवसीय शिविर में विजय जी टाटिया, अंतागढ़ ने उपस्थित 164 महिलाओं को प्रतिदिन अलग-अलग विषयों पर ज्ञानार्जन करवाया। युवाओं एवं बच्चों का भी शिविर आयोजित किया गया। धर्मचक्र में 42 बेला एवं 1 तेला सम्पन्न हुआ। एकासन, आयंबिल, उपवास एवं तेले की लड़ी गतिमान है। साध्वीवर्या द्वारा नवरंगी के आह्वान पर सभी ने नवरंगी पूर्ण की। मासखमण 2, 11 की तपस्या, अठाई लगभग 85, तेले 200, संवर 200, पौषध 100 एवं अन्य अनेक तपस्याएँ हुई।

-चंचल दुगड़

:: महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल ::

चालीसगाँव। शासन दीपक श्री पद्म मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 के पावन सान्निध्य में चातुर्मास तप-त्याग के साथ गतिमान है। 11 की तपस्या के साथ चातुर्मासिक प्रवेश करने वाले श्री पद्म मुनि जी म.सा. ने पर्युषण पर्व में अठाई तप पूर्ण किया। श्री सौरभ मुनि जी म.सा. की ओजस्वी वाणी में नित नवीन विषयों पर प्रवचन की अविरल धारा बह रही है। द्वय संतरत्नों द्वारा पर्युषण महापर्व में आगमसम्मत प्रवचनों से जन-जन अभिभूत हो गया। सितम्बर अंत तक तेला 300, चार 2, पाँच 3, छह 1, अठाई 20, नौ 30, मासखमण (31 उपवास) 2, छत्तीस 1, बावन 1 की तपस्याएँ सम्पन्न हो चुकी हैं। इसके अलावा आजीवन शीलव्रत 37, रात्रि संवर लगभग 1500 आदि तप भी हुए। रविवार को युवाओं की विशेष भागीदारी रहती है। महिलाओं के लगभग 5 शिविर हो चुके हैं।

निफाड़। शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-5 के चातुर्मास में धर्माराधना गतिमान है। साध्वी श्री सुयशा श्री जी म.सा. उत्तराध्ययन सूत्र के 29वें अध्ययन पर एवं साध्वी श्री सुपद्म श्री जी म.सा. व साध्वी श्री सुदक्षा श्री जी म.सा. प्रथम अध्ययन पर प्रवचन फरमा रहे हैं। सुबह महावीर कॉलेज में भाइयों की सामायिक, प्रतिक्रमण एवं 32 सूत्री थोकड़ों की कक्षाएँ चल रही हैं। व्याख्यान पश्चात् बहिनों की कक्षा व दोपहर में विविध धार्मिक शिविरों का आयोजन होता है।

-अशोक कर्नावट

:बंगाल, बिहार, नेपाल व भूटान अंचल:

कोलकाता। शासन दीपिका साध्वी श्री समिया श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में कोलकातावासियों को मनोरथ प्राप्त हो रहा है। प्रार्थना, प्रवचन तथा संस्कार शिक्षा तथा धार्मिक चर्चा से सभी भगवान महावीर के वचनों को आत्मसात् कर रहे हैं। पर्युषण पर्व के अन्तिम दो दिनों में उत्तम कुमार उद्यान में प्रवचन सभा में विशाल जनसमूह की उपस्थिति रही। तपस्या के क्रम में अब तक मासखमण 4, अठारह व तेरह की 1-1, पन्द्रह की 3, ग्यारह की 4, नौ की 3, अठाई 12, सात की 2 तथा 75 से ज्यादा तेले की तपस्याएँ सम्पन्न हो चुकी हैं। उपवास, एकासन, मोबाइल त्याग, एकान्तर तप, मौन तप आदि से श्रावक-श्राविकाएँ कर्मनिर्जरा कर रहे हैं। युवाओं में प्रतिक्रमण एवं अन्य ज्ञान-ध्यान सीखने का उत्साह बना हुआ है।

समता भवन के निकट के.एम.डी.ए. में स्थानीय संघ के पूर्व महामंत्री श्री किशोर जी कोठारी की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी ललिता जी कोठारी एवं पुत्रों के अर्थ सहयोग से श्री साधुमार्गी जैन संघ, कोलकाता के तत्वावधान में शीतल पेय मशीन लगवाई गई।

-राकेश बुच्चा

श्रमणोपासक

राग और विराग में भेद है। राग पदार्थों में होता है। जिसकी चाह है, उसका अभाव पैदा होगा किन्तु जिसमें विराग है, वह आत्मा के स्वभाव से लगाव करेगा। जिसमें विशेष राग है या जिसे अपनी आत्मा से विशेष राग हुआ है, वह है विराग। ऐसा व्यक्ति आत्मा के प्रति अनुरक्त होगा। इसके विपरीत जिसमें राग है, वह पदार्थों में अनुरक्त होगा। लौकिक चेतना पदार्थ में और अलौकिक चेतना आत्मा के स्वभाव में अनुरक्त होगी। विराग की दूसरी व्याख्या है कि पदार्थ से जिसका राग चला गया वह है- विराग। यह अवस्था जब भीतर पनपती है तो कामनाएँ तिरोहित हो जाती हैं। उसमें मुख्य रूप से एक ही भावना रहती है कि भगवन्! एक बार आप मेरे हृदय में अवतरित हो जाइए। अवतरण का मतलब है- आत्मा-परमात्मा का एक हो जाना। '**अप्पा सो परमप्पा**' आत्मा ही परमात्मा है। इसका यह मतलब नहीं कि सिद्ध भगवान या सुमतिनाथ भगवान अवतरित हो गए। इसका अभिप्राय यह है कि वहाँ गुणों के माध्यम से भगवान का अवतरण होता है। जब उन गुणों को विकसित कर लिया जाता है, तब वह लौकिक से अलौकिक में, राग से विराग में, अनात्मा से आत्मा में रूपान्तरित हो जाते हैं। उसके भीतर भी वे गुण अवतरित हो जाते हैं। इन गुणों के अवतरण की अनुभूति के माध्यम से जब वह आत्मा में लीन होगा, तब अनुभूति होगी।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

स्वाध्यायी सम्मान से नीमच की धरा हुई पावन

नीमच। चातुर्मास से वंचित क्षेत्रों में पर्वाधिराज पर्युषण के अवसर पर नि:स्वार्थ भाव से धर्म प्रभावना के लक्ष्य से भगवान महावीर के सिद्धांतों व आचार्य श्री नानेश-रामेश के आयामों को जन-जन तक पहुँचाने वाले स्वाध्यायी भाई-बहिनों के प्रति आत्मीय भाव प्रकट करने हेतु समता प्रचार संघ की ओर से 16-17 सितम्बर को दो दिवसीय सम्मान समारोह आयोजित किया गया।

प्रथम दिवस प्रवचन स्थल पर परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. की नेश्राय में स्वाध्यायी मार्गदर्शन कक्षा का आयोजन हुआ। उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में स्वाध्यायियों से आह्वान किया कि आप में से प्रत्येक स्वाध्यायी तीन और नए स्वाध्यायी जोड़ने का प्रयास करें ताकि 500 नए स्वाध्यायी तैयार कर सकें। श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने स्वाध्यायियों के श्रेष्ठ अनुसरण के विविध बिंदुओं पर प्रकाश डालते हुए उनकी सेवा भावना की सराहना की।

रात्रि चौविहार पश्चात् प्रतिक्रमण सुंदरम् होटल के हॉल में आयोजित हुआ। प्रतिक्रमण पश्चात् खुलामंच कार्यक्रम में स्वाध्यायी बंधुओं ने अपने अनुभव साझा किए। आठ दिन मोबाइल, इंटरनेट का त्याग कर ये स्वाध्यायी अपनी आचार संहिता का पालन करते हुए पूर्णत: साधु जीवन अपना कर धर्माराधना को सफल बनाते हैं। कार्यक्रम पश्चात् सभी स्वाध्यायियों को सन् 2019 से 2023 तक उत्कृष्ट सेवा के लिए उपहार टॉकन प्रदान किया गया। **'डिस्कनेक्ट टू कनेक्ट'** कार्यक्रम के माध्यम से स्वाध्यायियों को जोड़ा गया।

द्वितीय दिवस प्रात: नवकारसी पश्चात् उपस्थित स्वाध्यायियों ने प्रवचन में सामूहिक रूप से संकल्प गान ***'संकल्प मेरे मन में हो ऐसा, मैं भी बनूँगा अरिहंत जैसा'*** की प्रस्तुति दी। आचार्य भगवन् ने फरमाया कि अरिहंत बनने की पहली सीढ़ी साधुपना है। आप अगर अणगार धर्म को स्वीकार करेंगे तो आप भी अरिहंत बन सकते हैं। स्वाध्यायी सचिन जी चण्डालिया, भीलवाड़ा ने सकारात्मक सोच बढ़ाने विषय पर मार्गदर्शन दिया।

टाउन हॉल में आयोजित अभिनंदन समारोह में मुख्य अतिथि वीर दादा नाहरसिंह जी राठौर, श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, राष्ट्रीय महामंत्री जी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, समता प्रचार संघ के राष्ट्रीय संयोजक, सह-संयोजकगण, महिला समिति की राष्ट्रीय अध्यक्षा एवं श्री साधुमार्गी जैन संघ नीमच के अध्यक्ष जी सहित गणमान्यजनों की गरिमामय उपस्थिति रही।

स्वाध्यायी बहिनों द्वारा मंगलाचरण पश्चात् अतिथियों का तिलक लगाकर स्वागत किया गया। समता प्रचार संघ संयोजक ने अपने स्वागत उद्‌बोधन में समता प्रचार संघ की स्थापना से अब तक की विकास यात्रा का दिग्दर्शन कराते हुए बताया कि पर्युषण महापर्व के अवसर पर इस वर्ष 135 क्षेत्रों में 331 स्वाध्यायी बन्धुओं ने सेवाएँ प्रदान कर संघ का गौरव बढ़ाया है।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने अपने उद्‌बोधन में स्वाध्यायियों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि स्वाध्यायी समाज के सजग प्रहरी हैं। आप नि:स्वार्थ सेवा प्रदान कर जिनशासन की गौरव गरिमा में चार चाँद लगा रहे हैं। ऐसी विशिष्ट सेवा के लिए सभी को आगे आना चाहिए। आज इन स्वाध्यायी बन्धुओं का स्वागत

कर संघ गौरवान्वित हो रहा है। महिला समिति राष्ट्रीय अध्यक्षा जी ने स्वाध्याय प्रवृत्ति में महिलाओं और बालिकाओं को आगे आने का आह्वान किया।

मध्य प्रदेश शासन के पूर्व मंत्री नरेन्द्र जी नाहटा ने शिक्षा, स्वाध्याय प्रवृत्ति को सर्वश्रेष्ठ प्रवृत्ति बताते हुए इस आयोजन एवं पधारे हुए स्वाध्यायियों व वीर परिवारों के प्रति अहोभाव व्यक्त किए। अनेक वक्ताओं ने समता प्रचार संघ की प्रगति पर हर्ष व्यक्त करते हुए आयोजन की सराहना की।

श्रमण परिवार (जो स्वाध्यायी दीक्षित हो चुके हैं उनके सांसारिक परिवार), संथारा साधक स्वाध्यायी परिवार, 25 वर्ष से अधिक वर्षों से सेवा देने वाले तथा 75 वर्ष की आयु वाले निष्काम सेवाभावी वरिष्ठ स्वाध्यायियों का उपस्थित गणमान्यजनों द्वारा शॉल, स्मृति चिह्न प्रदान कर स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम की सुन्दर व्यवस्था एवं पधारे हुए स्वाध्यायियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए सह-संयोजक ने कहा कि समता प्रचार संघ के इतिहास में पहली बार ऐसा सुंदर आयोजन हुआ है।

-निर्मल संघवी

रियल रामेश रत्न का फाइनल राउंड सम्पन्न

नीमच। रियल रामेश रत्न कार्यक्रम का फाइनल राउण्ड 14 अक्टूबर को टाउन हॉल में सम्पन्न हुआ। 8 वर्ष से कम, 8 से 13 वर्ष और 13 वर्ष से अधिक के तीन आयु वर्ग में सम्पन्न इस कार्यक्रम का पहला लेवल स्थानीय स्तर पर, दूसरा लेवल आंचलिक स्तर पर और अंतिम यानी तीसरा लेवल राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किया गया। समता संस्कार पाठशाला के बच्चों ने काव्य, धर्म, देश, नैतिक आचरण, जीवदया, अहिंसा, परोपकार, सुपात्र दान, कर्मों का बंध, पुनर्जन्म आदि विषयों पर विविध प्रस्तुतियाँ दी। नो एण्ड ग्रो के बच्चों द्वारा अंग्रेजी भाषा में नाट्य प्रस्तुति दी गई।

कार्यक्रम में संघ, महिला समिति एवं समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, महामंत्री एवं कोषाध्यक्ष, संघ के नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगणों ने विजेताओं को सम्मानित किया। निर्णायक मण्डल के सभी सदस्यों को स्मृति चिह्न प्रदान किया गया।

अगले दिन 15 अक्टूबर को बच्चों द्वारा विभिन्न चयनित विषयों पर मॉडल प्रस्तुतिकरण किया गया। सम्मान समारोह में समता संस्कार पाठशाला के पुरस्कारों की घोषणा कर विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए।

बेस्ट पाठशाला स्टूडेंट अवार्ड के रूप में प्रथम ग्रुप से दृत्ति ओस्तवाल, राजनांदगाँव, द्वितीय ग्रुप से हार्दिक पुगलिया, गंगाशहर, तृतीय ग्रुप से युवराज गुरलिया, बेंगलुरु को रु. 11000/- एवं ट्रॉफी से एवं बेस्ट टीचर अवार्ड के रूप में चिंकी जी जैन, अठाणा को मोमेंटो से सम्मानित किया गया।

रियल रामेश रत्न के विजेता का खिताब प्रथम ग्रुप से- दृत्ति ओस्तवाल, राजनांदगाँव, आयुष पिपाड़ा, अहमदाबाद, नलिन जैन, गंगाशहर, द्वितीय ग्रुप से- हार्दिक पुगलिया, गंगाशहर, लयशा झामड़, नागपुर, आर्य जैन, बेंगलुरु, तृतीय ग्रुप से- युवराज गुरलिया, बेंगलुरु, आगम रांका, खिरकिया, भवि पटवारी, चित्तौड़गढ़ को प्रदान किया गया। समता संस्कार पाठशाला की राष्ट्रीय संयोजिका ने सभी का आभार ज्ञापित किया।

-पूजा शाह

हिंदी कार्यशाला आयोजित

नीमच। हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत साधुमार्गी पब्लिकेशन द्वारा नीमच में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 21 से 23 सितंबर तक किया गया। आयोजित कार्यशाला में मानक शब्द, सही वर्तनी, वाक्य विन्यास सहित विभिन्न बिंदुओं की जानकारी प्रतिभागियों को दी गई। लोगों को व्यावहारिक जानकारी देने के उद्देश्य से कार्यशाला में अभ्यास कार्य भी दिया गया।

कार्यशाला के प्रारंभ में श्री नीरज मुनि जी म. सा. ने शास्त्रीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए हिंदी के प्रयोग में होने वाली गलतियों से बचने के लिए मार्गदर्शन दिया। तत्पश्चात् प्रशिक्षक आशुतोष शुक्ल का परिचय प्रस्तुत किया गया।

आशुतोष जी शुक्ल ने हिंदी पखवाड़ा मनाए जाने का उद्देश्य और मानक हिंदी के लिए भारत सरकार द्वारा किए गए प्रयासों की जानकारी प्रतिभागियों को दी। तीन दिवसीय कार्यशाला के विभिन्न सत्रों में आपने हिंदी लिखने में लोगों द्वारा की जाने वाली सामान्य गलतियों की तरफ ध्यान आकृष्ट कराते हुए उसका समाधान बताया। शब्द चयन में होने वाली असावधानी से अर्थ का अनर्थ होने एवं संपादन के दौरान ध्यान देने योग्य बातों की जानकारी उदाहरण सहित देते हुए आपने शब्दों के चयन में सावधानी बरतने की सलाह दी।

शिविर के अंतिम दिन प्रतिभागियों ने ऐसे शिविर की आवश्यकता पर जोर दिया। शिविर में श्री नीरज मुनि जी म.सा., श्री हर्षित मुनि जी म.सा., साध्वी श्री दीप्ति श्री जी म.सा. एवं साध्वी श्री सुभग श्री जी म. सा. ने अपने भाव व्यक्त किए। चारित्रात्माओं की गरिमामयी उपस्थिति में अनेक वक्ताओं ने अपने विचार रखे। शिविर समापन पर एक अलग कार्यक्रम में चारित्रात्माओं के अतिरिक्त अन्य प्रतिभागियों को श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष जी एवं नीमच संघ अध्यक्ष जी ने सहभागिता प्रमाण-पत्र प्रदान किया। अंत में आभार ज्ञापन के साथ शिविर समापन हुआ।

आचार्यश्री की सात पुस्तकें पाठकों को समर्पित

साधुमार्गी पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. की 7 पुस्तकों का विमोचन नीमच में आयोजित दो अलग-अलग कार्यक्रमों में सम्पन्न हुआ। आचार्य प्रवर द्वारा नीमच में फरमाए गए प्रवचनों पर आधारित पुस्तक **'श्रद्धा यस्य बलं तस्य'** का विमोचन 16 सितम्बर को होटल मंगलम् रिसोर्ट में आयोजित 'द गोल्डन मोमेन्ट्स' कार्यक्रम के

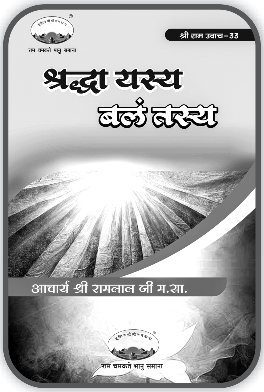

दौरान संघ प्रमुखों एवं गणमान्यजनों के करकमलों से सम्पन्न हुआ। सबका मन निर्मल एवं पवित्र कर सकने वाली इस पुस्तक में आचार्यश्री के भावों को जस-का-तस व्यक्त करने का भरसक प्रयास किया गया है, फिर भी चूक हुई हो तो क्षमाप्रार्थी हैं।

इसी क्रम में 15 अक्टूबर को नीमच के अटल सभागार में श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के 'संघ समर्पणा दिवस' के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सम्पन्न हुआ।

'भ्रामरी', **'ब्रह्माक्षर'**, **'विदां वरः'**, **'वदतां वरः'**, **'चलतां वरः'** और **'श्रद्धामयोऽयं पुरुषः'** नामक विमोचित पुस्तकों में से 'भ्रामरी' और 'ब्रह्माक्षर' आचार्यश्री के चिंतनों का अंग्रेजी अनुवाद है, जबकि शेष चार पुस्तकें प्रवचनों के संकलन हैं। प्रवचनों के संकलन में 'श्रद्धामयोऽयं पुरुषः' में सन् 2023 में नीमच में फरमाए जा रहे प्रवचन प्रकाशित हैं तो अन्य तीनों में सन् 2021 में ब्यावर चातुर्मास के दौरान फरमाए गए प्रवचन शामिल हैं। साधुमार्गी पब्लिकेशन के संयोजक ने पुस्तकों के विषय-वस्तु से लोगों को अवगत कराते हुए बताया कि सभी पुस्तकें शांति का मार्ग दिखाने वाली हैं। इस अवसर पर संघ के राष्ट्रीय पदाधिकारियों सहित देश के अनेक हिस्सों से आए पदाधिकारी, गणमान्य नागरिक और पुस्तकों के प्रकाशन में सहयोग करने वाले महानुभाव उपस्थित रहे।

-संयोजक

साधुमार्गी पब्लिकेशन

श्रमणोपासक

मुमुक्षु नमन जी मेहता की जैन भागवती दीक्षा सम्पन्न
नवीन नामकरण नवदीक्षित संत श्री नमन मुनि जी म.सा.

नीमच। राठौर परिसर में हजारों गुरुभक्तों की उपस्थिति में युगनिर्माता परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में 23 वर्षीय मुमुक्षु भाई नमन जी मेहता सुपुत्र श्री विजय जी-सुमित्रा जी मेहता की जैन भागवती दीक्षा 18 अक्टूबर को सम्पन्न हुई। नवीन नामकरण नवदीक्षित संत श्री नमन मुनि जी म.सा. की घोषणा के साथ ही सम्पूर्ण सभा जय-जयकारों से गूँज उठी।

-महेश नाहटा श्रमणोपासक

विविध भेंट मार्फत

01 सितम्बर से 30 सितम्बर 2023

संघ सदस्यों द्वारा समय-समय पर संघ की विभिन्न गतिविधियों में आर्थिक सहयोग हेतु भेंट प्रदान की जाती है, ताकि विभिन्न गतिविधियाँ, प्रवृत्तियाँ निर्विघ्न गतिमान रहें। इसी कड़ी में विभिन्न प्रवृत्तियों में उदार महानुभावों के सौजन्य से प्राप्त भेंट का उल्लेख आपके समक्ष है-

:: महाप्रभावक सदस्यता शुल्क (सौजन्य से प्राप्त) ::

5,50,000/- विजय कुमार जी गोलछा (कमलादेवी गोलछा), बीकानेर

2,20,021/- पीयूष जी बैद, कोलकाता

2,20,000/- जयचंदलाल जी मरोठी, कोलकाता

90,000/- शांतिलाल जी बच्छावत, सूरत

20,000/- पांचीदेवी सुराणा, गीदम

:: समता भवन निर्माणा प्रवृत्ति (सौजन्य से प्राप्त) ::

समता भवन, रायपुर

2,50,000/- महावीरचंद जी सुमेरमल जी जैन, रायपुर

21,000/- अंशुल जी चोपड़ा, रायपुर

समता भवन, सिलापथार

25,000/- संदीप जी झाबक, फारबिसगंज

:: महत्तम महोत्सव ::

21,000/- निर्मल जी सरला जी सिद्धार्थ जी श्वेता जी बोथरा, गुवाहाटी/अलाय (हितार्थ के जन्मदिवस पर)

:: श्रमणोपासक भेंट ::

11,000/- निर्मल जी सरला जी सिद्धार्थ जी श्वेता जी बोथरा, गुवाहाटी/अलाय (हितार्थ के जन्मदिवस पर)

11,000/- कन्हैयालाल जी बैद, देशनोक

2,100/- केशरीचंद जी दुगड़, धूपगुड़ी

1,100/- अशोक कुमार जी डूंगरवाल, निम्बाहेड़ा

1,100/- विजय जी नितिन जी सहलोत, निकुम्भ

1,100/- चंपालाल जी महावीर कुमार जी गुणधर, दल्लीराजहरा (सुपुत्री दिव्या बाफना और सुपुत्र महावीर गुणधर के जन्मदिवस पर)

1,100/- विशांत जी सिद्धार्थ जी कोटड़िया, शहादा

611/- रंजीत जी दीपेश जी ऋषभ जी मेहता, बेंगलुरु (प्रेमा जी मेहता के 60वें जन्मदिवस पर)

500/- कैलाशचंद जी जैन, सवाईमाधोपुर

:: विहार सेवा संयोजन राशि (सौजन्य से प्राप्त) ::

1,00,000/- रमेशचंद इंद्रमल जी कटारिया, रतलाम

1,00,000/- मधुबाला जी रमेशचंद जी कटारिया, रतलाम

::साधुमार्गी पब्लिकेशन सहयोग (सौजन्य से प्राप्त)::

1,50,000/- जतन कुमारी जी चौधरी, भीलवाड़ा

80,000/- निर्मल कुमार जी साहिल जी शुभम् जी खिंवेसरा, ब्यावर

80,000/- विनोद उद्योग, ब्यावर

75,000/- प्रेमचंद जी व्होरा, बदनावर

51,000/- गुप्तदान, दिल्ली

4,000/- चन्द्रशेखर जी सुभाष जी बोथरा, गुवाहाटी

:: दानपेटी योजना ::

22,000/- श्रीमती जेठीदेवी कुमुददेवी सिपानी, बेंगलुरु

21,000/- नागराज जी गुणधर, सम्बलपुर

21,000/- सुंदरबाई कोटड़िया, कोंडागाँव

21,000/- प्रकाशचन्द जी सरला जी बेताला, बेंगलुरु

11,000/- दिलीप जी श्रेयांश जी डागा, बेंगलुरु

11,000/- उत्तमचंद जी कोटड़िया, कोंडागाँव

9,000/- पुखराज जी राकेश कुमार जी सांखला, बालेसर

7,100/– राजमल जी मनोज जी ओस्तवाल, कोंडागाँव

5,100/– संदीप जी गुणधर, सम्बलपुर

5,100/– यशवंत कुमार जी नपवालिया, बेंगलुरु

5,100/– नवीन जी कोटड़िया, कोंडागाँव

5,100/– विजय कुमार जी दिनेश कुमार जी राजेंद्र कुमार जी, उदयरामसर

3,500/– मोहनलाल जी कोटड़िया, कोंडागाँव

3,500/– गौतम जी पदमादेवी जी संचेती, कोंडागाँव

3,100/– किशोर जी विकास जी संचेती, कोंडागाँव

3,100/– मोहनलाल जी अंकुश जी संचेती, कोंडागाँव

3,100/– शांतिलाल जी तिलोक जी सुराणा, कोंडागाँव

3,100/– बसंत कुमार जी नितेश जी सुराणा, कोंडागाँव

2,900/– नीलमचंद जी सुराणा, कोंडागाँव

2,500/– महेंद्र जी मोहित जी सुराणा, कोंडागाँव

2,500/– पारसमल जी दिलीप कुमार जी सांखला, बालेसर

2,300/– गौतमचंद जी कमलेश जी सांखला, बालेसर

2,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– कमल कुमार जी भंडारी, बेंगलुरु, विशांत जी सिद्धार्थ जी कोटड़िया, शहादा, जोतमल जी लक्की जी सुराणा, कोंडागाँव, मोतीलाल जी विकास जी सुराणा, कोंडागाँव, खेतमल जी प्रकाश जी ओस्तवाल, कोंडागाँव, दिलीप जी ओस्तवाल, कोंडागाँव, राजू जी सांखला, कोंडागाँव, शांतिलाल जी राकेश जी संचेती, कोंडागाँव, भंवरलाल जी योगेश जी संचेती, मोतीलाल जी महावीर चंद जी सांखला, बालेसर, प्रकाशमल जी महेन्द्र कुमार जी सांखला, बालेसर, रानीदान जी दिलीप जी चोपड़ा, बालेसर, जितेंद्र कुमार जी जिनेश कुमार जी सांखला, बालेसर, रतनलाल जी अनिल कुमार जी सांखला, बालेसर, उमेश कुमार जी अरविंद कुमार जी सांखला, बालेसर, केशरीचंद जी दुगड़, धूपगुड़ी

1,900/– डॉ. सुभाषचन्द जी रांका, निम्बाहेड़ा

1,700/– भंवरलाल जी भंसाली, कोंडागाँव

1,700/– ललित जी संचेती, कोंडागाँव

1,700/– नेमीचंद जी नवीन जी सुराणा, कोंडागाँव

1,590/– रवींद्र कुमार जी सांखला, बालेसर

1,500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– कमलेश कुमार जी वया, चिखली, धरमचंद जी लक्ष्मीलाल जी बम्बकी, बेंगलुरु, मुकेश जी महावीर जी सुराणा, कोंडागाँव, कांतिलाल जी संचेती, कोंडागाँव, सुरेश कुमार जी सिद्ध कुमार जी सांखला, बालेसर, अशोक कुमार जी हितेश कुमार जी सांखला, बालेसर, सुरेशचंद जी सहलोत, निम्बाहेड़ा

1,300/– सुरेश कुमार जी गौरव जी संचेती, कोंडागाँव

1,111/– शांतिलाल जी बांठिया, सम्बलपुर

1,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– शैलेश जी मोहनलाल जी मेहता, सूरत, प्रकाश जी संचेती, सम्बलपुर, जीवन जी बुरड़, सम्बलपुर, हरीश जी संचेती, सम्बलपुर, गौतमचंद जी कोटड़िया, सम्बलपुर, कमलेश कुमार जी मुणोत, बेंगलुरु, उत्तमचंद जी मनीष जी कोठारी, बेंगलुरु, विनोद जी पारख, बेंगलुरु, मनीष जी पीयूष जी सुराणा, कोंडागाँव, शेषमल जी मनोज जी सुराणा, कोंडागाँव, भीखमचंद जी लुंकड़, कोंडागाँव, राजकुमार जी संचेती, कोंडागाँव, नितिन जी संचेती, कोंडागाँव, मनोज कुमार जी प्रणय जी सुराणा, कोंडागाँव, जितेंद्र जी सुराणा, कोंडागाँव, तनसुखलाल जी राजेश जी सुराणा, कोंडागाँव, ज्ञानचन्द जी सुराणा, कोंडागाँव, किशोर कुमार जी अभिषेक जी छाजेड़, बालेसर, राजेंद्र कुमार जी नरेश कुमार जी सांखला, बालेसर, नवरतनमल जी सिपानी, उदयरामसर, किशनलाल जी सिपानी, उदयरामसर, हरिमोहन जी सिपानी, उदयरामसर, विमल कुमार जी चपलोत, निम्बाहेड़ा, प्रकाशचंद जी चपलोत, निम्बाहेड़ा, विमल कुमार जी कोठारी, निम्बाहेड़ा, मनीष कुमार जी जारोली, निम्बाहेड़ा, सागरमल जी देवेंद्र जी सालेचा, निम्बाहेड़ा, अरुण जी अशोक जी अनिल जी मारू, निम्बाहेड़ा, विरेश कुमार चपलोत, निम्बाहेड़ा, चंद्रेश जी अखिलेश खैरोदिया, निम्बाहेड़ा, गजराज जी अशोक जी चौधरी, निम्बाहेड़ा, रतनलाल जी पोरवाल,

निम्बाहेड़ा, सागरमल जी सांड, निम्बाहेड़ा, गजेंद्र जी नवलखा, निम्बाहेड़ा, कानमल जी अब्भाणी परिवार, निम्बाहेड़ा, मोहनलाल जी डांगी परिवार, निम्बाहेड़ा, अभय कुमार जी मुर्डिया, निम्बाहेड़ा, मुकेश जी नागौरी, निम्बाहेड़ा, अशोक कुमार जी महावीर जी सिंघवी, निम्बाहेड़ा, प्रकाशचंद जी गांग, निम्बाहेड़ा, सुंदरसिंह जी बक्सी, निम्बाहेड़ा, मदनलाल जी छाजेड़, निम्बाहेड़ा, देवीलाल जी कोठारी, निम्बाहेड़ा, अशोक जी पिछोलिया, निम्बाहेड़ा, निलेश कुमार जी मेहता, निम्बाहेड़ा, दिलीप कुमार जी नागौरी, निम्बाहेड़ा, संदीप जी धर्मेंद्र जी जितेंद्र जी नागौरी, निम्बाहेड़ा, अशोक कुमार सहलोत, निम्बाहेड़ा, संदीप जी छाजेड़, निम्बाहेड़ा, चंद्रप्रकाश जी सांखला, निम्बाहेड़ा, गजेंद्र कुमार जी नाहर, निम्बाहेड़ा, सुनील कुमार डूंगरवाल, निम्बाहेड़ा, सुरेशचंद जी खैरोदिया, निम्बाहेड़ा, मिट्ठूलाल जी सुशील जी लोढ़ा, निम्बाहेड़ा, निर्मल जी रांका, निम्बाहेड़ा, आशीष कुमार जी नागौरी, निम्बाहेड़ा, लालचंद जी कमलेश मूथा, निम्बाहेड़ा

1,000/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– समता युवा संघ, भदेसर, गौतमचंद जी ताराचंद जी सांखला, बालेसर, पारसमल जी अरिहंत कुमार जी सांखला, बालेसर, आशीष कुमार जी सोनी निम्बाहेड़ा, दीपचंद जी मुकेश जी कमलेश जी वडेरा, निम्बाहेड़ा, शांतिलाल जी मेहता, निम्बाहेड़ा

731/– अशोक कुमार जी डूंगरवाल, निम्बाहेड़ा

650/– गणेशमल जी टिंकू जी सांड, बेंगलुरु

555/– तिलक कुमार जी सहलोत, निम्बाहेड़ा

500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– रजतकुमार जी सेठिया, ईरोड/गंगाशहर, बंशीलाल जी सूर्या, नाथद्वारा, दिलीप जी बुरड़, सम्बलपुर, शांतिलाल जी कुमठ, सम्बलपुर, अशोक जी बरड़िया, सम्बलपुर, रूपचंद जी पारख, सम्बलपुर, सुरेंद्र जी कोठारी, बेंगलुरु, प्रेमचंद जी संचेती, कोंडागाँव, मांगीलाल जी पंकज कुमार जी सिंघवी, बालेसर, झंवरलाल जी राजकुमार जी सिपानी, उदयरामसर, अशोक जी सिपानी, उदयरामसर, अशोक कुमार जी छाजेड़, निम्बाहेड़ा, हस्तीमल ज्ञानचन्द जी नाबरिया, निम्बाहेड़ा, नत्थुलाल जी जारोली, निम्बाहेड़ा, विनोद कुमार जी अब्भाणी, निम्बाहेड़ा, सुरेशचंद जी कुदाल, निम्बाहेड़ा, हस्तीमल जी छाजेड़, निम्बाहेड़ा, एच.एस. भानावत, निम्बाहेड़ा, विजयसिंह जी दलाल, निम्बाहेड़ा, विनोद कुमार जी जारोली, निम्बाहेड़ा, ललित जी जारोली, निम्बाहेड़ा, सागरमल जी दीपक जी राठौड़, निम्बाहेड़ा, सूरजमल जी बक्सी, निम्बाहेड़ा, दिनेश कुमार जी धींग, निम्बाहेड़ा, अशोक जी कंठालिया, निम्बाहेड़ा, ज्ञानचंद जी सोनी, निम्बाहेड़ा, पारसमल जी खटोड़, निम्बाहेड़ा, अनिल जी नवलखा, निम्बाहेड़ा, नरेश कुमार जी सहलोत, निम्बाहेड़ा, अभय कुमार मंडोत, निम्बाहेड़ा, पारसमल जी छाजेड़, निम्बाहेड़ा, गणेशलाल जी चपलोत, निम्बाहेड़ा, सत्यमेव जी सेठिया, निम्बाहेड़ा, सूरजमल जी शैलेंद्र जी पोरवाल, निम्बाहेड़ा, जयेश जी कोठारी, निम्बाहेड़ा, शोकिनलाल जी धींग, निम्बाहेड़ा, विनोद कुमार जी नाहर, निम्बाहेड़ा

:: इदं न मम ::

50,000/– दिनेश कुमार जी नैतिक जी बांठिया, चेन्नई

31,000/– श्रीमती राजुबाई कटरिया, बेंगलुरु

22,000/– सुशील जी कांतिलाल जी गोरेचा, रतलाम

21,000/– स्वरूपचंद जी नवीन जी चोरड़िया, खैरागढ़

21,000/– धर्मेंद्र जी आंचलिया, बेगूँ

21,000/– दीपक जी कांकरिया, कोलकाता

12,510/– किशोर बसंतीलाल जी ललवाणी, नासिक

11,000/– संजय जी गुलाब जी देसरड़ा, सुल्लुरुपेटा

11,000/– ललित कुमार जी लोढ़ा, मदुरांतकम्

11,000/– धानीदेवी गोलछा, बायतू

11,000/– निर्मल जी विनायकिया, खिरकिया

11,000/– छतरमल जी बरड़िया, सरदारशहर

7,100/– किरणदेवी झाबक, कोलकाता

6,000/– रमेशचंद जी अमित कुमार जी छाजेड़, काकोड़

5,700/– केशरीचंद जी दुगड़, धूपगुड़ी

5,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– प्रदीप कुमार जी

जैन, मेरठ, गौतमचंद जी कोटड़िया, सम्बलपुर, प्रकाशचंद जी महावीर जी संचेती, सम्बलपुर, विशांत जी सिद्धार्थ जी कोटड़िया, शहादा, आशीष कुमार जी कमलचंद जी समदड़िया, खिरकिया, उत्तम जी चोरड़िया, रांची

5,000/- कन्हैयालाल जी नितिन कुमार जी बाफना, लखनपुरी

5,000/- जतन कुमारी जी चौधरी, भीलवाड़ा

4,000/- विनोद कुमार जी कांकरिया, मेट्टुपल्यम्

3,500/- कमलेश कुमार जी वया, चिखली

3,100/- अशोक जी आंचलिया, बेगूँ

3,100/- ममता जी आंचलिया, बेगूँ

2,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- मीना जी आंचलिया, बेगूँ, गुप्तदान, बेंगलुरु, लोकेश कुमार जी सूर्या, नाथद्वारा, लालचंद जी बाघमार, मेरठ, मिलापचन्द जी बोथरा, ईरोड़, वकीलचंद जी जैन, मेरठ, सुरेशचन्द्र जी सहलोत, निम्बाहेड़ा, नानेश जी रजनीकांत जी कामदार, अमलनेर

1,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- प्रदीप जी खींवसरा, धुले, अनिल कुमार जी जैन, मेरठ, सुधीर कुमार जी जैन, मेरठ, विजेशचंद जी जैन, मेरठ, देवेंद्र कुमार जी जैन, मेरठ, शिखरचंद जी जैन, मेरठ, अजय कुमार जी जैन, मेरठ, सुनील कुमार जी जैन, मेरठ, राधादेवी जी एच. रांका, साबरमती, पारसमल जी गांधी, रावटी, विकास जी जैन, सवाईमाधोपुर, मूलचंद गौतमचंद जी बुरड़, वाण्याविहार, भगवती देवी बाबुलाल जी जैन, सवाईमाधोपुर, सत्येंद्र कुमार जी जैन, मेरठ, संजय कुमार जी जैन, मेरठ, सुमित जी लूणिया, रायगंज, विमल कुमार जी कोठारी, निम्बाहेड़ा, मनीष कुमार जी जारोली, निम्बाहेड़ा, सागरमल जी देवेंद्र जी सालेचा, निम्बाहेड़ा, अरुण कुमार जी अशोक जी अनिल जी मारू, निम्बाहेड़ा, विरेश कुमार जी चपलोत, निम्बाहेड़ा, चंद्रेश जी अखिलेश जी खैरोदिया, निम्बाहेड़ा, गजराज जी अशोक जी चौधरी, निम्बाहेड़ा, रतनलाल जी पोरवाल, निम्बाहेड़ा, सुभाषचंद्र रांका, निम्बाहेड़ा, गजेंद्र कुमार नवलखा, निम्बाहेड़ा, मोहनलाल जी डांगी परिवार, निम्बाहेड़ा, मुकेश जी नागौरी, निम्बाहेड़ा, अशोक कुमार जी महावीर जी सिंघवी, निम्बाहेड़ा, निलेश कुमार जी मेहता, निम्बाहेड़ा, दिलीप कुमार जी नागौरी, निम्बाहेड़ा, संदीप जी धर्मेंद्र जी जितेंद्र जी नागौरी, निम्बाहेड़ा, संदीप जी छाजेड़, निम्बाहेड़ा, मिट्ठूलाल जी सुशील कुमार जी लोढ़ा, निम्बाहेड़ा, निर्मल जी रांका, निम्बाहेड़ा, आशीष कुमार जी नागौरी, निम्बाहेड़ा, लालचंद जी कमलेश जी मूथा, निम्बाहेड़ा, श्वेता जी बच्छावत, कोलकाता

1,000/- गुप्तदान, इंदौर

1,000/- माला जी अशोक जी रांका, साबरमती, सूरत

1,000/- चन्द्रकांता जी मेहता, दूदू

1,000/- आशीषकुमार जी सोनी, निम्बाहेड़ा

555/- कमला बाई पुखराज जी चोपड़ा, सेलम्बा

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- मधु जी शीतल कुमार जी भानावत, उदयपुर, गुप्तदान, बुद्धिप्रकाश जी जैन, सवाईमाधोपुर, सुशील जी पोखरना, वल्लभनगर, सुरेशचंद जी जैन, सवाईमाधोपुर, श्यामलाल जी पोखरना, वल्लभनगर, एच.एस. भानावत, निम्बाहेड़ा, अभय कुमार मांडोत, निम्बाहेड़ा, दीपक मोहनलाल जी जैन, धूले

:: जीवदया ::

21,000/- श्री साधुमार्गी जैन संघ व समता महिला मंडल, दुर्ग

18,250/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, डोंगरगाँव

11,000/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, राजनांदगाँव

9,500/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, नारायणपुर

8,100/- समता महिला मंडल, शहादा

6,501/- समता महिला मंडल, कोंडागाँव

6,100/- श्री स्थानकवासी जैन संघ, विजयनगरम्

5,250/- शांतिदेवी स्व. श्री गुलाबचन्द जी लोढ़ा परिवार (भविष्य जी लोढ़ा के मासखमण तप पर)

5,200/- जवाहरलाल जी शांतिलाल जी सुराणा, गीदम (शांतिलाल जी सुराणा के 9 की तपस्या, स्वाति जी

सुराणा के 25 की तपस्या पर)

5,100/– धनराज जी सेठिया, रायपुर (श्री शांतिलाल जी सेठिया की पुण्यस्मृति में)

5,100/– श्री साधुमार्गी जैन समता महिला मंडल, कोकड़ाझाड़

5,100/– केशरीचंद जी दुगड़, धूपगुड़ी

5,000/– गुप्तदान, अहमदाबाद

5,000/– सुधीर कुमार जी लुणावत, नरसिंहपुर

5,000/– रमेशचंद जी अमित कुमार जी छाजेड़, काकोड़

5,000/– प्रवीणचन्द जी किरण बेन जी मूथा, वापी

4,100/– जैन श्रावक/श्राविका संघ, रालेगाँव

3,200/– विजयराज जी जसराज जी महेन्द्र जी सुराणा, गीदम (जसराज जी सुराणा के 15 उपवास के उपलक्ष में)

3,100/– खेतमल जी अशोक जी विकास जी भंसाली, गीदम (ऊषा जी के 9 उपवास, देव कुमार जी के 9 उपवास, श्रेयांश जी के 9 उपवास के उपलक्ष में)

3,100/– मोहनलाल जी भीमराज जी रोहित जी बुरड़, गीदम (किरणबाई के 63 उपवास के उपलक्ष में)

2,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– महावीर जी शान्तिलाल जी बुरड़, गीदम (शांतिलाल जी के 8 उपवास पर), अगरचन्द जी सुरेशचन्द जी बरड़िया, गीदम (रश्मि जी के 11 उपवास, श्रीमती आराधना जी के 11 उपवास, रौनक जी के 8 उपवास पर), अरुण कुमार जी देवेन्द्र जी सुराणा, गीदम (देवेंद्र जी के 9 उपवास एवं किरणदेवी के लगातार 2 माह एकासना के उपलक्ष में), जवाहरलाल जी अभिषेक जी लोढ़ा, गीदम (मंजूदेवी के 7 उपवास पर), मोतीलाल जी दिनेश जी सालेचा, गीदम (पिता जी श्री प्रतापचंद जी की पुण्यस्मृति में), नीलमचंद जी गौतमचंद जी बैद, जगदलपुर, घेवरचंद जी महेंद्र जी गोलछा, रायपुर, स्व. श्रीमती कस्तूरी देवी रामलाल जी भूरा परिवार, देशनोक, आर.डी. जैन सरिता जी जैन, डोंगरगाँव, गुप्तदान, जगदलपुर

2,000/– गुप्तदान

1,450/– समता संघ, छुईखदान

1,101/– आसकरण जी मैनादेवी बाफना के सुपौत्र सुभाषचंद जी निर्मलादेवी के पुत्र हर्षित के अठाई तप के उपलक्ष में

1,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– राजुमल जी बरड़िया, हिंदमोटर, श्री धनराज जी पवन कुमार जी लोढ़ा, गीदम (पिंकी जी लोढ़ा के 13 उपवास पर), राजेन्द्र कुमार जी लक्ष्य कुमार जी बुरड़, गीदम (राजेंद्र कुमार जी के 11 उपवास पर), धनराज जी खुशाल जी बुरड़, गीदम (भूमि जी के 9 उपवास पर), शीतल कुमार जी मनीष जी सुराणा, गीदम (परी जी सुराणा के 9 उपवास पर), महावीर जी सुराणा सुपुत्र स्व. श्री अखराज जी सुराणा, मांगीलाल जी, ललित जी गोलछा, गौतमचन्द जी, शुभम जी नाहटा, पारसमल जी, भंवरलाल जी गोलछा, विजय कुमार जी, संतोष जी चोपड़ा, प्रकाश जी दुगड़, जगदलपुर, कमलाबेन नागौरी, मुंबई, आजाद देवी गणेशलाल जी लोढ़ा, सिंधु, गौतमचंद जी कोटड़िया, सम्बलपुर, नागराज जी गुणधर, सम्बलपुर, प्रकाश जी संचेती, सम्बलपुर, हरीश जी संचेती, सम्बलपुर, गुप्तदान, संगरिया, नवरतनमल जी सिपानी, उदयरामसर

1,011/– शांतिलाल जी, सम्बलपुर

1,000/– लूणकरन जी बागरेचा, चेन्नई (म.सा. के दर्शन के उपलक्ष में)

1,000/– गुप्तदान

1,000/– ललित जी संचेती, सम्बलपुर

1,000/– संदीप जी गुणधर, सम्बलपुर

910/– गुप्तदान, गीदम

700/– तिलोकचंद सुनील जी लुणावत, बेंगलुरु

600/– दिलीप जी बुरड़, सम्बलपुर

600/– शांतिलाल जी कुमठ, सम्बलपुर

600/– कैलाशचंद जी जैन, सवाईमाधोपुर

500/– विमल कुमार जी देवेंद्र कुमार जी जैन, जयपुर

500/– लहरकँवर जी अशोक जी रांका, चेन्नई

500/– तुषार जी संखलेचा, भोपाल

500/– कांताबेन जी मेहता, सूरत

500/– अशोक जी बरड़िया, सम्बलपुर
500/– रूपचंद जी पारख, सम्बलपुर
500/– जीवन जी बुरड़, सम्बलपुर
500/– चुन्नीलाल जी पारख, सम्बलपुर
500/– जेठमल जी कोटड़िया, शहादा
500/– नानेश जी रजनीकांत जी कामदार, अमलनेर
500/– आरती जी नवलखा, बारडोली
500/– गुप्तदान, हावड़ा

:: साहित्य आजीवन सदस्यता सहयोग ::

5,000/– घेवरचन्द जी किरणदेवी सिपानी, गुवाहाटी
5,000/– निर्मल जी खींवसरा, ब्यावर
5,000/– उदय जी पारख, इंद्र जी सांखला, संतोष जी खटोड़, रायपुर
4,000/– कुलदीप जी नंदावत, बेंगलुरु
3,000/– गुप्तदान
3,000/– श्री साधुमार्गी जैन संघ, धमतरी
3,000/– बाबुलाल जी कुलदीप जी जैन, सवाईमाधोपुर
2,000/– प्रेमचंद जी नरेशचंद जी सांखला, दुर्ग
2,000/– कमलाबाई बोथरा, दुर्ग
1,000/– मिलन जी भंडारी, विदिशा

:: समता जन कल्याण प्रन्यास ::

2,100/– गुप्तदान, जगदलपुर

:: समता प्रचार संघ (सौजन्य से प्राप्त) ::

3,20,000/– मांगीलाल जी सुनील जी अनिल जी पारख, रायपुर
49,000/– विनोद जी चोरड़िया, मुंबई
31,000/– अब्भाणी परिवार, निम्बाहेड़ा (स्वाध्यायी संथारा साधक श्री कानमल जी की पुण्यस्मृति में)
21,000/– सूरजदेवी धर्मपत्नी मांगीलाल जी कांकरिया, गोगेलाव/पीलीबंगा
21,000/– शुभम जी जैन, दिल्ली
21,000/– शांतिलाल जी सेठिया, लुधियाना
21,000/– दिलीप जी डागा, बेंगलुरु
21,000/– सुशील जी कांतिलाल जी गोरेचा, रतलाम
21,000/– निर्मल जी संघवी, इंदौर
21,000/– सरला जी धर्मसहायिका छगनमल जी सुराणा, पीलीबंगा/दिल्ली
21,000/– विजय कुमार जी लुणावत, हनुमानगढ़ एवं सुनील जी जैन, गोलूवाला
21,000/– राजेश कुमार जी जैन एवं पवन कुमार जैन, संगरिया
21,000/– अल्का जी डूंगरवाल, बांसवाड़ा
21,000/– डॉ. ज्योति निर्मल कुमार जी कोचर, बलवाड़ी
21,000/– गुप्तदान, जगदलपुर
21,000/– श्रीमती कीर्ति जी डागा, खरियार रोड
21,000/– प्रणिता जी अजीत जी चोपड़ा, इंदौर
21,000/– निर्मल जी सरला जी सिद्धार्थ जी श्वेता जी बोथरा, गुवाहाटी/अलाय (हितार्थ के जन्मदिवस पर)
21,000/– श्री कांतिलाल जी दिनेश कुमार जी वैद, जगदलपुर
10,000/– श्री साधुमार्गी जैन संघ, शिंदखेड़ा
5,100/– श्री वर्धमान स्थानकवासी श्रावक संघ, चिखली
5,100/– कुशाल जी कासमां, बांसवाड़ा
5,000/– ललित कुमार जी कासमां, बांसवाड़ा
5,000/– श्री साधुमार्गी जैन संघ, मदुरांतकम्
3,100/– श्री साधुमार्गी जैन संघ, बेंगलुरु
1,500/– श्री साधुमार्गी जैन संघ, कुकड़ेश्वर

:: समता संस्कार पाठशाला ::

11,000/– निर्मल जी सरला जी सिद्धार्थ जी श्वेता जी बोथरा, गुवाहाटी/अलाय (हितार्थ के जन्मदिवस पर)
5,000/– बी. कस्तूरचंद जी जैन, बेंगलुरु
1000/– लोकेंद्र जी भंडारी, इंदौर
500/– मोनालिसा जी जैन, रायपुर

:: समता सरिता सेवा/विहार सेवा ::

5,250/– श्रीमती शांतिदेवी स्व. श्री गुलाबचन्द जी लोढ़ा परिवार (भविष्य जी लोढ़ा के मासखमण तप पर)

5,100/– गुप्तदान
3,100/– धीरज कुमार जी सेठिया, गोलकगंज
2,400/– किशोर जी प्रेमचंद जी जैन, चोपड़ा
2,100/– मदनदेवी चोपड़ा, किशनगढ़
2,100/– कांतिलाल जी कटारिया, रतलाम
1,600/– देवेंद्र जी चौधरी, वडोदरा
1,171/– राजेश जी अक्षय जी दशोरिया, भदेसर
1,100/– जय जी आंचलिया, बेगूँ
1,100/– गुप्तदान, ब्यावर
1,100/– कीर्ति जी खुशी जी डागा, खरियार रोड
500/– शुभा दिनेश जी आंचलिया, इंदौर

:: समता साहित्य स्टॉल अनुदान ::

20,000/– शांतिलाल जी दुल्हराज जी रांका, जयनगर/मुंबई
11,000/– रागिनी योगेश जी सरूपरिया, उदयपुर
9,000/– सुरेश कुमार जी समरथलाल जी दक, मैसूर
5,100/– ताराचंद जी बरजीदेवी कोठारी परिवार, देशनोक
5,100/– आनंद जी अशोक कुमार जी खिंवसरा, बेंगलुरु (दीपेश जी सोनम जी के 8 की तपस्या पर)
5,000/– अतुल कुमार जी पगारिया, जावरा
5,000/– वीरेंद्र जी पुष्पेंद्र जी प्रदीप जी अब्भाणी, निम्बाहेड़ा (संथारा साधक श्री कानमल जी अब्भाणी की प्रथम पुण्यतिथि पर)
5,000/– माणकचन्द जी चौधरी परिवार, मन्दसौर
5,000/– श्री साधुमार्गी जैन संघ, रतलाम
5,000/– भंवरलाल जी संदेश जी टाँटिया, अर्जुनी
4,100/– गुप्तदान, इंदौर
4,000/– सुरेंद्र जी संखलेचा, भीलवाड़ा
3,100/– निर्मल जी खिंवसरा, ब्यावर
3,000/– मदनदेवी चोपड़ा, किशनगढ़
2,650/– प्रेमचंद जी व्होरा, बदनावर
2,500/– गुप्तदान, नागपुर
2,500/– निर्मल जी गुलेच्छा, ब्यावर
2,100/– विशालचंद जी ललवाणी, बालोद
2,100/– पारसमल जी सुनील जी छाजेड़, धमधा
2,100/– तेजमल जी अमरचन्द जी पामेचा, पिपलियामंडी
2100/– गुप्तदान, मंदसौर

2,000/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– पदमाबेन रोशनलाल जी रांका, नवसारी, विमल जी आंचलिया (श्री मदनलाल जी आंचलिया की पुण्यस्मृति में), गुप्तदान, गुप्तदान, अजमेर, पारसमल जी देशलहरा, इंदौर, खेमचन्द जी छाजेड़, धमधा, गुप्तदान, गंगाशहर, अजीत कुमार जी कांकरिया, सूरत, सुभाषचन्द जी श्रेयांश जी छाजेड़, दुर्ग, एवंत जी पुत्र स्व. श्री मूलचंद जी डागा, बीकानेर, निर्मल जी जैन, ब्यावर

1100/– गुप्तदान
1100/– गुप्तदान, उदयपुर
1100/– मदनबाई जी किशनलाल जी ओस्तवाल, राजनांदगाँव

1,000/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– निर्मल कुमार जी गांग, जावद, विनय कुमार जी सिंघवी, खरगोन, जितेंद्र जी नाहर, धार, अनिल जी रांका, इंदौर, मैनादेवी लालानी, सूरत, गुप्तदान, नीमच, गुप्तदान, रतलाम, सुशीला बाई लसोड़, जयपुर के 20 स्थानक ओली पर)

700/– गुप्तदान, चेन्नई

:: संघ सहयोग ::

9,000/– एल. अनमोल एण्ड को., मदुरांतकम्

:: सर्वधर्मी सहयोग (महिला समिति) ::

20,000/– निर्मल जी सरला जी सिद्धार्थ जी श्वेता जी बोथरा, गुवाहाटी/अलाय (हितार्थ के जन्मदिवस पर)
5,000/– प्रवीणचन्द जी किरण बेन मूथा, वापी

:: छात्रवृत्ति (महिला समिति) ::

11,000/– निर्मल जी सरला जी सिद्धार्थ जी श्वेता जी बोथरा, गुवाहाटी/अलाय (हितार्थ के जन्मदिवस पर)

7,100/- चन्द्रशेखर जी सुभाष जी बोथरा, गुवाहाटी

:: श्रमणोपासक आजीवन सदस्यता सहयोग ::

4,500/- श्री साधुमार्गी जैन महिला समिति, गंगाशहर-भीनासर

:: विशेष ::

संघ साधारण सदस्यता-2, श्रमणोपासक सदस्यता-33, महिला समिति सदस्यता-8, साहित्य सदस्यता-20

---

01 अप्रैल 2023 से 30 सितम्बर 2023 तक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के बैंक खाते में अधोलिखित राशियाँ विभिन्न दानदाताओं ने जमा करवाई हैं, लेकिन कार्यालय को जमाकर्त्ता के नाम एवं किस मद हेतु राशि जमा की गई इसकी सूचना प्राप्त नहीं होने से ये राशियाँ संघ के सस्पेंस खाते में संयोजित हैं। अत: जिन दानदाताओं ने राशि के सामने अंकित दिनांक को ये राशियाँ जमा करवाई हैं, वे केन्द्रीय कार्यालय, बीकानेर को मोबाइल नम्बर 7976520588 पर सूचित कर अपनी पक्की रसीद अतिशीघ्र ही प्राप्त करें।

दिनांक	*राशि*	*अन्य विवरण*
एस.बी.आई. बैंक		
12.04.23	501/-	UPI विपुल जैन
22.04.23	1,101/-	UPI सिंपल जैन
08.05.23	3,500/-	UPI राहुल
12.05.23	501/-	UPI विपुल जैन
22.05.23	1,000/-	UPI विनोद बम्ब
31.05.23	1,100/-	UPI निखिल
12.06.23	501/-	UPI विपुल जैन
25.06.23	11,000/-	UPI अविनाश ललवानी
06.07.23	3,000/-	नकद
20.07.23	1,000/-	UPI पिंकू
26.07.23	1,000/-	UPI प्रियंका
27.07.23	2,000/-	UPI आशीष
12.08.23	501/-	UPI विपुल जैन
20.08.23	1,001/-	UPI जय प्रकाश
20.08.23	2,500/-	UPI नरेन्द्र
29.08.23	25,500/-	NEFT अरिहंत हार्डवेयर्स
02.09.23	39,000/-	NEFT
06.09.23	5,500/-	Cheque 403
15.09.23	34,000/-	UPI अभिनन्द
19.09.23	2,100/-	UPI संजय
23.09.23	5,100/-	UPI गुलाब जैन
यूको बैंक		
03.07.23	12,700/-	नकद
04.07.23	9,700/-	नकद
04.07.23	8,600/-	नकद
06.07.23	5,100/-	नकद
ए.यू. बैंक		
07.06.23	1,000/-	UPI के. सुहानी
16.08.23	20,600/-	नकद

उपरोक्त भेंटदाताओं का श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आभार व्यक्त किया जाता है। आप इसी तरह संघ के उत्थान में अपना योगदान बनाए रखें। -जय जिनेन्द्र!

श्रमणोपासक

" प्रत्येक इंसान को प्रयत्न करना चाहिए कि वह हर क्षेत्र में उपयोगी बने। यदि ऐसा न हो सके, अपना सामर्थ्य वैसा न जगा सके तब भी किसी एक क्षेत्र में तो उसे महारत हासिल करनी ही चाहिए।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

।। जय गुरु नाना ।। ।। जय महावीर ।। ।। जय गुरु राम ।।

स्मृतिशेष

सहजता, सरलता व सादगी की प्रतिमूर्ति धर्मनिष्ठ सुश्रावक **लालचन्द जी चौपड़ा** का जन्म चाबा (राज.) में पिता स्व. श्री अमानचन्द जी के घर-आँगन में स्व. श्रीमती टीपूबाई की कुक्षि से हुआ। जीवन के प्रारंभ से ही आप संस्कारों की धरोहर को संजोते हुए कर्मठ जीवन की ओर अग्रसर हुए। आपका शुभविवाह श्रीमती रमलाबाई के साथ सम्पन्न हुआ। कालान्तर में आप व्यापारिक दृष्टि से परिवार सहित सड़क अतरिया, छुईखदान (छ.ग.) में प्रवास करने लगे।

परिवार में बड़े होने के नाते भाई-बहिनों एवं पुत्रों आदि का दायित्व आपके कंधों पर था। कड़ी मेहनत व उतार-चढ़ाव के बीच आपने दृढ़प्रतिज्ञ हो अपने दायित्वों का निर्वहन किया। धीरे-धीरे संत समागम आपकी दिनचर्या का अंग बनने लगा। जब आगमज्ञाता परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. का ग्राम अतरिया में पधारना हुआ तब आपने अपूर्व धर्म लाभ लिया। आपने स्वाध्यायी सेवा देना प्रारंभ किया। धार्मिक शिविरों में आपका उल्लेखनीय योगदान रहा। श्री देव आनन्द जैन शिक्षण संघ छात्रावास में आपने अमूल्य सेवाएँ प्रदान की। शासन की भव्य प्रभावना कर रहीं साध्वी श्री प्रथमा श्री जी म.सा. आपकी संसारपक्षीय भतीजी हैं।

आपने विगत दिनों नीमच में परम पूज्य आचार्य श्री रामेश एवं उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. के चातुर्मास में दर्शन-सेवा व प्रवचन आदि का लाभ लिया और वहीं गुरुचरणों की पावन छाँव में 02 सितम्बर 2023 को आपने देह त्याग दिया। आपकी आत्मा शीघ्र ही सिद्ध-बुद्ध-मुक्त बने यही मंगलमनीषा है।

श्रद्धावनत्

स्व. श्री बाधरमल जी, कमलादेवी-स्व. श्री पारसमल जी, चन्द्रिकादेवी-रानीदान, शायरदेवी-नेमीचन्द, भारतीदेवी-हीराचन्द (भाई-भाभी), **शांतिदेवी-स्व. रिखबचन्द जी बाफना, कमलादेवी-जसराज जी तातेड़, विमलादेवी-सूरजमल जी खाटेड़, विजयादेवी-शांतिलाल जी पारख, सरोजदेवी-सुरेन्द्र कुमार जी लोढ़ा** (बहन-बहनोई), **उत्तमचन्द-लीलादेवी, अशोक-डाली, नरेश-सुनीता** (पुत्र-पुत्रवधू), **सत्यम्-प्राची, हेमन्त-दर्शना, राहुल** (पौत्र-पौत्रवधू), **श्वेता-वीरेन्द्र जी भंसाली, योगिता बाला-शशांक जी बाघरेचा, कु. गरिमा जैन** (पौत्री-दामाद), **दिव्यम्, आगम** (पड़पौत्र), **हर्ष लोढ़ा** (दोहिता), **पूर्वा-मोहित जी सुराणा, भावना-अभिषेक जी बरड़िया, आकांक्षा-अजय जी चौरड़िया** (पड़दोहिती-दामाद), **स्व. मनोज पारख, सुमित-रुचिका पारख** (पड़दोहिता-वधू), **ऐशवी, अदिति, आयुष, निहित, आरसा, नव्या, मितांश, एकाग्र** (चौथी पीढ़ी)

॥ जय गुरु नाना ॥ ॥ जय महावीर ॥ ॥ जय गुरु राम ॥

स्मृतिशेष

टोंक निवासी तंजाऊर प्रवासी सुश्राविका **श्रीमती कान्ता कुमारी जी बम्ब** धर्मपत्नी स्व. श्री लाभचन्द्र जी बम्ब का 62 वर्ष की आयु में 2 फरवरी, 2023 को तंजाऊर में निधन हो गया। आप स्नेहमयी, मिलनसार, सेवाभावी, दानभाव से ओत-प्रोत व्यक्तित्व की धनी थीं। चारित्रात्माओं की सेवा में सदैव तत्पर रहते हुए आप आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अगाध श्रद्धा व समर्पणा से ओत-प्रोत थीं।

आपकी देव-गुरु-धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा व आस्था थी। आपने अपने जीवनकाल में 14, 11, एवं अनेक तपस्याएँ की एवं हर वर्ष 4 तेले करने का लक्ष्य रखती थी। आप ही के सद्संस्कारों के पथ पर चलते हुए आपका सम्पूर्ण परिवार भी संघ व शासन के प्रति पूर्ण श्रद्धावान है। अहोभावों से परिपूर्ण आपका जीवन अन्यों के लिए प्रेरणास्त्रोत था। आपने त्याग-तप व धर्म-ध्यान को विशेष महत्त्व देते हुए भगवान महावीर की वाणी से अपना जीवन पावन किया।

श्रद्धावनत्

सुमित कुमार-शैफाली बम्ब, तरुण-विजयलक्ष्मी बम्ब (पुत्र-पुत्रवधू),

रक्षित, लक्षिका, माहिका, जीविष्का (पौत्र-पौत्रियाँ)

एवं समस्त बम्ब परिवार, टोंक (राजस्थान), तंजाऊर (तमिलनाडु)

विनम्र श्रद्धांजलि

नोखा। सुश्रावक मदनलाल जी आंचलिया का 27 जुलाई को देहावसान हो गया। आपकी आचार्य श्री नानेश-

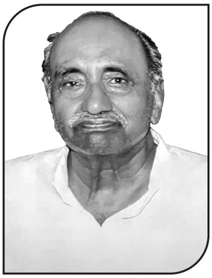

रामेश के प्रति अटूट श्रद्धा थी। स्वास्थ्य अनुकूल रहने तक आप प्रतिदिन 5-7 सामायिक का लक्ष्य रखते थे। आप श्री हेमगिरी जी म.सा. के संसारपक्षीय भतीजे थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

जावद। सुश्रावक गुणवंतलाल जी नलवाया का 03 अगस्त को 78 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

मृदुभाषी, मिलनसार नलवाया जी ने स्थानीय संघ के उपाध्यक्ष पद पर सेवाएँ दी। आप आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के अनन्य भक्त थे। नियमित रूप से नवकारसी, सामायिक, स्वाध्याय के साथ रात्रिभोजन एवं जमीकंद त्याग का नियम पालते थे। आपने अपने जीवनकाल में अनेक तपस्याएँ की। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

अजमेर। सुश्राविका सोहनदेवी धर्मपत्नी भंवरलाल जी भंसाली का चार दिवसीय संथारे सहित 04 अगस्त को महाप्रयाण हो गया। आपकी आचार्य श्री नानेश व वर्तमान शासनेश आचार्य श्री रामेश के प्रति पूर्ण आस्था थी। आप सरल स्वभावी, मधुरभाषी एवं धार्मिकता से ओत-प्रोत थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

कंवलियास। सुश्रावक हरकचंद जी गोखरू का 20 अगस्त को निधन हो गया। आप चारित्रात्माओं की विहार सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आचार्य श्री रामेश के प्रति आपकी अनूठी श्रद्धा व समर्पणा थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

गंगाशहर। सुश्रावक चैनरूप जी बैद सुपुत्र स्व. श्री उदयचन्द जी का 03 सितम्बर को 76 वर्ष की आयु में

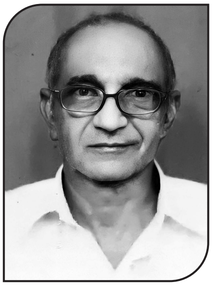

देहावसान हो गया। आप सरल स्वभावी, मृदुभाषी, परोपकारी, हँसमुख प्रकृति के धनी थे। आपके परिवार से दीक्षित श्री मंगल मुनि जी म.सा., साध्वी श्री अर्चना श्री जी म.सा., साध्वी श्री मणिप्रभा श्री जी म.सा. आचार्य श्री नानेश-रामेश शासन की शोभा बढ़ा रहे हैं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

नोखा। सुश्रावक हेमराज जी फलोदिया सुपुत्र स्व. श्री गोकलचंद जी का 11 सितम्बर को निधन हो गया। आपकी देव-गुरु-धर्म के प्रति प्रगाढ़ आस्था थी। प्रतिदिन संत दर्शन के पश्चात् ही कुछ ग्रहण करते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

गढ़चिरोली। सुश्राविका तुलसीबाई धर्मपत्नी रतनलाल जी बैद का 83 वर्ष की आयु में 13 सितम्बर को निधन हो गया। आप विगत

25 वर्षों से वर्षीतप की साधना कर रही थीं और प्रतिवर्ष स्वाध्यायी सेवा देने का लक्ष्य रखती थी। आप साध्वी श्री सौम्यशीला जी म.सा. की संसारपक्षीय मौसी जी थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

गुवाहाटी। सुश्रावक राजेश जी सुपुत्र गौतम जी सुराणा का 41 वर्ष की आयु में 17 सितम्बर को निधन हो गया।

आप मृदुभाषी, कुशल व्यवसायी थे। संघ सेवा में आप सदैव अग्रणी रहते थे। आपका सम्पूर्ण परिवार आचार्य श्री नानेश-रामेश शासन के प्रति समर्पित है। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

नोखा। सुश्रावक डालचंद जी काँकरिया का 58 वर्ष की आयु में 02 अक्टूबर को देहावसान हो गया।

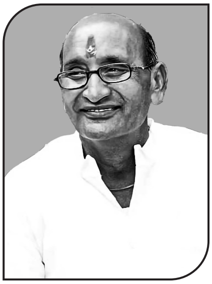

चारित्रात्माओं की सेवा में अग्रणी रहते हुए आपकी आचार्य श्री रामेश के प्रति अटूट श्रद्धा व समर्पणा थी। आचार्य श्री रामेश शासन में आपके परिवार से अनेक चारित्रात्माएँ दीक्षित हैं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

बालोद। सुश्रावक तेजमल जी नाहटा का 07 अक्टूबर को 72 वर्ष की आयु में निधन हो गया। प्रतिदिन

आप समता भवन में प्रतिक्रमण करने का लक्ष्य रखते थे। आपकी आचार्य श्री रामेश पर अटूट आस्था थी। आपका सम्पूर्ण परिवार देव-गुरु-धर्म के प्रति निष्ठावान है। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

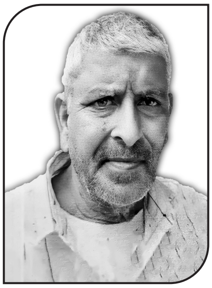

गंगाशहर। सुश्रावक सुन्दरलाल जी बोथरा, गोलकगंज प्रवासी का 15 अक्टूबर को 66 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आपका सांसारिक मोहमाया से कोई लगाव नहीं था। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

नीमच। सुश्राविका वीरमाता कमलाबाई धर्मपत्नी स्व. श्री शांतिलाल जी पगारिया का 02 सितम्बर

को 90 वर्ष की आयु में चौविहार प्रत्याख्यान सहित धर्माराधना करते हुए महाप्रयाण हो गया। आप साध्वी श्री कुसुमकांता श्री जी म.सा. (जावरा वाले) की संसारपक्षीय माता जी थीं। मिलनसार, हँसमुख प्रतिभा की धनी थी। प्रतिदिन 1000 गाथाओं का स्वाध्याय, आजीवन शीलव्रत, रात्रि चौविहार, प्रतिक्रमण, 7-11 सामायिक सहित अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किए हुए थे। अठाई, बेला, तेला, उपवास, एकासन आदि तप से आपका जीवन सजा हुआ था। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

बेल्लारी। सुश्राविका मेनदेवी धर्मपत्नी स्व. श्री रतनलाल जी सेठिया का 61 वर्ष की आयु में निधन

हो गया। आपकी आचार्य श्री रामेश के प्रति अटूट आस्था थी। चारित्रात्माओं की सेवा में अग्रणी रहते हुए आप धर्म-ध्यान करने का लक्ष्य रखती थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

श्रमणोपासक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

।। जय गुरु नाना ।।   ।। जय महावीर ।।   ।। जय गुरु राम ।।

चिंतन की कड़ियाँ

अच्छाई से बुराई जीतें

किसी गटर के पास से निकलना अच्छा है, पर उसके लिए स्वयं को गटर का मार्ग स्वीकार करना उचित नहीं है। बहुत सारे भाई-बहन कहते हुए पाए जाते हैं कि हमें सामान्यतया गुस्सा नहीं आता, पर जब कोई गलत करता है, झूठ बोलता है तो ऐसे प्रसंगों पर गुस्सा आ जाता है। वह दूसरों को बुराई से बचाना चाहता है, पर वह स्वयं बुराई में कूद पड़ता है और वह स्वयं बुराई के रास्ते चल पड़ता है। यह उचित नहीं है। बुराई छुड़ाने के लिए बुराई स्वीकार करना जरूरी नहीं है। यदि कोई कहे कि काँटा निकालने के लिए काँटा चुभाना पड़ता है तो यह तर्क यहाँ संगत नहीं है। काँटा निकालने के लिए काँटा उसी को चुभाया जाता है या स्वयं को। गुस्सा करना स्वयं बुराई के रास्ते पर जाना है। काँटे को निकालने के लिए हो सकता है काँटा चुभाना पड़े पर गलती छुड़ाने के लिए गलती को गले लगाना कभी संगत नहीं है। गलतियों को शांत भाव से भी दूर किया जा सकता है। बिना कुछ कहे भी गलती को सुधारा जा सकता है। व्यक्ति का जीवन-व्यवहार ही उसके लिए पर्याप्त है।

(भ्रामरी)

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

वुमन्स मोटिवेशनल फोरम

भ्रूणहत्या त्याग संकल्प अभियान

एक सूत्र कोई भी तोड़े,
रस्सी हस्ती को बाँधे।
एक एक मिल बना संघ ये,
दुःसंभव को भी साधे।।

वुमन्स मोटिवेशनल फोरम का प्रयास 'भ्रूणहत्या त्याग संकल्प अभियान' को जन-जन तक पहुँचाने का है। भगवान महावीर के जन्मकल्याणक से प्रारंभ इस अभियान में अब तक हमने 9000 से अधिक श्रावक-श्राविकाओं को जोड़ लिया है। यह अभियान इसी प्रकार अनवरत अपने संकल्प की ओर जारी है।

Sadhumargi Women's Motivational Forum

भ्रूणहत्या त्याग संकल्प-पत्र*

क्र.	अंचल	कुल रजिस्ट्रेशन	क्र.	अंचल	कुल रजिस्ट्रेशन
1.	मेवाड़	1016	7.	तमिलनाडु	38
2.	बीकानेर-मारवाड़	1060	8.	मुम्बई-गुजरात-यू.ए.ई.	492
3.	जयपुर-ब्यावर	1172	9.	महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश	902
4.	मध्यप्रदेश	2819	10.	बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान	56
5.	छत्तीसगढ़-उड़ीसा	909	11.	पूर्वोत्तर	429
6.	कर्नाटक-आंध्रप्रदेश	127	12.	दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-उ.प्र.	23
(*अक्टूबर, 2023 तक प्राप्त ऑनलाईन व ऑफलाईन आँकड़े)				कुल	9033

अपील :- 11000 भ्रूणहत्या त्याग संकल्प-पत्र भरवाने के इस अभियान में अधिक से अधिक लोगों को जोड़कर अहिंसा के अवतार श्रमण भगवान श्री महावीर के निर्वाण कल्याणक दिवस के उपलक्ष पर सही अर्थों में श्रद्धासुमन अर्पित करें।

धार्मिक शिविर

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति के तत्वावधान में देश के अनेक क्षेत्रों में चातुर्मासार्थ विराजित चारित्रात्माओं के पावन सान्निध्य में विविध विषयान्तर्गत शिविरों के आयोजन किए गए, जिनका विवरण इस प्रकार है-

क्र.सं.	विषय	क्षेत्र	चारित्रात्माओं का सान्निध्य
1.	बुराई बुराई सब करे बुराई से बचे ना कोई, श्रीमद् भगवती सूत्र एवं श्री विपाक सूत्र वाचन, चार मंगल	ब्यावर	शासन दीपक श्री हेमंत मुनि जी म.सा. आदि ठाणा
2.	भविष्य अच्छा तब होगा जब आज अच्छा होगा	मंगलवाड़	शासन दीपिका साध्वी श्री समता श्री जी म.सा. आदि ठाणा
3.	अहोदानम्, शय्यात्तर, तप का स्वरूप, संसार या संयम पक्ष-विपक्ष, संयुक्त परिवार, एकल परिवार, मैं जैन क्यों हूँ आदि	बेगूँ	शासन दीपक श्री मनीष मुनि जी म.सा. आदि ठाणा
4.	Stress Management, पाठशाला शिक्षिका जागरूक, जानो-जागो-जिओ, Knowledge of Jainism, Depression with Stress Management	सूरत	शासन दीपिका साध्वी श्री उज्ज्वलप्रभा श्री जी म.सा. आदि ठाणा
5.	धारणा-वारणा, सामायिक सभा	घाटकोपर, मुंबई	शासन दीपक श्री निश्चल मुनि जी म.सा. आदि ठाणा

शुद्ध ज्ञान आराधना शिविर

30 सितम्बर, 01, 02 अक्टूबर, 2023

बेंगलुरु। महिलाओं का तीन दिवसीय आवासीय शिविर 30 सितम्बर से 02 अक्टूबर तक शासन दीपिका साध्वी श्री दिव्यदेशना श्री जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में त्यागराज नगर में आयोजित किया गया। इस शिविर में 50 महिलाओं ने भाग लेकर 32 दोष रहित शुद्ध सामायिक की आराधना, लोक का विवरण आदि विषयों पर साध्वीवर्याओं से ज्ञानार्जन किया।

मुख्य आकर्षण :- इस शिविर में नवाचार रूप में शिविरार्थियों ने स्वयं के हाथों से सिलकर वस्त्र पहनने का अनुभव लिया। सम्पूर्ण दृश्य मानो नवदीक्षित-सा लग रहा था। यह शिविर वास्तविकता में शिविरार्थियों के लिए अविस्मरणीय, अद्‌भुत एवं अनुभव-भरा था।

विशिष्ट तपस्या

तपस्या की महिमा है भारी,
अनुमोदन करते देव, नर-नारी।
शुद्ध मन से आप कर रहे तप,
कट जाती कर्म बीमारी।।
दुःख दूर हो, कर्म चूर हो,
बंधन सब कट जाएँ।
संघ होता केसरिया केसरिया,
जब आप तप ठाएँ।।
मोक्ष डगरिया नजर आए...

117 की तपस्या -
इंद्रा जी नाहर, नीमच

101 की तपस्या -
लीलाबाई कोठारी, ब्यावर

72 की तपस्या -
सरिता जी मुणोत, नीमच

51 की तपस्या -
सुशीला जी कांठेड़, नीमच

जैन सिद्धांत बत्तीसी प्रतियोगिता

Google Form

'आओ एक साथ बढ़ाएँ अपने कदम मोक्ष मंजिल की ओर'

महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल द्वारा आयोजित

(अंतर्गत- श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति)

'हमें पाना है कर्मों से मुक्ति तो आओ सीखें जैन सिद्धान्त बत्तीसी' प्रतियोगिता तीन चरण में विभाजित है जिसके प्रथम व द्वितीय चरण 1 से 25 सिद्धांत की प्रतियोगिता सम्पन्न हो चुकी है। तीसरा चरण 19 नवम्बर को होना संभावित है, जिसमें 26 से 32 सिद्धांत पर आधारित प्रतियोगिता होगी। तत्पश्चात् 26 नवम्बर को जैन सिद्धांत बत्तीसी के सम्पूर्ण 32 सिद्धांत पर आधारित फाइनल परीक्षा होगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें - 9422955197, 7588734421, 8149465041

परीक्षा में विजेता रहे प्रतिभागियों को आकर्षक पुरस्कार प्रदान किए जाएँगे।

आंचलिक प्रवास रिपोर्ट

क्र.	दिनांक	अंचल	क्षेत्र/विवरण
1.	3, 4, 6 अक्टूबर	छ.ग.-उड़ीसा	महिला समिति की राष्ट्रीय उपाध्यक्षा, राष्ट्रीय मंत्री के सान्निध्य में अंचल व मंडल के स्थानीय अध्यक्ष-मंत्री के नेतृत्व में किया गया।

			दुर्ग, सोमनी, देवरी, अछोली, लोहारा, संबलपुर, दल्ली राजहरा, कुसुमकसा, बालोद, मोहला, अंबागढ़ चौकी, उमरवाही, संबलपुर, भानुप्रतापपुर, जवानटोला, डोंगरगाँव, राजनांदगाँव, सेमरा, भखारा, रानीतराई, नगरी, सांकरा, सरोना, चारमा, धमतरी प्रवास के साथ-साथ सभी नए क्षेत्रों में लगभग 18 आजीवन सदस्य और 50 परिवारांजलि के स्टीकर पेस्टिंग का कार्य किया गया। दुर्ग में युवतियों को प्री-वेडिंग शूट नहीं करवाने की प्रेरणा दी गई। सेमरा में नई बहू का स्वागत किया गया। छत्तीसगढ़ महिला समिति की ओर से बालोद संघ को दुपट्टा रखने की व्यवस्था को नियमित रखने पर 1100/- रुपये भेंट दी गई। सभी जगह प्रतिक्रमण याद करने की भी प्रभावना एवं छोटे-छोटे क्षेत्र में, जहाँ 10-12 महिलाएँ हैं, केसरिया कार्यशाला की गतिविधियाँ करवाने की प्रेरणा की गई।
2.	5 अक्टूबर 2023	मेवाड़	निम्बाहेड़ा, बड़ीसादड़ी, छोटीसादड़ी, बोहेड़ा में गुरुदेव की असीम अनुकम्पा से प्रवास सम्पन्न हुआ जो कि महिला समिति की राष्ट्रीय अध्यक्षा, कोषाध्यक्षा के सान्निध्य में अंचल के उपाध्यक्षा-मंत्री के नेतृत्व में किया गया। सभी जगह महिला समिति के अंतर्गत चल रही प्रवृत्तियों की जानकारी दी गई। महत्तम महोत्सव एवं धोवन पानी की पुरजोर प्रभावना की गई।

श्रमणोपासक

पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री राजुल श्री जी म.सा. का चौविहार संथारा सहित समाधिमरण

नीमच। परमागम रहस्यज्ञाता परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. की महत्ती कृपा से राजस्व कॉलोनी नीमच में विराजित पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री राजुल श्री जी म.सा. को उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. द्वारा 23 अक्टूबर को सायं 05:35 बजे चौविहार संथारे का प्रत्याख्यान करवाया गया। आपश्री जी ने पूर्ण सजग अवस्था में आत्मसाक्षी सहित संथारा ग्रहण कर अपना मनोरथ सिद्ध किया। चारित्रात्माओं के पावन दर्शन, मंगलपाठ एवं स्वाध्याय के साथ संथारा साधिका महासती जी को गीत, भजन, स्तवन आदि का श्रवण कराया गया। दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा। संथारे के दौरान श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मण्डल, समता युवा संघ एवं बहू मण्डल, नीमच की सेवाएँ सराहनीय रही। नवकार महामंत्र का जाप निरंतर जारी है।

साध्वीश्री जी का लगभग 38 घण्टे चला संथारा 25 अक्टूबर 2023 को प्रात: 07:02 बजे सीझ गया और आपश्री जी की आत्मा अनन्त में विलीन हो गई। शासनदेव से यही प्रार्थना है कि साध्वीवर्या जी की आत्मा शीघ्र ही सिद्ध, बुद्ध, मुक्त हो अपने चरम लक्ष्य मोक्ष का वरण करे।

-महेश नाहटा

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

नौ नक्षत्र विरासत की खोज

श्री साधुमार्गी जैन समता युवा संघ, हैदराबाद द्वारा समता भवन में '**नौ नक्षत्र विरासत की खोज**' नामक एक खुली किताब प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन किया। कार्यक्रम में प्रतिभागियों तलस्पर्शी ज्ञान का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में 12 टीमें शामिल थीं, जिनमें से प्रत्येक में चार सदस्य थे। प्रतियोगिता को कई राउंड में विभाजित किया गया था, जिनमें किसने कहा – रिक्त स्थान भरें, कब हुआ – सही या गलत, कहाँ हुआ ?, आचार्य की विशेषताएँ, अंक में उत्तर दें, निम्नलिखित से मेल खाते हैं, रैपिड राउंड, क्रॉसवर्ड आदि राउंड में प्रतिभागियों के ज्ञान और विश्लेषणात्मक कौशल का परीक्षण किया गया। तीन उत्कृष्ट टीमें विजेता रहीं। सभी प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया गया। प्रतियोगिता से आचार्यों की समृद्ध विरासत का जश्न मनाते हुए युवाओं में जागरूकता, प्रतिस्पर्धा और बौद्धिक विकास की भावना को बढ़ावा दिया गया।

श्रमणोपासक

रचनाएँ आमंत्रित

500-1000 शब्द सीमा

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। आगामी धार्मिक अंक '**स्वाध्याय विवेक, विहार विवेक**' पर आधारित रहेगा।

सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। यदि आपके पास श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय सन्दर्भित आपकी रचनाएँ- लेख, कविता, भजन, कहानी आदि **मो.: 9314055390, email : news@sadhumargi.com** पर हिन्दी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अलावा भी आपकी सारगर्भित रचनाएँ भी आमंत्रित हैं।

– श्रमणोपासक टीम

पुस्तक परिचय

कर्म प्रज्ञप्ति

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के तत्वावधान एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. के मार्गदर्शन में रचित कर्म प्रज्ञप्ति एक आकर्षक ग्रंथ के रूप में प्रकाशित किया गया है। इसमें आगमों एवं प्राचीन ग्रंथों में वर्णित कर्म सिद्धांत के गूढ़ रहस्यों का सरल, रोचक एवं प्रामाणिक प्रस्तुतिकरण किया गया है।

कर्म प्रज्ञप्ति-2 (आधार ग्रंथ), खण्ड-1 (अध्याय 1-5) प्रकाशित हो चुका है, जिसमें मुख्य विषय निम्न प्रकार हैं-

1. क्षेत्र प्रमाण (अंगुल, धनुष, योजन आदि का स्वरूप)
2. काल प्रमाण (आवलिका, मुहूर्त्त, पूर्व आदि का स्वरूप)
3. संख्येय, असंख्येय और अनंत का स्वरूप
4. औपमिक काल (पल्योपम और सागरोपम का स्वरूप)
5. पुद्गल परावर्तन काल

कर्म प्रज्ञप्ति के अन्य भाग भी प्रकाशनाधीन हैं। शीघ्र ही आप सुज्ञ श्रावक-श्राविकाओं तक पहुँचाने का लक्ष्य रहेगा।

आगम परिचय

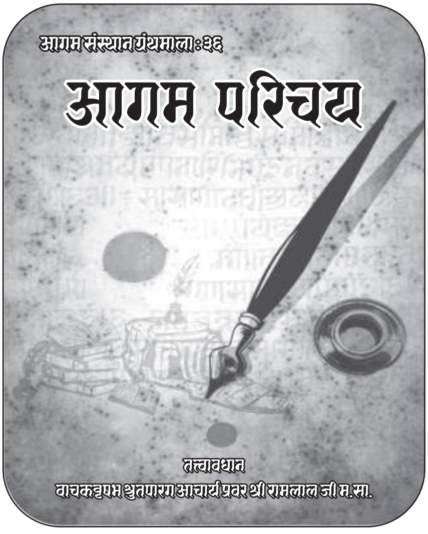

जैन ग्रंथों का अक्षयकोष अर्द्धमागधी भाषा में है। जैनागमों (द्वादशांगी) का समावेश गणिपिटक में किया जाता है, जिसमें आचारांग आदि 12 अंग सूत्र आते हैं। इन 12 अंगों के रचनाकार गणधर हैं। अंग शास्त्रों के अलावा शेष आगमों की रचना स्थविर भगवंत करते हैं। पूर्व में आगमों को लिखने की परम्परा नहीं थी, गुरु-परंपरा में सुनकर इनको याद रखा जाता था। प्रथम वाचना वीर निर्वाण संवत् 160 के पश्चात् स्थूलिभद्र के नेतृत्व में पाटलिपुत्र में हुई तत्पश्चात् अनवरत यह क्रम चलता रहा। दुर्बल स्मृति, परावर्तन की न्युनता, धृति का ह्रास इत्यादि कारणों से पाँचवी वाचना में आगमों को पुस्तकारूढ़ किया गया। जैन आगमों में प्ररूपित सिद्धांत हमारे जीवन को बदलने एवं हमें शाश्वत सुख की दिशा में ले जाने में पूर्णत: समर्थ हैं। आवश्यकता है उन आगमों का अध्ययन करने की। आगमों के अध्ययन से तत्त्वों का ज्ञान तो मिलता ही है, साथ ही साथ संवेग-निर्वेद, वैराग्य की भावना भी पुष्ट होती है।

परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. द्वारा जैनागमों का परिचय अत्यन्त ही सरल शब्दों में हमारे समक्ष प्रस्तुत किया गया है। जिज्ञासु जन आगमों के अध्ययन के लिए रुचिशील बनें, इसी उद्देश्य से 32 आगमों का परिचय संकलित किया गया है। इस आगम परिचय के अध्ययन से सम्यक् ज्ञान को प्राप्त कर आगमानुकूल आचरण करते हुए हम अपने परम लक्ष्य मुक्ति की ओर अग्रसर हों, इसी अन्तर्भावना से यह पुस्तक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत हैं।

-संयोजक, आगम-अहिंसा-समता एवं प्राकृत संस्थान

।। जय महावीर ।।

लाभं आध्यात्मिक उपकरण केन्द्र

लाभं आध्यात्मिक उपकरण केन्द्र — धर्म करो रे जीवड़ा

धर्म करो रे जीवड़ा, धर्म किया सुख होय।
धर्म करंता जीव ने, दुखिया न दीठा कोय।।

दीपावली पर धार्मिक उपहार के लिए

- सास - बहू सामायिक किट
- दादा - पोता सामायिक किट
- जन्मदिन स्पेशल सामायिक किट (श्रावक-श्राविका)

सामायिक किट

- सामायिक बैग
- आसन
- पूँजनी
- मुँहपत्ती
- मुँहपत्ती कवर
- चौलपट्टा
- दुपट्टा
- माला

सामायिक किट (श्रावक)

सामायिक किट (श्राविका)

पातरा

पूँजनी (श्राविका)

ओघा

पूँजनी (श्रावक)

कदम प्रगति की ओर...

शाखाएँ

बीकानेर (राजस्थान), रायपुर (छत्तीसगढ़), हैदराबाद (तेलंगाना)
मुंबई (महाराष्ट्र), नीमच (मध्यप्रदेश) चार्तुमास स्थल पर

- शुद्ध सामायिक के लिए हम लेकर आए हैं हाथ से निर्मित ओघा/पूँजनी।
- उच्चतम गुणवत्ता वाले ओघा/ पूँजनी/ पौषध उपकरण / सामायिक उपकरण हमारे यहाँ उपलब्ध हैं।
- अब घर बैठे धार्मिक उपकरण मंगवाएँ और धर्म प्रभावना करें।
- पेंटेड पातरा के लिए ऑर्डर करने पर 60 दिन का समय देने के भाव रखें।

नियम व शर्तें लागू

प्रभावना के लिए संपर्क करें।

9521215999

Web. : ablabham.com

e-mail : jainupkaran@ablabham.com

रामेश साधना सदन, मुरली मनोहर गौशाला के पास, भीनासर, बीकानेर- 334403 (राज.)

|| जय गुरु नाना || || जय महावीर || || जय गुरु राम ||

स्मृतिशेष

धर्मनिष्ठ सुश्राविका **श्रीमती शोभादेवी बैद** धर्मपत्नी कमल चन्द जी बैद पुत्रवधू श्री संतोकचन्द जी-फतादेवी बैद, मुम्बई/बीकानेर का 28 सितम्बर 2023 को मुम्बई में देहावसान हो गया। जीवन के प्रारंभ से ही आपका धर्म-ध्यान एवं सामाजिक सेवा कार्यों में विशेष झुकाव रहा। आपने अपने जीवनकाल में 17 एवं 71 वर्ष की आयु में जोड़े से अठाई, 9 की तपस्या एक, तेला 2 तप किए। बहुमुखी प्रतिभा के रूप में आपने अनेक संस्थाओं में सक्रिय दायित्वों का निर्वहन किया। आपका जन्म फाजिल्का के सावनसुखा परिवार में 18 दिसम्बर 1949 को हुआ। आचार्य श्री नानेश व आचार्य श्री रामेश के प्रति आपकी श्रद्धा व समर्पण भाव अनुकरणीय था। सम्पूर्ण बैद परिवार संघ व समाज सेवा के क्षेत्र में सदैव ही अग्रणी रहता है।

आपने के.जे. सोमैया कॉलेज आर्ट एंड कॉमर्स से जैनोलॉजी में डिप्लोमा एवं सर्टिफिकेट कोर्स में वरीयता सूची में द्वितीय स्थान प्राप्त कर परिवार, समाज एवं संघ को गौरवान्वित किया। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति की राष्ट्रीय अध्यक्षा के रूप में वर्ष 2008 से 2010 तक एवं इसके अलावा भी प्रदान की गई सेवाएँ सदैव चिरस्मरणीय रहेंगी। आपने महिला समिति के स्वर्ण जयंती समारोह समिति की संयोजिका के रूप में अपने कुशल नेतृत्व का परिचय दिया। आप ही के मार्गदर्शन में महिला समिति की स्वर्ण जयंती स्मारिका **'नारी'** का प्रकाशन किया गया। आप निम्न संस्थाओं में भी विभिन्न पदों पर रहीं-

1. नेपाल के काठमांडु में शिक्षा मंत्री
2. श्री साधुमार्गी जैन महिला समिति, मुम्बई की अध्यक्षा
3. प्रोग्रेसिव लेडीज वेलफेयर सोसायटी की सदस्या (इसके अन्तर्गत कैंसर पीड़ितों की मदद करना, गाँवों एवं कस्बों आदि में जरूरतमंदों को वस्त्रों का वितरण करवाना इत्यादि कार्य किए जाते हैं)

अन्त समय में चारित्रात्माओं के श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण करने का सौभाग्य मिला। आपकी इच्छा अनुसार मरणोपरान्त आपके नेत्रदान किए गए। पुण्यात्मा को श्रद्धांजलि देने हेतु 01 अक्टूबर 2023 को प्रार्थना सभा आयोजित की गई, जिसमें उपस्थित गणमान्यजनों सहित सभी ने आपके गुणों की भूरि-भूरि प्रशंसा कर आपके निधन को संघ व समाज के लिए अपूरणीय क्षति बताया।

श्रद्धावनत्

कमलचन्द बैद (पति), **विमलचन्द-कंचनदेवी, इन्दरचन्द-प्रमिलादेवी, सरोजदेवी, धर्मचन्द-जीवनप्रभादेवी, विजयचन्द-मंजूदेवी, मूलचन्द-रजनीदेवी बैद** (देवर-देवरानी), **प्रेमलता-सुरेश जी डागा** (ननद-ननदोई), **राजेश-रानी बैद** (पुत्र-पुत्रवधू), **राजश्री बोथरा** (पुत्री), **जयश्री-शरद जी संचेती, मोनिका-मनीष जी भंसाली** (पुत्री-दामाद), **राइका-रियाना बैद** (पौत्री), **सुरजीत, सुनील, संजय सावनसुखा** (भाई)

कमलचन्द बैद

हीरानन्दानी गार्डन, सी-603, इडन-4, ए.एस. मार्ग, पवई, मुम्बई-400076 (महा.)

9322253526 (कमलचन्द बैद), 9820319585 (राजेश बैद)

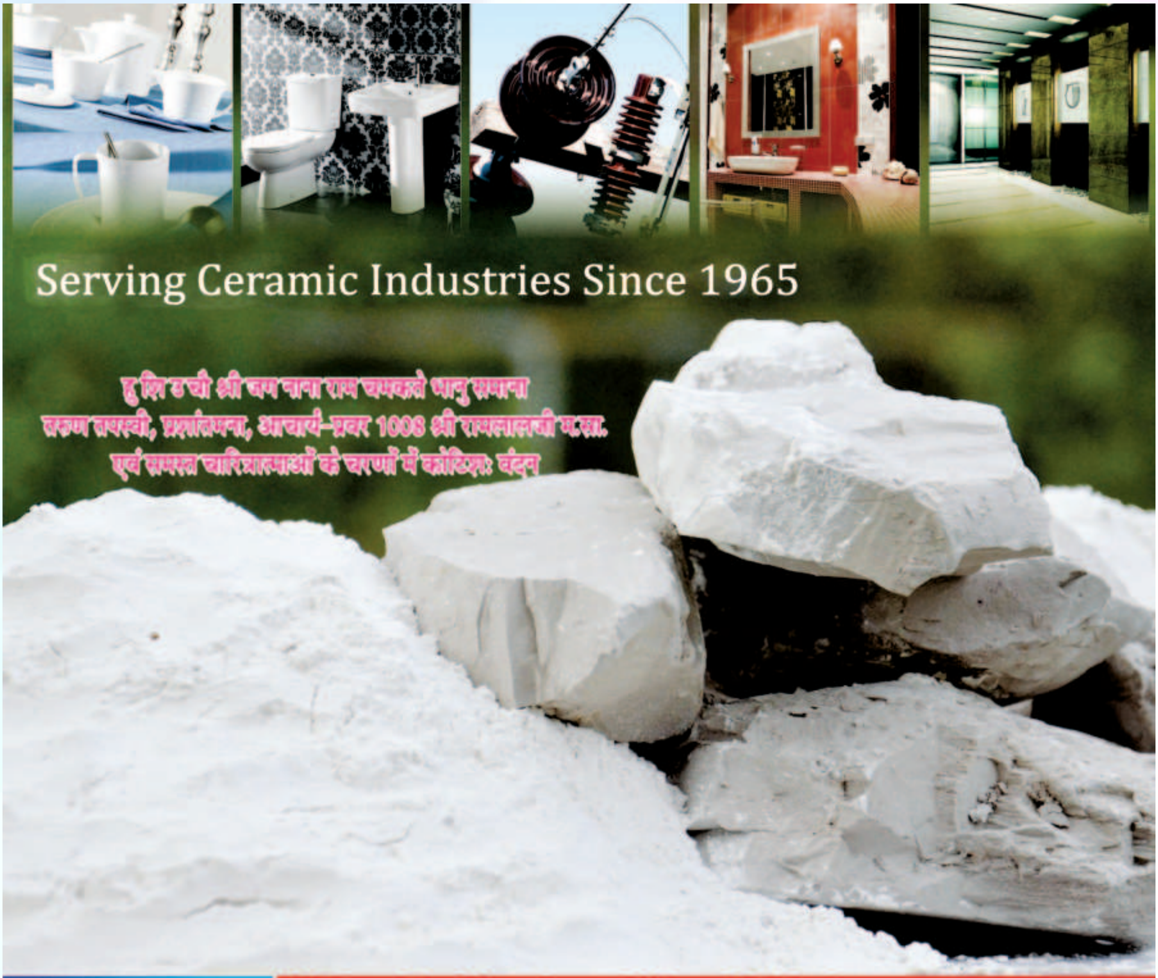

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

SIPANI
RITZY. POETIC. URBANE

सामाजिक जिम्मेदारी 'सिपानी' की पहचान

बेंगलोर जैसी महानगरी में वरिष्ठ नागरिकों एवं लाचार व्यक्तियों को सिपानी सदन में नि:शुल्क भोजन, वस्त्र एवं चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवायी जा रही है। यह सौभाग्य है कि 10 वर्ष पूर्व शुरू की गई इस सेवा योजना का लाभ 100 व्यक्तियों से प्रारम्भ होकर आज 10 वर्षों की पूर्णता तक यह संख्या बढ़कर 400 हो गई है।

इस सेवा कार्य में इन नागरिकों को पूर्णत: सज्जित एम्बुलेंस, डॉक्टर एवं नर्सिंग देखभाल की सुविधा चौबीसों घण्टे उपलब्ध करवायी जा रही है।

सेवा के नये आयाम प्रस्तुत करते हुए सिपानी फाउंडेशन ने वहाँ पर 60 कर्मचारियों की नियुक्ति भी की है जो इन सब सुविधाओं के आधार स्तम्भ हैं।

आर के सिपानी फाउंडेशन

439 18वाँ मेइन, 6वाँ ब्लॉक, कोरमंगला, बेंगलूर – 560 095

संपर्क सूत्र : संतोष 9964105057, 9243667700, सिपानी कार्यालय । ई–मेल : sipanigrand@gmail.com

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र कुमार गांधी, जावद

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/-	(15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/-	(10 वर्ष के लिए)

वाचनालय हेतु (केवल भारत में)

वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष	(केवल भारत में) 3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No.	:	31264126681
IFSC Code	:	SBIN0003401
Branch	:	G.S. ROAD, Bikaner
Mob.	:	7073311108
E-mail	:	accounts@sadhumargi.com

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	9799061990	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	8955682153	news@sadhumargi.com
साहित्य	8209090748	sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	7231033008	ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	7073238777	yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धान्त	7976519363	examboard@sadhumargi.com
परिवारांजलि	7231033008	anjali@sadhumargi.com
विहार	8505053113	vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	9982990507	Pathshala@sadhumargi.com
शिविर	7231833008	udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	6265311663	globalcard@sadhumargi.com

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें।
इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।
कार्यालय समय - प्रातः 10:00 से सायं 6:30 बजे तक
लंच - दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

www.facebook.com/HOSadhumargi @absjainsangh

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।

प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र कुमार गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 25100

प्रेषक :श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर - 334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261